


ੴ सतिगुर प्रसादि ॥

गुर गिआन अंजन सचु नेत्री पाइआ ॥
अंतरि चानणु अगिआनु अंधेरु गवाइआ ॥

मासिक

गुरमति ज्ञान

फाल्गुन-चेत, संवत् नानकशाही ५४४-४५
वर्ष ६ अंक ७ मार्च **2013**

संपादक : सिमरजीत सिंह *एम. ए., एम. एम. सी.*
सहायक संपादक : जगजीत सिंह

चंदा

सालाना (देश)	१० रुपये
आजीवन (देश)	१०० रुपये
सालाना (विदेश)	२५० रुपये
प्रति कापी	३ रुपये

चंदा भेजने का पता
सचिव, धर्म प्रचार कमेटी
(शिरोमणि गुरुद्वारा प्रबंधक कमेटी)
श्री अमृतसर-१४३००६
फोन: 0183-2553956-60



एक्सटेंशन नंबर
वितरण विभाग 303 संपादकीय विभाग 304
फैक्स: 0183-2553919
e-mail : gyan_gurmat@yahoo.com
website : www.sgpc.net

विषय-सूची

गुरबाणी विचार

भंडि जंमीऐ भंडि निंमीऐ भंडि मंगणु वीआहु ॥
भंडहु होवै दोसती भंडहु चलै राहु ॥
भंडु मुआ भंडु भालीऐ भंडि होवै बंधानु ॥
सो किउ मंदा आखीऐ जितु जंमहि राजान ॥
भंडहु ही भंडु ऊपजै भंडै बाझु न कोइ ॥
नानक भंडै बाहरा एको सचा सोइ ॥
जितु मुखि सदा सालाहीऐ भागा रती चारि ॥
नानक ते मुख ऊजले तितु सचै दरबारि ॥ *(पन्ना ४७३)*

लगभग प्रत्येक गुरुद्वारा साहिब में अमृत वेले 'आसा की वार' का कीर्तन-पाठ किया जाता है। 'आसा की वार' में वर्णित उपरोक्त सलोक का ज़िक्र-उच्चारण विशेषतया उस समय भी किया जाता है जब स्त्रियों के मान-सम्मान को बनाए रखने के लिए आवाज़ बुलंद की जा रही हो।

'आसा की वार' में दर्ज उपरोक्त सलोक श्री गुरु नानक देव जी द्वारा उच्चारण किया गया है। तत्कालीन समाज में स्त्रियों की हो रही दुर्दशा को देखते हुए गुरु जी ने स्त्री को 'भंड' शब्द से संबोधित करते हुए फरमाया कि स्त्री के बिना समाज की कल्पना करना भी व्यर्थ है। पुरुष वर्ग की मनोवृत्ति में परिवर्तन लाने हेतु गुरु जी का कहना है कि स्त्री द्वारा ही मनुष्य जन्म लेता है। स्त्री के गर्भ में ही मनुष्य का शरीर बनता है अर्थात् मनुष्य स्त्री के गर्भ में ही आकार ग्रहण करता है। स्त्री के साथ ही पुरुष की मंगनी होती है, उसके साथ ही विवाह होता है। स्त्री के द्वारा ही अन्य लोगों के साथ (जो उस स्त्री के गर्भ से जन्म लेते हैं) सम्बंध स्थापित होते हैं तथा स्त्री से ही जगत-उत्पत्ति का राह प्रशस्त होता है, चलता है। यदि (विवाहिता) स्त्री मर जाए तो संसार की प्रक्रिया को चलायमान रखने हेतु अन्य स्त्री की खोज की जाती है। इस प्रकार स्त्री द्वारा ही अन्य बंधन, नई रिश्तेदारियां अस्तित्व में आती हैं। ऐसे गुणों की मालिक स्त्री, जो राजाओं को भी जन्म देती है, को बुरा नहीं कहना चाहिए।

आगे गुरु जी का फरमान है कि स्त्री से ही स्त्री पैदा होती है और बिना स्त्री के कोई जन्म नहीं ले सकता। यदि कोई है जो बिना स्त्री के अस्तित्व में है तो वो है परमात्मा। चाहे स्त्री हो या पुरुष, जो भी अपने मुख से प्रभु-गुण-गायन करता है, वो भाग्यशाली है। ऐसे ही इंसान (मुख) प्रभु-दरबार में अच्छे लगते हैं; उनकी ही प्रशंसा होती है; वही मान-सम्मान के पात्र बनते हैं।





होला-महल्ला बने आदर्श प्रेरणा-स्रोत

सिक्ख धर्म के प्रवर्त्तक श्री गुरु नानक देव जी ने ऐसे मनुष्य की शख़्सियत का सृजन किया जो अकाल पुरख द्वारा साजी प्रकृति व प्राणियों का सत्कार करने वाला, हर बुराई का डटकर विरोध करने वाला, सत्य के हक में बिना किसी निजी स्वार्थ के निडर होकर खड़े होने वाला था। गुरु साहिबान ने इस सोच को पूरा करने के लिए साहित्य, संगीत, मीरी-पीरी हर प्रकार के ढंग-तरीके को प्रयोग में लिया ताकि हर वर्ग का मनुष्य गुरु जी की सोच के अनुसार हो। इसके आधार पर श्री गुरु गोबिंद सिंघ जी ने १६९९ ई में वैसाखी वाले दिन श्री अनंदपुर साहिब की धरती पर पूर्ण खालसा मनुष्य की साजना की। पूर्ण साबत-सूरत तथा शस्त्रधारी ज्ञान से भरपूर यह मनुष्य ही 'खालसा' की संज्ञा से जाना गया।

'खालसा' अरबी भाषा का शब्द है जिससे अभिप्राय है निरोल, शुद्ध या मिलावट से रहित। फ़ारसी भाषा में खालसा उस ज़मीन को कहा जाता है जो सीधे बादशाह के अधीन हो, किसी जागीरदार का इसमें कोई दख़ल न हो। इस तरह खालसा सीधा अकाल पुरख के अधीन है, इसको किसी भी बिचौलिए की जरूरत नहीं। १६९९ ई में निश्चित रूप में शस्त्रधारी किए खालसा को श्री गुरु गोबिंद सिंघ जी ने शस्त्रों का सही प्रयोग करने के लिए प्रेरणा व सिखलाई दी। इस सिखलाई की परख के लिए गुरु जी ने १७०० ई में श्री अनंदपुर साहिब की धरती पर होला-महल्ला मनाने का दिन चुना। गुरु जी का मंतव्य सिक्खों को हर पक्ष से जागृत करना था। इससे पहले सदियों से हिंदोस्तान में मनाए जाते होली के त्योहार की पृष्ठभूमि मिथहासिक तथा परंपरागत थी। बेशक यह त्योहार बुराई को घृणा तथा अच्छाई को प्यार करने के जज़्बे में से पैदा हुआ था, परंतु समय बदलाव के साथ यह त्योहार उपरोक्त जज़्बे से खाली हो चुका था। गुरु जी ने गहन चिंतन करने के बाद इस प्राचीन हिंदोस्तानी त्योहार का काया-कल्प करने की योजना बनाई तथा श्री अनंदपुर साहिब की सदा-सुहावी धरती पर खालसा पंथ को होली की जगह होले-महल्ले का विस्मादी त्योहार बख़्शिश किया।

गुरु जी ने अपने शस्त्रधारी खालसा को होला-महल्ला मनाने के लिए दो जत्थों में विभाजित किया। दोनों जत्थों को शस्त्रों का अभ्यास करवाने हेतु उनको मनसूई (नकली) जंग करने की युक्ति बख़्शिश की। गुरु जी ने एक जत्थे को सफेद और दूसरे को केसरी वस्त्र धारण करने के लिए कहा। इन जत्थों को लोहगढ़ पर कब्ज़ा करने की प्रेरणा की गई। जिस दल ने पहले कब्ज़ा कर लिया उसे विजेता करार देकर सिरोपा दिया जाता था। फिर लोहगढ़ पर काबिज़ जत्थे से दूसरा जत्था किले को छीनने का प्रयत्न करता था। जीतने वाले दल को खूब इनाम दिया जाता था। इन कार्यवाहियों में गुरु जी खुद रुचि लेकर शामिल होते थे तथा सिंघों को उत्साहित करते थे।

हक-सच के लिए लड़ी गई लड़ाई के समय इस सिखलाई का सिंघों को बहुत लाभ हुआ। पहाड़ी एवं मुगल शासकों द्वारा अपनी मनमानी करने के लिए गुरु जी पर थोपी जंगों में खालसे ने मिसालमयी जीतें व शहीदियां प्राप्त कीं। आज भी गुरु नानक नाम लेवा सिक्खों द्वारा श्री गुरु गोबिंद सिंघ जी द्वारा बख़्शिश की इस युक्ति को संभालते हुए हर वर्ष मार्च के महीने में श्री अनंदपुर साहिब की धरती पर इकट्ठे होकर होला-महल्ला मनाया जाता है। ऐसे मौके पर हमारा आज की चुनौतियों पर भी विचार करना आवश्यक है। आज हमारे सामने सबसे बड़ी चुनौती प्रदूषण एवं मिलावट की है जिसने पूरे संसार को अपनी जकड़ में लिया हुआ है। बुराई तथा सच्चाई की जीत का प्रतीक त्योहार होली भी इससे बच नहीं सका। इस त्योहार में प्रयोग किया जाने वाला रंग भी मिलावट की मार तले आ गया है।

एक बार की बात है कि विदेश से आई एक अमेरिकन स्त्री के प्रति किसी भारतीय ने अपना प्यार दर्शाने के लिए होली वाले दिन उसके मुंह पर गुलाल लगा दिया। अमीरी की दौड़ तले ज्यादा धन इकट्ठा करने के उद्देश्य से उसमें रंग-विक्रेता द्वारा मिलावट की हुई थी। अमेरिकन स्त्री के चेहरे पर रंग लगते समय ही उसने अपना बुरा प्रभाव छोड़ना शुरू कर दिया। अमेरिकन स्त्री ने समझा कि उसके चेहरे पर तेज़ाब लगा दिया है। वह दर्द से पागल होती जा रही थी। उसको तुरंत अस्पताल पहुंचाया गया। डॉक्टरों की पुरज़ोर कोशिश के बाद भी उसका चेहरा ठीक न हो सका। उस अमेरिकन स्त्री ने पुलिस में शिकायत दर्ज करवा दी। होली के रूप में अपने प्यार का दिखावा करने वाला वह भारतीय बिना किसी दोष के ही मुश्किल में फंस गया। उस पर एक अमेरिकन स्त्री के चेहरे पर तेज़ाब डालने का केस दर्ज हो गया।

आज हमें जहां इन बुराइयों के प्रति जागरूक होने की जरूरत है वहीं जरूरत है अपनी अंतर-आत्मा में झांकने की तथा गुरु साहिबान द्वारा बख़्शी विचारधारा पर खरे उतरने की। जहां होला-महल्ला हम गुरु साहिब द्वारा बख़्शी रिवायत के अनुसार मनाते हैं वहीं हमें जरूरत है गुरु साहिबान द्वारा बख़्शी भविष्यमुखी जागरूकता पर सोच-विचार करने की। आज हमारे सामने प्रदूषण की जो समस्या मुंह फैलाए खड़ी है उसका समाधान तलाश करना समय की मुख्य जरूरत है। हवा, पानी, धरती ही नहीं मानव स्वभाव-चरित्र आदि में भी ज़हर घुलता जा रहा है। नयी-नयी बीमारियां अस्तित्व में आ रही हैं। इन सबका कारण प्रदूषण है। प्रदूषण की रोकथाम के लिए हमें वृक्षों की संभाल की ओर विशेष ध्यान देना पड़ेगा। प्राकृतिक कृषि की युक्ति को अपनाना पड़ेगा।

आइए! इस बार होले-महल्ले के मौके पर यह प्रण करें कि रंग-बिरंगे फूलों वाले एवं छायादार, फलदार वृक्ष लगाएंगे। धरती को मिलावटी रंगों से रंगने से गुरेज करके, रंग-बिरंगे फूलों से रंगकर होली तथा होला-महल्ला मनाएंगे।



श्री गुरु नानक देव जी द्वारा रचित 'बारह माहा' में वियोग-दशाओं का सूक्ष्म चित्रण

*-डॉ. राजेंद्र सिंघ 'साहिल'**

ब्रह्मज्ञानी संतों एवं भक्तों ने आत्मा और परमात्मा के पारस्परिक संबंध को प्रकट करने के लिए अनेक सांसारिक रिश्तों का सहारा लिया है। माता-पुत्र, पिता-पुत्र, सखा, स्वामी-दास आदि कई नाते-संबंध हैं जिनके द्वारा आत्मा-परमात्मा के रिश्ते को समझने-समझाने का प्रयास किया गया है। लौकिक रिश्तों में से जिस रिश्ते का सबसे अधिक प्रयोग किया गया है वह है 'प्रेमी-प्रेमिका' या 'पति-पत्नी' का रिश्ता। लगभग सारी भारतीय दर्शन परंपरा में आत्मा को पत्नी या प्रेमिका और परमात्मा को पति या प्रेमी के रूप में चित्रित किया गया है। परमात्मा से बिछुड़ कर इस वसुंधरा पर जीवन भोगने आई आत्मा एवं परमात्मा के आपसी संबंध को प्रकट करने के लिए इससे बेहतर और कोई प्रतीक हो भी नहीं सकता था। भक्ति-साहित्य में आत्मा विरहिणी है जो परमात्मा रूपी पति से बिछुड़ी हुई है और विरह की अग्नि में तपती हुई मिलन के पलों की प्रतीक्षा कर रही है।

आत्मा की विरह को प्रस्तुत करने के लिए संतों एवं भक्तों ने अधिकांशत: 'बारह माहा' जैसे लोक-काव्य को अपनाया है। 'बारह माहा' में देसी बारह महीनों--चेत, वैसाख, ज्येष्ठ, आसाढ़, सावन, भादों, क्वार, कार्तिक, अगहन, पूस, माग, फागुन के बदलते प्राकृतिक वातावरण एवं मौसमों की पृष्ठभूमि में प्रिय से बिछुड़ी विरहन की विरह-पीड़ा को चित्रित किया जाता है।

श्री गुरु ग्रंथ साहिब में दो 'बारह माहा' संकलित हैं। एक गुरु नानक साहिब द्वारा रचित 'राग तुखारी' में है और दूसरा पंचम पातशाह श्री गुरु अरजन देव जी द्वारा उच्चारित राग 'माझ' में दर्ज है। पंचम पातशाह रचित 'बारह माहा' गहन आध्यात्मिक अनुभूति से ओत-प्रोत है जबकि प्रथम पातशाह कृत 'बारह माहा' तुलनात्मक दृष्टि से अधिक भावुकता प्रधान एवं विह्वलतापूर्ण वियोग-रस से परिपूर्ण है।

भारतीय काव्य-शास्त्र के अनुसार वियोग दशाओं की संख्या दस बताई गई है :

१) अभिलाषा	६) प्रलाप
२) चिंता	७) उन्माद
३) स्मरण	८) व्याधि
४) गुण-कथन	९) जड़ता
५) उद्वेग	१०) मरण

ये वे दस दशाएं हैं जिन्हें किसी विरही को निश्चित रूप से भोगना पड़ता है। विरह-दशा में एक विरही की क्या-क्या हालत होती है, ये विरह-दशाएं उनका बड़ा ही सूक्ष्म प्रकटीकरण है।

प्रथम पातशाह श्री गुरु नानक साहिब ने 'बारह माहा', बाणी जो श्री गुरु ग्रंथ साहिब के पन्ना ११०७ से आरंभ होकर पन्ना १११० पर संपूर्ण होती है, में परमत्मा से बिछुड़ी आत्मा की विरह का वर्णन किया है। गुरु जी का विरह-वर्णन इतना सूक्ष्म, संपूर्ण और प्रभावशाली है कि समस्त वियोग दशाएं पूर्ण गहनता और तीव्रता के साथ उपस्थित हुई हैं :

**१/३३८, 'स्वप्नलोक', दशमेश नगर, मंडी मुल्लांपुर दाखा (लुधियाना), पंजाब। मो: ०९४१७२-७६२७१*

१) अभिलाषा : प्रिय से मिलन की इच्छा रखना 'अभिलाषा' है। प्रथम पातशाह कृत 'बारह माहा' में आत्मा अर्थात् 'धन' (पत्नी) परमात्मा अर्थात् 'पिरु' (पति) से मिलने की कामना लिए कहती है "चेत का महीना है, वसंत की सुहानी ऋतु आ गई है, वनों-उपवनों में फूल खिले हुए हैं, मेरा पति-प्रभु भी मेरे हृदय रूपी घर में आ जाए। . . . "

चेतु बसंतु भला भवर सुहावड़े ॥
बन फूले मंझ बारि मै पिरु घरि बाहुड़ै ॥
(पन्ना ११०८)

२) चिंता : वियोग दशा की दूसरी स्थिति 'चिंता' है। प्रियतम से मिलने के लिए चिंतित रहना और मिलन हेतु साधनों की खोज करना ही 'चिंता' है। 'बारह माहा तुखारी' की विरहन आत्मा रूपी नायिका कहती है--"प्रभु-पति से मिलन के बिना मैंने अनेक हार-शृंगार किये परंतु उसके चरणों में स्थान नहीं मिला। जिस आत्मा रूपी स्त्री को परमात्मा रूपी पति ने पसंद कर लिया, वह स्वयं ही सारे शृंगार एवं वस्त्रों से सुसज्जित हो गई। . . ."

बहुते वेस करी पिर बाझहु महली लहा न थाओ ॥
हार डोर रस पाट पटंबर पिरि लोड़ी सीगारी ॥
(पन्ना ११०९)

३) स्मरण : विरह-अवस्था में प्रिय की याद आना 'स्मरण' है। विरही आत्मा को प्रभु-पति की स्मृतियां घेरे रहती हैं। वह चाहती है कि प्रभु-पति शीघ्र घर आएं ताकि उस पर गिरी विरह-विपत्ति टल जाये। प्रभु के बिना तो आत्मा-पत्नी की क़द्र कौड़ी के बराबर भी नहीं रह गई है:

घरि आउ पिआरे दुतर तारे
तुधु बिनु अढु न मोलो ॥
कीमति कउण करे तुधु भावां
देखि दिखावै ढोलो ॥ (पन्ना ११०८)

४) गुण-कथन : प्रिय के गुणों और विशेषताओं का कथन करना 'गुण-कथन' कहलाता है। 'बारह माहा तुखारी' की विरहणी आत्मा सदैव अपने परमात्मा-पति के गुणों को याद करती रहती है। उसे यह भान है कि प्रभु की 'सिफ़त-सालाह' से ही प्रभु प्रसन्न होकर उसे अंक अथवा हृदय से लगाएगा :

--निहचलु चतुरु सुजाणु बिधाता
चंचलु जगतु सबाइआ ॥
गिआनु धिआनु गुण अंकि समाणे
प्रभ भाणे ता भाइआ ॥ (पन्ना ११०९)
--धन बिनउ करेदी गुण सारेदी
गुण सारी प्रभ भावा ॥
साचै महलि रहै बैरागी आवण देहि त आवा ॥
(पन्ना ११०८)
--प्रीतम गुण अंके सुणि प्रभ बंके
तुधु भावा सरि नावा ॥ (पन्ना ११०९)

५) उद्वेग : विरह की अवस्था अत्यंत दुखप्रद होती है। विरही का मन कहीं नहीं लगता, वह बेचैन रहता है। 'बारह माहा' की आत्मा-नायिका की स्थिति भी ऐसी ही है। उसे हरि-पति के बिना भरे घर में सुख प्राप्त नहीं हो रहा:

निमाणी निताणी हरि बिनु किउ पावै सुख महली ॥ (पन्ना ११०८)

६) प्रलाप : 'प्रलाप' का अर्थ है--'निरर्थक बातें करना'। विरही की अवस्था धीरे-धीरे ऐसी हो जाती है कि विरह से दग्ध होकर उसे हर चीज दुख देने वाली लगती है। विरहन आत्मा की भी यही दशा है। उसे अंधियारी रात, बरसते बादल, दादुर-मोर-पपीहे की बोली, सर्पों का घूमना, मच्छरों के डंक, भरे पोखर-सरोवर सब हरि के बिना दुख देने वाले प्रतीत हो रहे हैं :

बरसै निसि काली किउ सुखु बाली दादर मोर लवंते ॥
प्रिउ प्रिउ चवै बबीहा बोले भुइअंगम फिरहि डसंते ॥
मछर डंग साइर भर सुभर बिनु हरि किउ सुखु पाईऐ ॥ *(पन्ना ११०८)*

७) उन्माद : 'उन्माद' वह स्थिति है जब व्यक्ति का अपने ऊपर से नियंत्रण समाप्त हो जाता है तथा उसकी विवेक-बुद्धि नष्ट हो जाती है। प्रथम पातशाह कृत 'बारह माहा' की विरहन आत्मा रूपी नायिका भी विरह-अवस्था में उस स्तर पर पहुंच चुकी है जहां उसका स्वयं पर से नियंत्रण खत्म हो गया है और वह प्रभु-पति के वियोग में आहें भर-भर कर मरण के निकट जा पहुंची है :

असुनि आउ पिरा सा धन झूरि मुई ॥ . . .
आगै घाम पिछै रुति जाडा देखि चलत मनु डोले ॥ *(पन्ना ११०९)*

८) जड़ता : वियोग अवस्था में शरीर शिथिलता और जड़ता से ग्रस्त हो जाता है। 'बारह माहा तुखारी' की विरहन आत्मा रूपी नायिका की हरि रूपी पति के वियोग में नींद-भूख नष्ट हो गई है, उसे वस्त्र आदि तक सुख नहीं देते:

हरि बिनु नीद भूख कहु कैसी कापड़ु तनि न सुखावए ॥ *(पन्ना ११०८)*

९) व्याधि : विरह के फलस्वरूप रोग उत्पन्न हो जाना 'व्याधि' है। हरि रूपी पिया के घर न आने के कारण आत्मा रूपी 'धन' अर्थात् 'पत्नी' को बिलकुल भी सुख नहीं है। उसका तन विरह के दुष्प्रभाव के कारण 'छीज' गया है, जर्जर हो गया है:

पिरु घरि नही आवै धन किउ सुखु पावै
बिरहि बिरोध तनु छीजै ॥ *(पन्ना ११०८)*

१०) मरण : विरह में विरही की दशा इतनी शोचनीय हो जाती है कि वह मृत्यु जैसी पीड़ा महसूस करता है। यह अवस्था 'मरण' कहलाती है। 'बारह माहा' में आत्मा-पत्नी की परमात्मा-पति के बिना ऐसी ही हालत है। आहें भर-भर कर मर रही आत्मा के लिए प्रभु से वियोग का दुख 'मरण' की पीड़ा के बराबर हो गया है :

--पिरु घरि नही आवै मरीऐ हावै
दामनि चमकि डराए ॥
सेज इकेली खरी दुहेली
मरणु भइआ दुखु माए ॥
--कोकिल अंबि सुहावी बोलै
किउ दुखु अंकि सहीजै ॥
भवरु भवंता फूली डाली
किउ जीवा मरु माए ॥ *(पन्ना ११०८)*

इस प्रकार प्रथम पातशाह गुरु नानक साहिब का विरह-वर्णन इतना वास्तविक, उत्कृष्ट एवं प्रमाणिक है कि आपकी बाणी 'बारह माहा' न सिर्फ आध्यात्मिक दृष्टि से बल्कि काव्य-शास्त्रीय दृष्टि से भी एक अत्यंत उच्च कोटि की बाणी सिद्ध होती है।



खटकड़ कलां के देश-भक्त परिवार का वारिस शहीद स. भगत सिंघ

*-सिमरजीत सिंघ**

ज़िला नवांशहर का प्रसिद्ध गांव खटकड़ कलां, बंगा-- नवां शहर सड़क पर स्थित पंजाब और अब समूचे देश का भी एक प्रसिद्ध ऐतिहासिक गांव है। इस गांव को अपने निवासी आज़ादी संग्रामी के परिवार पर नाज़ है।

गांव खटकड़ कलां के स्थान पर पहले एक किला होता था, जिसका सम्बंध एक जागीर के मुखिया से था। इसके साथ कई और भी किले थे किंतु वे इनसे छोटे थे जिसके कारण उनको गढ़ खुर्द कहा जाता था तथा इसको गढ़ कलां व गढ़ कहा जाता था।

सरदार भगत सिंघ के पूर्वज़ मुगल काल के दौरान लाहौर ज़िले के नारली गांव में रहते थे। नारली गांव आजकल पाकिस्तान की सरहद पर स्थित है। इस गांव में शहीद भगत सिंघ बहुत बार जाते रहे और डॉ शविंदर सिंघ (संधू) की पुश्तैनी हवेली में ठहरते रहे। संधुओं का बहादुर राजा चर्मिक यहां का निवासी था, जिसने पोरस से भी पहले यूनानी हमलावरों को भगाया था। इस घराने में से करोड़सिंघीआ मिसल के मुखिया स. शाम सिंघ व स. बघेल सिंघ ने लाल किले पर खालसाई निशान झुलाया था। स. भीला सिंघ ने आज़ादी संग्रामी नामधारी सिंघों की रक्षा हेतु शहीदी प्राप्त की। एक बार उनके परिवार का एक नौजवान श्री रणीआ (स. भगत सिंघ से नौ पुश्तें पहले) अपने बुजुर्गों की अस्थियों, जो किसी घटना में मारे गए थे, को गंगा में जल प्रवाह करने के लिए गांव से पैदल ही जा रहा था। रास्ते में बड़े गढ़ के पास उसे रात पड़ गयी तो वह बड़े गढ़ के मालिक से रात ठहरने की आज्ञा लेकर वहीं ठहर गया। रात का खाना खाने के समय गढ़ के मालिक ने उससे उसकी यात्रा का लक्ष्य तथा पारिवारिक पृष्ठभूमि और मौजूदा परिवार के बारे में जानकारी प्राप्त करने के उपरांत उसने अपनी पत्नी से सलाह करके उसको अपनी पुत्री के लिए वर के रूप में चुनने की चाहत पेश की, जिसके लिए नौजवान ने सहमति दी और अपनी अगली मंज़िल की तरफ चल पड़ा।

वापिस आने पर १७२५ ई के लगभग उन दोनों का विवाह बड़ी धूमधाम से सम्पन्न हुआ। गढ़ के मालिक एवं मालकिन ने बड़ा गढ़ इस दम्पति को रहने के लिए दहेज में दे दिया। विवाह के उपरांत इस स्थान का नाम खट में मिले होने गढ़ के कारण खटगढ़ कलां पड़ गया जो बाद में बदलता-बदलता खटकड़ कलां बन गया है। इस घटना को बयान करती काव्यमयी पुस्तक प्रो दीदार सिंघ ने १९८४ ई में प्रकाशित करवायी, जिसमें ज़िक्र है :

रावी नेड़े नगर नारली, संधू जट्टां दा।
जित्थे घुग्ग वसदे सन लोकीं, झुरमट हट्टां दा।
पिंड विच झगड़ा मूल ना कोई, बन्निआं वट्टां दा।
चरमिक संधू कुल दा राजा, रसीआं भट्टां दा।
रहे सिरलथ सूरे जूझदे, धंन धंन करे जहान।
छड्ड नारली चरमिक नींगर, पूज्जा खट गढ़ आण।

**संपादक, गुरमति ज्ञान/गुरमति प्रकाश*

गढ़ी दे राजे आपणी बेटी सुंदर चतर सुजान।
गढ़ी ते सारा राज भाग वी, खट्ट विच कीता दान।
उस दिन तों इह थां अखवाई, 'खट्ट-गढ़' बंगे कोल।

इस दम्पति से खटकड़ कलां में महान आज़ादी संग्रामियों तथा शहीदों का परिवार आरंभ हुआ। समय बदलने के साथ-साथ इस गढ़ की दीवारें ढह-ढेरी हो गयीं। गढ़ की सुरक्षा के लिए बनायी गयी गहरी खाई गांव में चार पोखरों का रूप धारण कर गयी। आज भी कई बार जब ज्यादा बारिश हो जाती है तो ये दो या तीन पोखर आपस में मिल जाते हैं।

आगे चलकर इस परिवार के सदस्य सिक्ख धर्म से प्रभावित होकर सिक्ख धर्म धारण कर गए तथा खालसा सरदार कहकर सत्कारे जाने लगे। इस परिवार की तीसरी पीढ़ी में स. राम सिंघ थे। इन्होंने सिक्ख राज्य की स्थापना के लिए महाराजा रणजीत सिंघ की मदद अपनी जान की परवाह न करते हुए की। सिक्ख राज्य की स्थापना के लिए इनके द्वारा दिखलाई दिलेरी व वफ़ादारी के कारण इस परिवार को इनाम के रूप में एक बड़ी जागीर दी गयी तथा यह परिवार बड़े-बड़े जागीरदार घरानों में गिना जाने लगा। महाराजा रणजीत सिंघ के समय तक यह परिवार जागीरदारों के रूप में दरबार लगाता रहा तथा इलाके के लोगों का इंसाफ करता रहा। इस परिवार के पास अपनी निश्चित फौज रखने के अधिकार थे जो जरूरत पड़ने पर महाराजा को भेजी जाती थी। इस परिवार के पास सिक्ख राज्य का कौमी झंडा चढ़ाने का अधिकार भी था। परिवार के सदस्यों द्वारा सिक्ख राज्य का कौमी झंडा वर्ष में चार बार बड़े उत्साह से चढ़ाने की रस्म अदा की जाती थी। जिस स्थान पर यह झंडा चढ़ाया जाता था, उस जगह का नाम 'झंडा जी' पड़ गया और इस स्थान पर आजकल गुरुद्वारा साहिब सुशोभित है। स. राम सिंघ के घर १८२० ई. को स. फ़तहि सिंघ ने जन्म लिया।

महाराजा रणजीत सिंघ की मृत्यु के उपरांत पंजाब पर अंग्रेजों ने अपना अधिकार स्थापित कर लिया तथा उन्होंने लोगों के अधिकारों को कुचलना शुरू कर दिया। पंजाब के बहादुर लोगों ने अंग्रेज हमलावरों को अपने देश में से निकालने के लिए हथियार उठा लिए तथा अंग्रेज हाकिमों के विरुद्ध लड़-मरने वाली फौज में शामिल हो गए। स. फतहि सिंघ ने मुद्दकी, सभराउ, आलीवाल की लड़ाइयों में बढ़-चढ़कर हिस्सा लिया। अंग्रेजों के खिलाफ लड़ने के कारण इस परिवार की जागीर कम कर दी गयी।

जब १८५७ ई. की आज़ादी की लड़ाई में कुछ जागीरदार तथा राजा अंग्रेजों द्वारा दिखलाये सब्ज़बाग के प्रभाव तले अंग्रेजों के हक में अपने ही देश-भक्त भाइयों के विरुद्ध लड़े तो उस वक्त भी उनके साथ अंग्रेज साम्राज्यवादियों ने धोखा देकर अभद्र मज़ाक किया।

स. फ़तहि सिंघ को भी उनकी छीनी हुई जागीर वापिस करने का लालच देकर यह काम करने के लिए ज़ोर डाला गया जिसके लिए उन्होंने इन्कार कर दिया और कहा कि वे अपने देश के हितों को मुख्य रखते हुए अपना सब कुछ गंवाना भी उचित समझते हैं, किंतु वे अपने देश के लोगों के विरुद्ध हथियार नहीं उठा सकते।

स. फ़तहि सिंघ का पुत्र था ज़ैलदार गुरबचन सिंघ। (कई स्रोतों में खेम सिंघ नाम लिखा मिलता है।) इसके तीन सपुत्र थे-- स.

अरजन सिंघ, स. सुरजन सिंघ तथा स. मेहर सिंघ। स. अरजन सिंघ एक प्रसिद्ध जमींदार थे, जो आज़ादी की लड़ाई में बढ़-चढ़कर हिस्सा लेते रहे। इनकी नेकदिली के कारण ये पूरे इलाके में सत्कारे जाते थे। इन्होंने इलाके में कुएं लगवाए, सराय बनवायी, गुरुद्वारा साहिबान बनवाए। स. अरजन सिंघ के लिए धर्म रूह की खुराक थी, दिखावा नहीं था। ये किरत करके धर्म के लिए अपने हाथों दान देकर भला मनाने में विश्वास रखते थे। हिंदोस्तान में कोई भी ऐसी जगह नहीं थी जिसके बारे में आपको मालूम पड़ता कि वहां अकाल पड़ा है, भूकंप आया है या बाढ़ आई है या किसी अन्य कारण की वजह से जनता दुखी है, आप ने ऐसी हर जगह पर सहायता पहुंचाने की कोशिश की।

एक बार की बात है। गांव का एक दर्जी चीन देश में रोज़गार की तलाश में गया और जब वापिस आया तो उसको छूत के रोग प्लेग ने दबोच लिया। दिनों में ही यह बीमारी गांव में फैलने लगी। अंग्रेज कलेक्टर ने हुक्म दिया कि जिन घरों में प्लेग फैली हुई है, वे नष्ट कर दिए जाएं। स. अरजन सिंघ ने इस बात का डटकर विरोध किया और कहा कि सरकार घर ढाने से पहले उनको दोबारा बनाना यकीनी बनाए।

जब अंग्रेज सरकार ने बार के जंगली इलाके को आबाद करने के लिए २५-२५ एकड़ ज़मीन देकर किसानों को बसाने का प्रयत्न किया, उस समय स. अरजन सिंघ को लायलपुर के पास बंगा गांव में २५ एकड़ ज़मीन अलाट हो गयी तथा वे वहीं जा बसे।

स. अरजन सिंघ के घर बीबी जै कौर की कोख से तीन पुत्रों-- स. किशन सिंघ, स. अजीत सिंघ तथा स. सवरन सिंघ ने जन्म लिया। इन तीनों भाइयों ने पंजाब में 'अंजमन मुहिब्बाने वतन' (भारत माता सोसायटी) के लिए बहुत काम किया।

स. किशन सिंघ का जन्म १८७६ ई. ज़िला जलंधर के गांव खटकड़ कलां में हुआ। स. किशन सिंघ के मन में समाज सेवा की बहुत भावना थी। १८९८ ई. के काल के समय तथा १९०४ ई. में कांगड़ा में आये भूकंप के समय जरूरतमंदों की बहुत सहायता की। १९०६ ई. में आप राजनीति में सरगर्म हुए। १९०७ ई. में आपने कैनाल एक्ट का डटकर विरोध किया। इस समय अंग्रेज सरकार ने आपको गिरफ्तार कर लिया तथा आपको दो साल की कैद काटनी पड़ी। जेल में रहते समय आपको कैदियों के प्रति सरकार के व्यवहार का पता चला, जिसमें सुधार लाने हेतु आपने बहुत प्रयत्न किए। स. किशन सिंघ ने ज़ेल में टोपी पहनने से इन्कार कर दिया तथा पगड़ी की मांग की। आपने भारी जद्दोजहद के बाद सिक्ख कैदियों के लिए ढाई गज़ पगड़ी की मांग आखिर मनवा ली।

१९३० ई. के असहयोग आंदोलन में हिस्सा लेने के कारण आपको सरकार के तशद्दुद को सहना पड़ा। आप १९३८ ई. में पंजाब लेजिसलेटिव एसेंबली के सदस्य चुने गए।

स. किशन सिंघ के घर छः पुत्रों-- स. जगत सिंघ, स. भगत सिंघ, स. कुलबीर सिंघ, स. कुलतार सिंघ, स. रजिंदर सिंघ, स. रणवीर सिंघ तथा तीन पुत्रियों-- बीबा अमर कौर, बीबा समित्रा प्रकाश कौर तथा बीबा शकुंतला ने जन्म लिया। स. जगत सिंघ की ११ साल की आयु में ही मृत्यु हो गई थी।

स. अरजन सिंघ के घर २३ फरवरी, १८८१ ई. को स. अजीत सिंघ का जन्म हुआ। आप जी का बड़ा भाई स. किशन सिंघ भी

आज़ादी के लिए दिन-रात लड़ाई लड़ रहा था। स. अजीत सिंघ ने साईं दास एंग्लो संस्कृत स्कूल, जलंधर से विद्या प्राप्त की।

स. अजीत सिंघ जब छोटा था तब से ही अपने दादा जी से देश में घटित हुई घटनायें सुनता था। ये घटनायें सुनकर उसके अंदर अंग्रेजों के विरुद्ध नफ़रत पैदा होती गयी। स. अजीत सिंघ अपने घर आए तहसीलदार तथा थानेदार को देखता तो वे सभी पंजाबी होते थे। उसको कभी भी अपने दादा स. फ़तिह सिंघ के पास कोई अंग्रेज अफसर या अंग्रेज देखने को नहीं मिला था। एक अजीत सिंघ ने अपने चाचा स. सुरजन सिंघ को अंग्रेज अफसर के साथ देखा। अंग्रेज अफसर स. सुरजन सिंघ से उम्र में छोटा था किंतु फिर भी स. सुरजन सिंघ ने उसे झुककर सलाम की तथा अंग्रेज अफसर को पंजाबी भी अच्छे-से नहीं बोलनी आती थी। उसकी टूटी-फूटी पंजाबी सुनकर स. अजीत सिंघ की अक्सर हंसी निकल जाया करती थी। अंग्रेज उससे इस बात से भी नाराज़ रहते थे कि वो उनको सैल्यूट नहीं करता था।

स. अजीत सिंघ अभी बच्चा ही था कि अपने बड़े भाई स. किशन सिंघ के साथ होले-महल्ले वाले दिन श्री अनंदपुर साहिब जाकर दोनों अमृत छककर तैयार-बर-तैयार सिंघ सज गए। आपका विवाह श्री धनपत राय की गोद ली लड़की बीबी हरनाम कौर से हुआ। विवाह के बाद स. अजीत सिंघ ने बीबी हरनाम कौर को एक गुरबाणी का गुटका दिया, जिससे वो हर दिन सोने से पूर्व पाठ करती थी। यह गुटका उन्होंने सारी उम्र अपने पास संभालकर रखा।

आपने लॉ कॉलेज, बरेली से पढ़ाई शुरू की, किंतु स्वस्थ न रहने पर आपको पढ़ाई छोड़कर वापिस आना पड़ा। फिर आपने डी. ए वी. कॉलेज, लाहौर से एफ. ए. पास कर ली। आपने यूरोपी लोगों को पंजाबी पढ़ाना शुरू कर दिया। १९०७ ई में ज़मीनी मामले तथा नहरी पानी की दरों में बढ़ोतरी हो जाने के कारण आंदोलन शुरू हो गया। आपने शाहूकारों एवं जागीरदारों द्वारा की जाती लूट-खसूट का विरोध किया। किसानों को जत्थेबंद करके 'पगड़ी संभाल जट्टा' लहर कायम की तथा किसान नेता के रूप में उभरकर सामने आए। आपने 'पेशवा' नामक अख़बार लाहौर से शुरू किया तथा बहुत सारी किताबें तथा ट्रेक्ट छापकर लोगों को जागृत करने के लिए बांटे, जिनमें से १८५७ ई का गदर, उंगली पकड़े पंजा पकड़ा, बागी मसीह, महबूब-ए-वतन, बंदर बाद, देशी फौज आदि प्रसिद्ध हैं। इनके द्वारा लिखे गए बहुत-से ट्रेक्ट सरकार द्वारा बगावती सुर वाले समझकर ज़ब्त किए जाते रहे।

स. अजीत सिंघ ने लाहौर में 'महबूब-ए-वतन' नामक एक संघ स्थापित किया। यहां काम करते हुए उनके ही एक साथी ने उनको पकड़वा दिया जब वे हलवाई के भेस में कोलकाता की तरफ जा रहे थे। उनको लाला लाजपत राय के साथ ही मांडला जेल में कैद कर दिया गया। १९०७ ई में उनको रिहा कर दिया गया। वे रूपोश होकर आज़ादी की लड़ाई में हिस्सा डालते रहे।

आपने अपने भाई स. किशन सिंघ के साथ मिलकर लाला लाजपत राय से विशेष सम्बंध पैदा किए। आपके भाषण में बहुत दलील थी जिसके कारण श्रोतागण आपके कायल हो जाते थे।

१९०५ ई में बंगाल विभाजन के खिलाफ सारे देश में रोष प्रकट किया जा रहा था। पंजाब के लोगों में इस विभाजन के कारण बहुत गुस्सा था। पंजाब में अंग्रेजों ने नये आबादकारों

पर कालोनाइजेशन एक्ट लागू कर दिया था। स. किशन सिंघ, स. अजीत सिंघ तथा स. सवरन सिंघ सूफी अंबाप्रसादि सहित इस एक्ट का डटकर विरोध कर रहे थे। हज़ारों ही किसान इस आंदोलन में हिस्सा ले रहे थे। सूफी अंबाप्रसादि की अगुआई में 'पेशवा' अख़बार तथा किताबचे छापकर बांटे गए। आंदोलन से डरते हुए अंग्रेजों ने इन प्रमुख नेताओं को पकड़कर जेलों में बंद कर दिया। १९०४-०५ ई में राजपूताने के इलाके में अकाल पड़ गया। इतनी बुरी हालत हुई कि चारों ओर हाहाकार मच गयी। स. किशन सिंघ ने इस भयंकर स्थिति में लोगों के लिए अनाज, रोटी, कपड़े का प्रबंध किया तथा जिन बच्चों के मां-बाप मर गए उनके लिए एक यतीमखाने का प्रबंध भी किया, जिसकी देखभाल ये खुद करते रहे।

स. सवरन सिंघ भी अपने बड़े भाई स. अजीत सिंघ की तरह 'पगड़ी संभाल जट्टा' ऐज़िटेशन में बढ़-चढ़कर हिस्सा लेते रहे तथा बहुत सारे अख़बार तथा किताबचों में अंग्रेज सरकार की काली करतूतों को लोगों के सामने लाए। आपको भी अंग्रेजों ने जेल में बंद कर दिया तथा अति यातनायें दी गयीं। आपसे आंदोलन के भेद पूछने के लिए कोहलू के आगे बैलों की जगह पर जोड़ा जाता रहा। १९०७ ई. में आपको भी अन्य कैदियों के साथ रिहा कर दिया गया किंतु आप जेल में नामुराद बीमारी टी. बी. का शिकार हो गए।

शहीद स. भगत सिंघ का जन्म २८ सितंबर, १९०७ ई को स. किशन सिंघ के घर माता विद्यावती की कोख से गांव बंगा चक्क १०५, ज़िला लायलपुर में हुआ। स. भगत सिंघ के जन्म के समय सारे परिवार में खुशी की लहर दौड़ गयी। नये जन्मे बच्चे को भाग्यशाली समझा गया, क्योंकि इसी दिन इनके पिता लाहौर सेंट्रल जेल से ज़मानत पर रिहा हुए तथा इनके चाचा स. अजीत सिंघ का मांडला जेल (बर्मा) से रिहायी का हुक्म जारी हुआ तथा छोटे चाचा स. सवरन सिंघ की उसी दिन जेल से रिहायी हुई। इन्हीं कारणों के कारण नव-जन्मे बच्चे का नाम दादी ने भागां वाला रख दिया तथा बाद में भगत सिंघ कहा जाने लगा।

१९१० ई में जब आपकी उम्र ३ वर्ष के लगभग थी आप जी के चाचा स. सवरन सिंघ २२ वर्ष की उम्र में जेल की यातनाओं से लगी बीमारी के कारण इस संसार को सदा के लिए अलविदा कह गए।

स. भगत सिंघ बचपन में अपने घर में विधवा की तरह जीवन व्यतीत कर रही अपनी बड़ी चाची बीबी हरनाम कौर तथा छोटी चाची हुक्म कौर को देखता रहा, जिससे उसके मन में बचपन से ही अंग्रेजों के प्रति घोर नफ़रत पैदा होनी शुरू हो गयी।

स. भगत सिंघ ने प्राथमिक शिक्षा बंगा, ज़िला लायलपुर से प्राप्त की। स. भगत सिंघ की उम्र उस समय लगभग सात वर्ष की थी जब बजबजघाट पर जहाज से उतरते देश-भक्त गदरी बाबाओं को अंग्रेज सरकार ने गोलियों से भून डाला, कुछ को समुद्र में डुबो दिया और जो बच गए उनको जेलों में बंद कर दिया। इनमें से बहुत कम बचकर पंजाब पहुंचकर इंकलाबी सरगर्मियों में जुट गए। इन दिनों स. करतार सिंघ सराभा तथा कई अन्य गदरियों को फांसी देकर शहीद कर दिया गया। इन घटनायों के बारे में वे अपने घर में होती विचार-चर्चा से जानकार होते रहते थे तथा अपने मन में असर कबूलते रहते। स. करतार सिंघ सराभा की शहादत एवं लाहौर साजिश केस ने आपको

बहुत प्रभावित किया। १९१६ ई. में आप डी. ए. वी. स्कूल लाहौर में दाख़िल हो गए। यहां पढ़ते समय आपका सम्बंध प्रसिद्ध देश-भक्तों से हुआ। १९१७ ई. में रूस में इंकलाबी ने वहां की राजधानी, भूमिशाही आदि को गद्दी से उतार दिया तथा श्रमिकों का राज्य स्थापित कर लिया। इस क्रांति ने दुनिया भर में अपना असर छोड़ा जिससे भारत में इंकलाबियों को भी हौसला प्राप्त हुआ। स. भगत सिंघ का इससे हौसला बुलंद हुआ।

१३ अप्रैल, १९१९ ई. को जलियां वाला बाग, श्री अमृतसर का खूनी साका घटित हुआ जिसमें अंग्रेज सरकार ने अनेकों निहत्थे भारतीयों को तोपों, बंदूकों की गोलियों से भून डाला। इस समय स. भगत सिंघ की उम्र १२ वर्ष थी। स. भगत सिंघ जब घटना के बाद जलियां वाला बाग को देखने के लिए गये तो इस घटना ने स. भगत सिंघ के मन में अंग्रेजों के विरुद्ध संघर्ष की भावना को और तेज कर दिया। उन्होंने अपने देश-वासियों के हुए खून-खराबे का बदला लेने का प्रण लिया।

१७ जनवरी से १९ जनवरी, १९२१ ई. तक मलेरकोटले में नामधारी शहीदों की याद में जोड़-मेला मनाया गया। कुछ नामधारी सिंघों को अंग्रेज सरकार ने श्री अमृतसर, रायकोट तथा लुधियाना में फांसी दे दी। १८७२ ई. में मलेरकोटला में ६६ नामधारी सिंघों को शहीद किया गया था। पंजाब में अंग्रेजों ने मुसलमानों एवं सिक्खों के बीच भेदभाव पैदा करने के लिए श्री अमृतसर में श्री दरबार साहिब, घंटा-घर वाली जगह पर तथा रायकोट में श्री गुरु गोबिंद सिंघ जी के ऐतिहासिक गुरुद्वारा साहिब के पास मुसलमानों के बूचड़खाने खुलवा दिए, जहां गाय कत्ल की जाने लग गयीं। इसका बाबा राम सिंघ तथा नामधारी सिंघों ने डटकर विरोध किया तथा प्रतिक्रम द्वारा श्री अमृतसर तथा रायकोट के कई बूचड़ों को कत्ल करके गायों को आज़ाद कर दिया। इस दोष में यह उपरोक्त साका घटित हुआ जिसका जोड़-मेला मनाया जा रहा था। इस जोड़-मेले में स. भगत सिंघ अपने पिता स. किशन सिंघ से दोआबा क्षेत्र के मशहूर गांव मुद्दुला कलां में शामिल हुए जहां चोटी के अगुओं ने शहीदों को श्रद्धांजलि दी।

२० फरवरी, १९२१ ई. को ननकाणा साहिब के महंत नरैण दास के गुंडों द्वारा अंग्रेज सरकार की शह पर निहत्थे सिंघों को बड़ी बेदर्दी से शहीद किया गया। जत्थे के अगुआ जत्थेदार लछमण सिंघ को जंड से बांधकर आग लगाकर शहीद कर दिया गया। इस घटना से सभी ओर हाहाकार मच गयी। इस साके के बाद स. भगत सिंघ ननकाणा साहिब के दर्शन करने के लिए गए तथा सारे साके के बाद का हाल अपनी आंखों से देखा। स. भगत सिंघ वहां से वापिस आता हुआ शहीदों का एक केलंडर भी लेकर आया। इस घटना के रोष में ५ मार्च को एक बड़ी रोष रैली की गयी। स. भगत सिंघ ने भी काले रंग की दसतार सजाकर इसमें शिरकत की और आगे से काले रंग की दसतार सजाना शुरू कर दिया।

जब स. भगत सिंघ दसवीं कक्षा में पढ़ता था तो उस समय देश में अंग्रेजों के विरुद्ध असहयोग लहर शुरू हो गयी। स. भगत सिंघ ने भी डी. ए. वी. स्कूल छोड़कर लाहौर के नये खुले नेशनल कॉलेज में दाख़िला ले लिया तथा असहयोग लहर में हिस्सा लिया। नेशनल कॉलेज क्रांतिकारियों का गढ़ था। यहां स. भगत सिंघ का मिलाप सुखदेव, भगवती चरण वोहरा तथा रणबीर सिंघ से हुआ। स. भगत सिंघ एफ़. ए. की

शिक्षा प्राप्त करने के बाद कानपुर चले गए, जहां आपका मिलाप बी. के. दत्त, चंद्र शेखर आज़ाद तथा राम प्रशाद बिस्मिल्ला जैसे देश-भक्तों से हुआ। १९२४ ई में आप वापिस लाहौर आ गए।

मार्च १९२४ ई में जैतो का मोर्चा शुरू हो गया। अंग्रेज सरकार ने एलान कर दिया कि कोई भी व्यक्ति जत्थे के सदस्यों को पानी तक न पिलाए। इस चुनौती को स्वीकार करते हुए स. भगत सिंघ ने १३वें शहीदी जत्थे को अपने गांव में लंगर छकाया। जब अंग्रेज सरकार को पता चला तो उन्होंने स. भगत सिंघ की गिरफ्तारी के वारंट जारी कर दिए। पिता जी ने आपको कानपुर भेज दिया। गणेश शंकर विद्यार्थी ने आपको अलीगढ़ ज़िले के गांव सादीपुर में नेशनल स्कूल का मुख्याध्यापक लगा दिया। १९२५ ई तक स. भगत सिंघ का लाहौर से कानपुर आना-जाना होता रहा।

१९२५ ई में आपने जोशीले नौजवानों को इकट्ठा करके नौजवान सभा भारत की नींव रखी। आपके बहुत सारे साथियों को गिरफ्तार कर लिया गया। साथियों की गिरफ्तारी के बाद पार्टी का सारा काम आपके कंधों पर आ गया। अक्तूबर, १९२५ ई में लाहौर में दशहरे के मौके पर एक बम धमाका हुआ जिसमें शक के आधार पर स. भगत सिंघ को गिरफ्तार कर लिया गया तथा बाद में रिहा कर दिया गया। १९२८ ई में इन्होंने अपनी पार्टी का नाम बदलकर 'रीपब्लिक पार्टी' रख लिया।

स. भगत सिंघ तथा उसके साथी फिरोज़पुर शहर में रहकर अपनी सरगर्मियां चलाते रहे। स. भगत सिंघ तथा उसके साथी अपने गुप्तवास का समय फिरोज़पुर शहर के तूड़ी बाज़ार के एक चौबारे में गुज़ारते रहे। इस चौबारे के नीचे एक बंगाली डॉक्टर की दुकान थी। इस बाज़ार का नाम आज़ादी के बाद 'शहीद-ए-आजम भगत सिंघ' रखा गया है।

३० अक्तूबर, १९२८ ई. को साइमन कमीशन लाहौर आया तो देश-वासियों ने काली झंडियों से उसका विरोध किया। स. भगत सिंघ तथा उसके साथी भी इस जुलूस में शामिल थे। अंग्रेज सरकार की पुलिस ने इन पर लाठीचार्ज किया जिससे बहुत सारे मुज़ाहराकारी जख़्मी हो गए, जिनमें लाला लाजपत राय भी शामिल थे। उनको भी कुछ लाठियां लगीं। लाला लाजपत राय ने पंडित जवाहर लाल नेहरू के साथ दिल्ली जाकर मीटिंग की किंतु वहां से वे कुछ तकरार की वजह से वापिस आ गए और कुछ दिनों बाद १७ नवंबर, १९२८ ई. को अकाल चलाना कर गए। लाला लाजपत राय की मृत्यु की ख़बर हर तरफ फैल गयी। जब इस ख़बर का बंगाल के चितरंजन दास मुंशी की पत्नी बसंती देवी को पता चला तो उसने पंजाबियों को ताने भरा उलाहना देते हुए नारा मारा कि लगता है, बहादुर पंजाबियों का खून सफेद हो गया है। इतना बड़ा लीडर मारा गया, पंजाब ने कैसे बरदाश्त कर लिया? स. भगत सिंघ तथा उसके साथियों ने अंग्रेजों के तशद्दुद निहत्थे भारतीयों पर होते देखकर तथा बसंती देवी की चुनौती को कबूल करके अंग्रेजों से अपने देश-वासियों पर होते अत्याचार का बदला लेने का प्रण कर लिया। लाठीचार्ज का हुक्म अंग्रेज अफ़सर मि: सकॉट ने दिया था। १९ दिसंबर, १९२८ ई को स. भगत सिंघ तथा उनके साथियों ने मि: सकॉट के भ्रम में पुलिस अफसर मि: सांड्रस की गोली मारकर हत्या कर दी। सांड्रस के कत्ल के बाद स. भगत सिंघ फिरोज़पुर शहर चले गए तथा तूड़ी बाज़ार वाले चौबारे में पहुंच

गए। यहां उनके चौबारे के सामने गंजिया नाई रहता था, जिसकी मदद से वे अपना भेस बदलकर साथियों समेत कोलकाता चले गये।

८ अप्रैल, १९२९ ई को स. भगत सिंघ तथा बी. के. दत्त ने ब्रिटिश हकूमत के काले कानूनों के विरुद्ध रोष प्रकट करने के लिए एसेंबली हाल में बम फेंका तथा अपनी मांगों के इश्तिहार बांटे। यहां से आपको गिरफ्तार करके आप पर मुकद्दमा चलाया गया। स. भगत सिंघ ने अपना केस खुद लड़ा और उनके भाषण आज़ादी की लड़ाई के महान दस्तावेज़ बन गए, जिससे लोगों में जोश की लहर फैल गयी।

जेल में स. भगत सिंघ की भेंट भाई साहिब भाई रणधीर सिंघ से हुई। इन दोनों इंकलाबियों की भेंट के बारे में प्रसिद्ध लेखक स. जसवंत सिंघ कंवल ने अपनी लिखित में बयान किया है जब दोनों शख्सियतों का जेल में मिलाप हुआ तो स. भगत सिंघ ने भाई साहिब के पांव छुए और भाई साहिब ने कहा, "गुरु के सिक्खा! सिक्खी में पांव छूना मना है। फ़तहि बुला!" उन्होंने स. भगत सिंघ को अपनी आगोश में लेते हुए कहा, "तुमने गुरु तेग बहादर साहिब के शूरवीरों वाला काम किया है। धन्य तुम और धन्य तुम्हें जन्म देने वाली।" स. भगत सिंघ ने इसके जवाब में कहा, "हम आपके बच्चे हैं और आज़ादी शमा के परवाने। आज़ादी का फूल प्राप्त करने के लिए कंटीली तार तोड़नी ही पड़ेगी।" भाई साहिब ने नसीहत देते हुए कहा, "जज़्बात कच्चा सोना होते हैं। इनको कुर्बानी ही शुद्ध सोना बनाती है।" स. भगत सिंघ ने भाई साहिब के विचारों से प्रभावित होकर उनसे दिशा-निर्देश लेकर चलने का फैसला कर लिया। भाई साहिब ने उनको कहा, "अगर इरादा इतना दृढ़ है तो गुरु जरूर सहायी होगा तथा फ़तहि हासिल होगी, किंतु इतने दृढ़ निश्चय वाला गुरु-मर्यादा से क्यों बेमुख है? क्या तुम्हारा गुरु साहिब पर विश्वास नहीं?" स. भगत सिंघ ने कहा, "मेरा गुरु साहिब पर पूर्ण विश्वास है। श्री गुरु गोबिंद सिंघ जी ने तो आज़ादी के लिए सरवंश कुर्बान कर दिया। वे देश-भक्तों के सिरताज हैं। ऐसी उदाहरण दुनिया में कहीं नहीं मिलती।" स. भगत सिंघ ने दाढ़ी एवं केश रखने का वादा किया। भाई साहिब ने कहा कि "यहां केवल दाढ़ी एवं केशों की ही बात नहीं, बात गुरु पर सिदक एवं विश्वास की है। आज़ादी का पतंगा तो बने ही हो गुरु का सिदक भी रख लो या भगौड़ा हो जाओ।" स. भगत सिंघ ने भाई साहिब से कहा, "गुरु से बेमुख होकर तो मैं मिट्टी ही हो जाऊंगा।" भाई साहिब ने उन्हें प्यार से आगोश में ले लिया और दोनों महान शख़्सियतें एकमिक हो गयीं।

यहां यह बात वर्णनयोग्य है कि अलग-अलग विद्वानों के स. भगत सिंघ के नास्तिक होने के बारे में अलग-अलग विचार हैं। जब उनके दोस्त उनसे बार-बार उनके नास्तिक होने का कारण पूछते हैं तो स. भगत सिंघ इसके बारे में तर्कसंगत राय देते हैं कि वो नास्तिक नहीं हैं। वे तो सिर्फ परमात्मा के नाम पर किए जाते अंधविश्वासों को नहीं मानते, किंतु उनका ईश्वर के अस्तित्व में पूरा भरोसा है। उन्होंने अंग्रेजी में अपना लेख 'मैं नास्तिक क्यों हूं?' लिखा जो अंग्रेजी अख़बार 'दी पीपल' में लाहौर से प्रकाशित हुआ था और जिसका अनुवाद बाद में हर भाषा में हुआ है। उसमें स. भगत सिंघ बताते हैं कि "धर्म अपने देश हेतु शहीद होने के लिए आसान कर देता है तथा अंधविश्वास मानव की कमज़ोरी का प्रमाण बन जाता है, जो बहुत खतरनाक होता है। इस कारण मैं ईश्वर को तो मानता

हूं किंतु अंधविश्वास के विरुद्ध हूं।"

अदालत में बम फेंकने के केस में स. भगत सिंघ तथा बी. के. दत्त को कालेपानी की सज़ा सुनाई गयी। जिस समय स. भगत सिंघ, राजगुरु एवं सुखदेव पर सांड्रस की हत्या का मुकद्दमा चल रहा था, जिसमें इन तीनों को फांसी की सज़ा सुनायी गयी, उन दिनों कनाडा से प्रकाशित होते साप्ताहिक पंजाबी अख़बार ने स. भगत सिंघ तथा उनके साथी राजगुरु एवं सुखदेव को फांसी की सज़ा दिए जाने के विरुद्ध ज़ोरदार आवाज़ बुलंद की। ३० अक्तूबर, १९३० ई. के अंक में अख़बार के मुख्य पृष्ठ पर 'बीर भगत सिंघ की अपील : प्रिवी कौंसिल लंदन में फांसी के फैसले के खिलाफ आखिरी कोशिश, डीफेंस लाहौर की मदद के लिए मांग' के शीर्षक तले ख़बर छापकर पंजाबियों से सहायता की मांग की। इस ख़बर में स. भगत सिंघ की पोस्ट कार्ड साइज़ फोटो छापकर उस पर फांसी लिखा गया था। अख़बार के संपादक द्वारा इस अंक की संपादकीय भी इसी विषय पर लिखते हुए लोगों को इन शूरवीरों के प्रति सात्विक भावनाओं को उजागर किया गया। इसमें संपादक ने ज़िक्र किया कि "शायद ही कोई ऐसा भारतीय होगा, जिसकी नसों में खून उबाले नहीं खाता। जिसने भी इन योद्धाओं की फांसी की यह ख़बर सुनी है उसका हृदय चूर-चूर हुआ है।"

देश की आज़ादी के लिए कुर्बान होने वाले इन शूरवीर योद्धाओं की सहायता के लिए धन-राशि की सहायता की मांग भी इसी अंक में की गयी जिसके बारे में लाहौर के एक अंग्रेजी अखबार 'पीपल वीकली' को भेजने के बारे में लिखा गया। लोगों ने इनकी सहायता के लिए हज़ारों रुपये इस अख़बार को भेजे जिनके नाम तथा गांव इस अख़बार के १३ नवंबर, १९३० ई. वाले अंक में प्रकाशित किए गए। गांव संधम, बड़ा, मैहदपुर, भंगल, जंडियाला, संकत, खोसे, अधकारे काठे, पंडोरी निझरां, झिंगड़, रुटैंडा, कंदोला, पुरहीरा, जंडियाली कोटला आदि अनेको गांवों के व्यक्तियों द्वारा भेजी गयी सहायता की सूचिका छापी गयी जिसमें इन लोगों द्वारा विनती की गयी कि इन नौजवानों को फांसी से बचाने के लिए हर प्रयास किया जाए। कनेडियन कांग्रेस कमेटी के सदस्य द्वारा स. भगत सिंघ को बचाने के लिए उगराही की गयी, जिसको लोगों ने भरपूर सहयोग दिया। इसको अख़बार में मुख्य ख़बर बनाकर प्रकाशित किया गया। इसी अख़बार में लाहौर में चलते मुकद्दमे के बारे में 'पूरा फैसला' शीर्षक अधीन सारा हाल बयान किया गया, जिसमें छोटे शीर्षक बनाकर फांसी, कालेपानी, सख़्त कैद तथा छोड़े गए व्यक्तियों के नाम भी प्रकाशित किए गए। चाहे इन अख़बारों ने फांसी के इन हुक्मों के बारे में ज़ोरदार आवाज़ बुलंद की थी किंतु फिर भी अंग्रेज सरकार ने सभी कानूनों को ताक पर रखकर ज़ालिमाना ढंग से इन देश-प्रेमियों को २३ मार्च, १९३१ ई. को फांसी पर लटकाकर ही दम लिया।

उन दिनों फांसी देने का आम उसूल यह था कि जिस दिन फांसी देने की तारीख नियत की जाती थी, उस दिन से तीन दिन पहले रिश्तेदार, मित्र-दोस्तों को मुलाकात करने की आज्ञा होती थी। जब स. भगत सिंघ के पिता स. किशन सिंघ तथा अन्य सगे-सम्बंधी, दोस्त मुलाकात करने के लिए गए तो दरोगा जेल ने कहा कि सगे-सम्बंधी ही मुलाकात कर सकते हैं अन्य नहीं। स. किशन सिंघ ने कहा कि दोस्त-मित्रों को भी आज्ञा होनी चाहिए नहीं तो वे भी मुलाकात नहीं करेंगे। दोस्तों को मिलने की

आज्ञा न दी गयी तो स. किशन सिंघ ने भी मुलाकात न की। स. भगत सिंघ की मां ने उनको प्यार करते हुए कहा कि "एक दिन तो सभी ने मरना है, किंतु शानदार मौत वह होती है जिस पर दुनिया गर्व करे।" उसने स. भगत सिंघ को फांसी चढ़ने से पहले 'इंकलाब ज़िंदाबाद' के नारे लगाने के लिए भी कहा।

जिस दिन किसी को फांसी देना होता था तो एक दिन पहले मुलाकात करने के लिए आए वारिसों को लाश ले जाने के लिए कह दिया जाता था कि अगर वे चाहते हैं तो लाश ले जा सकते हैं। फांसी वाले दिन कैदी को सुबह स्नान करवाया जाता था। उसके साथ लगभग चढ़ते समय गर्मियों में साढ़े सात-आठ बजे फांसी लगा दी जाती थी। मजिस्ट्रेट आकर फांसी लगाता था। फांसी देने के बाद लगभग एक घंटा बाद तक लाश लटकती रहती थी। जेल का डॉक्टर आकर मुआइना करके लाश उतारता था, जो जेल के बाहर ले जाकर वारिसों को सौंप दी जाती थी, किंतु स. भगत सिंघ व उनके साथियों को फांसी देने के समय किसी भी कायदे-कानून का ख़्याल नहीं रखा गया। फांसी की नियत तारीख से एक दिन पूर्व जेल से सभी कैदियों को शाम चार बजे की जगह तीन बजे ही काम से छुट्टी करके बंद कर दिया गया। जेल का एक अहाता, जिसको हवालात कहा जाता था, उसमें से कैदियों को निकालकर खाली कर लिया गया। वहां लकड़ियां, मिट्टी के तेल के पीपे आदि लाकर जमा कर लिए गए। शायद पहले स. भगत सिंघ एवं उसके साथियों का यहीं अंतिम संस्कार करने की योजना बनाई गयी थी। साढ़े छः बजे के लगभग स. भगत सिंघ एवं उनके साथियों को पुलिस की गार्द ने फांसी वाली वर्दियां पहनायीं। स. भगत सिंघ एवं उनके साथियों ने टोपियां पहनने से इन्कार कर दिया। वे कोठियों में से नारे लगाते निकले जिससे आसमान गूंज पड़ा। पुलिस वालों ने स. भगत सिंघ तथा साथियों के मुंह बांध दिए ताकि वे नारे न लगा सकें। स. भगत सिंघ एवं साथियों को फांसी के लिए कोठियों के पीछे की ओर से अंदर ले जाया गया। फांसी देने से पहले उनके मुंह खोल दिए गए। फांसी के तख़्ते पर उन्होंने तीन नारे लगाए तथा 'खुश रहो अहल-ए-वतन, हम तो सफ़र करते हैं' कविता पढ़ी। जल्लाद ने फांसी का तख़्ता खींच दिया। यह सारा काम शाम सात बजे के लगभग खत्म हो गया। आम तौर पर फांसी देने से एक घंटा बाद तक लटकाये रखा जाता था, किंतु स. भगत सिंघ एवं उनके साथियों के साथ इस तरह नहीं हुआ। स. भगत सिंघ एवं साथियों को फांसी देने वाले जल्लाद ने फांसी के नीचे बनी खाई में उतरकर उनकी टांगों से लटककर उनकी घंडियां तोड़ दीं तथा १०-१५ मिनट बाद ही तड़पती हुई लाशों को उतारकर, जेल की पिछली दीवार तोड़कर बाहर खड़ी गाड़ियों में रख दिया। गाड़ियों में हथियारबंद अंग्रेज गार्द तैनात थी। अंग्रेजों को स. भगत सिंघ तथा उनके साथियों पर भारी गुस्सा था क्योंकि उन्होंने एक अंग्रेज का कत्ल किया था। वे गुस्से में अंधे हुए लाशों को गाड़ी में काटते गए तथा सतलुज दरिया के गंडा सिंघ वाले पुल के पास जाकर फर्ज़ी तौर पर आग लगाने का ड्रामा करके लाशों को दरिया में बहा दिया।

यह सारी घटना २३ मार्च, १९३१ ई. को सेंट्रल जेल लाहौर में घटित हुई। इस सम्बंधी पता चलने पर लोगों में हाहाकार मच गयी। जगह-जगह पर अंग्रेज सरकार के विरुद्ध जलसे-जुलूस होने लगे। उस दिन फिरोज़पुर शहर के गोखले हाल में भी लोगों द्वारा एक जलसा किया

गया। हज़ारों लोग टोलियां बनाकर शहीदों की दाह संस्कार वाली जगह को ढूंढने लगे। कहा जाता है कि फिरोज़पुर शहर के एक व्यक्ति रामजी दास ढंडोरे वाला के पैरों को गर्म धरती महसूस हुई, जिससे शहीदों की लाशों के हुए अपमान का अंदाज़ा लगाया गया। शहीद स. भगत सिंघ के फांसी लगने के बाद अख़बारों ने यह बात जाहिर की कि उनका निश्चय सिक्ख धर्म में पक्का था। कसूर के ग्रंथी भाई नत्था सिंघ ने अख़बारों को बताया कि अंतिम संस्कार के वक्त शहीद स. भगत सिंघ के सिर पर छः-छः इंच लंबे केश थे तथा सरकार का भी एलान था कि मृतक का दाह संस्कार सिक्ख रिवायतों के अनुसार करवाया जाए। मुम्बई के बलटिज़ अख़बार के २६ मार्च, १९४९ ई. के अंक में शहीद स. भगत सिंघ की सिक्खी स्वरूप वाली फोटो छापी गयी। यह फोटो स. भगत सिंघ के फांसी लगने से कुछ मिनट पहले दिल्ली के व्यक्ति शाम लाल द्वारा खींची गयी बतायी जाती है।

२३ मार्च, १९३२ ई को शहीद स. भगत सिंघ तथा उनके साथियों का पहला शहीदी दिवस मनाया गया। उस समय लोक कवि 'तायर' ने तांगे पर खड़े होकर स. भगत सिंघ की घोड़ी (लोक-गीत) पढ़ी :

आवो नी भैणों रल गावीए घोड़ीयां,
जंञ ते होइ ए तैयार वे हां।
मौत कुड़ी नूं परनावण चलिआ,
देश-भगत सरदार वे हां।
फांसी दे तख़ते वाला खारा बणा के,
बैठा तूं चौकड़ी मार वे हां।
हंझूआं दे पाणी भर नहावो गड़ोली,
लहू दी रत्ती मोहल्ही धार वे हां।
फांसी दी टोपी वाला मुकट बणा के,
सिहरा तूं बद्धा झालरदार वे हां।
जंडी ते वढी लाड़े ज़ोर-जुल्म दी,
सब्र दी मार तलवार वे हां।
राजगुरू ते सुखदेव सरबाले,
चढ़िआ ते तूं ही विचकार वे हां।
वाग फड़ाई तैथों भैणां ने लैणी,
भैणां दा रक्खिआ उधार वे हां।
हरी किशन तेरा बणिआ वे सांढू,
ढुक्के ते तुसीं इको वार वे हां।
पैंती करोड़ तेरे जांञी वे लाड़िआ,
कई पैदल ते कई सवार वे हां।
कालीआं पुशाकां पा के जंञ जु तुर पई,
'तायर' वी होइआ तैयार वे हां।

१५ अगस्त, १९४७ ई. को भारत आज़ाद हुआ। उसी दिन स. अजीत सिंघ की मृत्यु की ख़बर आ गयी। जब सारा भारत आज़ादी का जश्न मना रहा था, उसी समय पंजाब सांप्रदायिकता तथा दंगों का अजीब तरह का संताप भोग रहा था। पाकिस्तान अस्तित्व में आ चुका था। इस विभाजन के समय देश के महान शहीदों की सतलुज के किनारे हुसैनीवाला वाली जगह पाकिस्तान में चली गयी, जिसको १७ जनवरी, १९६१ ई में स. प्रताप सिंघ कैरों, मुख्यमंत्री पंजाब की कोशिशों का सदका पाकिस्तान से खरीदकर भारत में शामिल किया गया तथा शहीदों की यादगार कायम की गयी। फिरोज़पुर में शहीदों की दाह संस्कार वाली जगह पर उनकी समाधियां बनाई गयीं तथा कांसी की प्रतिमाएं स्थापित की गईं।

आज़ादी के बाद स. भगत सिंघ के भाई स. कुलबीर सिंघ खटकड़ कलां से फिरोज़पुर चले गए तथा मोती बाज़ार में रहने लगे। १९६२ ई में उन्होंने जनसंघ पार्टी द्वारा चुनाव में हिस्सा लिया तथा अपने विरोधी को भारी बहुमत से

हराकर फिरोज़पुर से विधायक का चुनाव जीता।

२३ मार्च, १९६३ ई को स. भगत सिंघ की प्रतिमा खटकड़ कलां में स्थापित की गई। प्रतिमा पर पहला हार उनकी माता विद्यावती जी ने पहनाया। इस ख़बर का फिल्मांकन सभी टेलीविज़नों पर दिखाया गया, जिसको देखकर उनका साथी ज़िंदा शहीद श्री बी. के. दत्त उनकी मां से मिलने के लिए आया। इस मिलाप के सात दिन बाद श्री दत्त बीमार पड़ गया तथा कुछ समय बाद ही सदा की नींद सो गया। श्री बी. के. दत्त की वसीयत के मुताबिक उसका अंतिम संस्कार भी यहां करके उसकी भी समाधि बनायी गयी।

इसी साल स. अजीत सिंघ की पत्नी बीबी हरनाम कौर की मृत्यु हो गयी। उनका दाह संस्कार उनकी अंतिम इच्छा के मुताबिक शहीद भगत सिंघ की समाधि के पास ही किया गया।

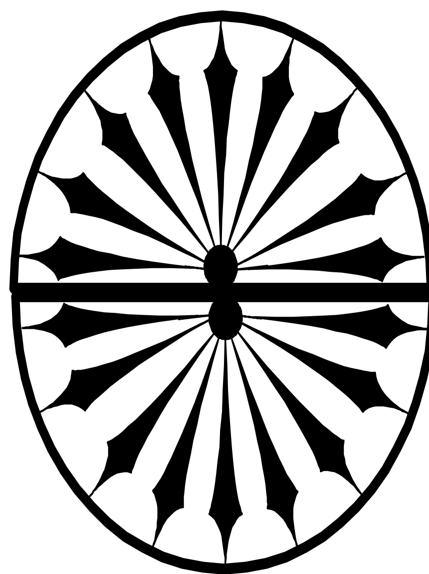
१९७१ ई में भारत-पाकिस्तान जंग के समय पाकिस्तानी फौज ने भारत के इलाके पर इन समाधियों तक कब्ज़ा कर लिया। भारतीय फौज के योद्धाओं ने अपनी जान पर खेलकर इन यादगारों को दोबारा अपने कब्ज़े में ले लिया, परंतु पाकिस्तानी फौज ने इनकी कांसी की प्रतिमाओं को तोड़कर नष्ट कर दिया। भारत सरकार द्वारा काफी देर बाद इन यादगारों को दोबारा स्थापित किया गया।

स. भगत सिंघ की माता को १ जनवरी, १९७३ ई. को पंजाब सरकार द्वारा 'पंजाब माता' का खिताब तथा १००० रुपये महीना पेन्शन देकर इनका शहीद की माता होने का सत्कार किया गया। इनकी मौत के बाद इनका दाह संस्कार भी शहीदों की समाधियों के पास ही फिरोज़पुर में करके इनकी समाधि स्थापित की गयी।

स्रोत पुस्तकें :

१. सिक्ख पंथ विशव कोश, डॉ. रतन सिंघ (जग्गी)
२. पंजाब कोश, भाषा विभाग पंजाब
३. जन साहित, सितंबर २००७, भाषा विभाग पंजाब
४. जेल चिट्ठीआं, भाई रणधीर सिंघ
५. जेल डायरी स. भगत सिंघ, पंजाब सरकार
६. साडा नवांशहर, जे. बी. गोयल, आई ए एस
७. पिंड, शहर ते कसबे, स. अमरजीत सिंघ
८. युग पुरुष स. भगत सिंघ अते उन्हां दे बुजुर्ग, वरिंदर संधू
९. साथी भगत सिंघ शहीद दी शहीदी दे अक्खीं देखे हालात अते मेरी आप बीती, साहिब सिंघ सलाणा





गुरमति के अनुसार सिक्ख महिला

*-डॉ. जगजीत कौर**

अंतर्राष्ट्रीय स्तर पर आठ मार्च यू. एन. ओ. द्वारा ऐसा दिन निश्चित कर दिया गया है जब विश्व स्तर पर महिला वर्ग का सम्मान करने, नारी वर्ग के प्रति कल्याणार्थ योजनाएं बनाने और सरकारी व निजी स्तर पर विशेष योग्यता प्राप्त स्त्रियों के सम्मान की कुछ योजनाओं के लम्बे-चौड़े भाषण दिए जाते हैं, योजनाओं पर फाईल तैयार किए जाते हैं, जिन पर साल भर धूल पड़ी रहती है और पुन: आगामी वर्ष आठ मार्च के दिन झाड़-पोंछकर उन्हें क्रियान्वित करने की चर्चा चलती रहती है। भारतीय समाज में स्त्री जाति की क्या अवस्था है, वह कितना सम्मानपूर्ण जीवन जी रही है, यह हम सब जानते ही हैं।

यह विश्वव्यापी रिवायत सन् १९७३ से प्रारंभ हुई और वह भी अमेरिका जैसे प्रगतिशील देश की महिलाओं के विरोध, आंदोलनों और अनेक प्रकार के प्रदर्शनों के फलस्वरूप। एक सिक्ख जगत है जहां १५वीं शताब्दी में ही श्री गुरु नानक देव जी ने स्त्री जाति पर हो रहे जुल्मों का डटकर विरोध किया, मध्ययुगीन संकीर्ण मानसिकता का खंडन कर *'सभ परवारै माहि सरेषठ', 'बतीह गुण सुलखणी', 'सोभावंती नार', 'जितु जंमहि राजान'* आदि विशेषणों से नारी जाति को सुसज्जित कर उसे समाज में स्वच्छंद और स्वतंत्र विचरण का अवसर दिया; पुरुष के समान हकों की अधिकारिणी बना उसे सम्मान, आदर व प्रतिष्ठा का केंद्र बनाया। नारी को आध्यात्मिक, सामाजिक, राजनीतिक और आर्थिक क्षेत्र में पुरुष की सही अर्थों में सहभागिनी घोषित किया। स्त्री भी गुरु-शिक्षा पर चलकर, गुरमति धारण कर, शबद व संगत से जुड़कर अपना आत्मिक कल्याण कर सकती है। उसे परमपिता परमेश्वर की आराधना कर परम पद की अधिकारिणी बनने का अधिकार गुरदेव जी ने दिया।

स्त्री जाति ने भी गुरु की बख़्शिश से प्राप्त इस आज़ादी का पूरा सदुपयोग किया। सिक्ख इतिहास इस बात का साक्षी है कि गुरु-काल से लेकर गुरुद्वारा सुधार लहर, अकाली लहर के मोर्चों तक सिक्ख स्त्री ने गुरसिक्खों के साथ कंधे से कंधा मिलाकर पंथक सेवा के प्रत्येक कार्य में पूरा योगदान दिया है, गौरवशाली स्वर्णिम इतिहास का सृजन किया है, जिसे हम प्रतिदिन अरदास में याद करते हैं-- *"जिंनां सिंघां सिंघणीआं ने धरम हेत सीस दित्ते।"* सिंघ शूरवीरों के साथ ही साथ वीरांगनाओं, जिन्होंने धर्म-आदर्श की पहरेदारी करते हुए जीवन कुर्बान किए, की भी वाहिगुरु अकाल पुरख से गुरु-दरगाह पर चिरकाल तक परवान चढ़े रहने की अरदास करते हैं।

जरा आज की परिस्थितियों पर निगाह डालें और देखें कि क्या आज भी ऐसी पूर्ण गुरमति-धारिणी सिक्ख स्त्रियां हमारे बीच हैं जो सिक्ख जगत के लिए रोल मॉडल बन सकती हैं? क्या कोई ऐसा स्त्री वर्ग है जो देश-विदेशव्यापी मानव समाज के सामने आदर्श बनकर खड़ा हो और सिक्ख समाज फख्र के साथ सिर ऊंचा कर उसका यशोगान कर सके? शायद इन सबका उत्तर 'न' में है। ऐसा क्यों हुआ? ऐसा

**1801-C, Mission Compound, Near St. Mary's Academy, Saharanpur-247001 (U.P.) Mob. 94124-80266*

इसलिए हुआ कि हम अपने आदर्शों से बहुत दूर चली गई हैं। हम भूल गई हैं कि हम उस निर्मल पंथ की सेवादार हैं जिनकी सेवा यह लगाई गई थी कि दिशा-भ्रमित हो चुके, भटक चुके पुरुषों, युवा बालक-बालिकाओं, बच्चों को गुरमति की दिशा देकर उन्हें 'गुरमति गाडी राह' के पथिक बनाना है। हम तो स्वयं भूल गई हैं कि हम उस बेबे नानकी की वारिस हैं जो सिक्ख धर्म की प्रथम सिक्ख बन, श्री गुरु नानक देव जी के पारब्रह्म स्वरूप का परिचय अपने चौगिरदे को दे स्वयं उस पर पहरा देती रहीं। उस माता खीवी '*नेक जन*' को हम भूल गए, जो दातू और दासू को सही मार्ग दिखाती रहीं। माता मनसा देवी जी, त्याग की मूर्ति बीबी भानी जी एवं सेवा-सत्कार की प्रारूप, '*बड जोधा*' की जननी माता गंगा जी के सेवा-परोपकार कार्यों को हमने भुला दिया; माता किशन कौर जी, माता गुजरी जी, दशमेश पिता की जननी, बलिदानी पति गुरु तेग बहादर साहिब की सहयोगी गुरु-महिल, 'तप तेज' पर पहरा देने वाली, नन्हे-नन्हे दुधमुंहे पोतों को बलिदान-त्याग का पाठ पढ़ाने वाली को हम कैसे भूल गईं? यही नहीं, माता साहिब कौर, पंथ की माता के आदर्शों, गुरु-मंजियों की प्रचारक सेवारत महिलाओं, जंगे-मैदान में शौर्य-प्रदर्शन करने वाली बीबी शरण कौर, बीबी रूप कौर, माता भाग कौर जी के एक लम्बे इतिहास को हम भूल गई हैं, जो हमें अपनी धरोहर संभालने का उपदेश दे गई थीं। हम इन महान स्त्रियों से मार्गदर्शन पाने योग्य साबित नहीं हो पाईं।

हमने क्या किया? हम तो खुद बीसवीं सदी की तड़क-भड़क, ग्लैमर आदि में भटक गई हैं। आधुनिकता के नाम पर हमने अपना पहरावा ऐसा बना लिया है जो सिक्ख बच्ची के योग्य नहीं है। बाहरी दिखावे के क्षेत्र में गुरसिक्ख परिवार की बच्चियां आधुनिकता के मोह में ब्यूटी कंटैस्टों में भाग लेती हैं; शहर की बात छोड़ो, गांवों तक में भी 'ब्यूटी क्वीन' बनने की होड़ लगी हुई है। सिक्ख शिक्षण-संस्थाओं में भी बाहरी रूप को लेकर सुंदर बनने की होड़-सी लगी हुई है। फैशन ने सिक्ख स्त्री की बुद्धि को भ्रमित कर दिया है। आज की स्त्री बुढ़ापे के नाम से डर रही है। वो भूल रही है गुरु साहिब के उपदेश को-- "*बाल जुआनी अरु बिरधि फुनि तीनि अवसथा जानि ॥*" क्यों नहीं हम सहज के साथ जी रहीं? गुरसिक्ख को तो कुदरत के अनुसार जीने का उपदेश है; कुदरत के रंगों के साथ जीवन को आनंदमयी बनाने का, गुरु-हुक्म में चलने का उपदेश है, फिर हम कुदरत को चैलेंज क्यों कर रही हैं? कितना भी प्रयास क्यों न कर लें, आखिर तो हमें कुदरत के नियमों के सामने, गुरु-हुक्म के सामने नत्मस्तक होना ही पड़ेगा। हम स्त्रियां क्यों आम प्रवाह के साथ बहती जा रही हैं? हम क्यों '*बिपरन की रीति*' अपना रही हैं? हम भूल रही हैं कि हमारा नाता पंथ से जुड़ा हुआ है। सिक्ख होने के नाते हमारा यह दायित्व बन जाता है कि हम अपना जीवन गुरमति अनुसारी व्यतीत करें। सिक्ख परिवार में जन्म लेकर नाम के साथ 'कौर' लगाना हमारा सिक्खी दायित्व है। जो रहित मर्यादा सिक्ख पुरुष के लिए है वही मर्यादा सिक्ख स्त्री के लिए भी है। स्त्रियों के लिए कोई अलग रहित मर्यादा (**Code of Conduct**) नहीं है। रहित मर्यादा के अनुसार, "*जो स्त्री या पुरुष, एक अकाल पुरख, दस गुरु साहिबान (श्री गुरु नानक देव जी से लेकर श्री गुरु गोबिंद सिंघ साहिब तक), श्री गुरु ग्रंथ साहिब तथा दस गुरु साहिबान की बाणी एवं शिक्षा और दशमेश जी के अमृत पर निश्चय रखता है तथा किसी अन्य धर्म को नहीं मानता, वह सिक्ख है।*" इस प्रकार यदि हम सिक्ख कहलाते हैं तो हमारा फर्ज़ बन जाता है कि एक तो हम श्री गुरु ग्रंथ

साहिब जी की पावन बाणी पर अटूट विश्वास रखें, गुरबाणी के उपदेश के अनुसार जीवन-यापन करें; दूसरा, खंडे-बाटे का अमृत-पान कर पूर्ण रहित मर्यादा का पालन करें। केश, कंघा, कड़ा, कृपाण, कछहिरा हमारी रहित के अंग हैं। केशों का सम्मान करें, उनका अपमान न करें। जरूरी नहीं है कि हम नंगे सिर और अर्धनग्न परिधान में ही सुंदर दिखते हैं, सिर ढककर, साफ-सुथरे, स्वच्छ, सुंदर वस्त्रों में भी गुरु की सिक्ख स्त्री का व्यक्तित्व निखरा प्रतीत होता है। उसकी अपनी एक रहिणी-बहिणी है। वह उस वेश में ही डिगनीफाईड और ग्रेसफुल लगती है। मीडिया के विज्ञापन व्यवसायिक (कामर्शियल) दृष्टि से कामयाब हैं, परंतु नकली सुंदरता को बढ़ाने वाले कास्मैटिक्स का अंतिम परिणाम दुखद ही होता है। ये मानव के लिए घातक हैं। ये कई प्रकार के एलर्जी-जनित रोगों को जन्म देते हैं। गुरसिक्ख स्त्री का असली श्रृंगार नाम-सिमरन है, सतिसंगत करना है और प्रभु-परमेश्वर के हुक्म में चलना है; तन को नहीं मन को प्रभु-प्रेम के रंग में रंगकर सुंदर बनाना है :

इहु मनु सुंदरि आपणा हरि नामि मजीठै रंगि री ॥
तिआगि सिआणप चातुरी तूं जाणु गुपालहि संगि री ॥१॥रहाउ॥
भरता कहै सु मानीऐ एहु सीगारु बणाइ री ॥
दूजा भाउ विसारीऐ एहु तंबोला खाइ री ॥
(पन्ना ४००)
कामणि तउ सीगारु करि जा पहिलां कंतु मनाइ ॥
(पन्ना ७८८)

नाम-सिमरन और प्रभु-भक्ति से प्राप्त किया गया आत्मिक सौंदर्य ही चिरस्थायी होता है और जीव स्त्री को सही अर्थों में सुंदर घोषित करता है :

सेई सुंदर सोहणे ॥ साधसंगि जिन बैहणे ॥
हरि धनु जिनी संजिआ सेई गंभीर आपार जीउ ॥ (पन्ना १३२)

ऐसी सुंदरता कभी फीकी नहीं पड़ती। नाम-सिमरन की लाली मुख को सदैव शोभनीय बनाए रखती है :

राम रंगु कदे उतरि न जाइ ॥
गुरु पूरा जिसु देइ बुझाइ ॥१॥
हरि रंगि राता सो मनु साचा ॥
लाल रंग पूरन पुरखु बिधाता ॥१॥रहाउ॥
संतह संगि बैसि गुन गाइ ॥
ता का रंगु न उतरै जाइ ॥ (पन्ना १९४)

गुरबाणी स्त्री को गुण-संचय का आदेश देती है और उसके गुणों-लक्षणों के आधार पर ही उसे सुलक्षणी-कुलक्षणी, सुहागण-दुहागण के रूप में वर्णित करती है। **'सुलक्षणी'** उत्तम गुणों से भरपूर स्त्री है जिसके बत्तीस गुणों की बात गुरबाणी में कही गई है। इन बत्तीस गुणों में **'महान कोश'** (भाई कान्ह सिंघ) के अनुसार सेवा-भक्ति, पति-भक्ति, दया, सत्य, संतोष, धैर्य आदि गुणों के साथ घर-गृहस्थी संभालने के गुणों का भी वर्णन किया गया है। ऐसी योग्य गुणवान स्त्री ही योग्य संतान को जन्म दे, उसका सदाचारपूर्ण गुणों द्वारा पालन-पोषण कर, समाज के लिए, पंथक उत्थान के लिए योगदान दे सकती है :

बतीह सुलखणी सचु संतति पूत ॥
आगिआकारी सुघड़ सरूप ॥
इछ पूरे मन कंत सुआमी ॥
सगल संतोखी देर जेठानी ॥३॥
सभ परवारै माहि सरेसट ॥
मती देवी देवर जेसट ॥
धंनु सु ग्रिहु जितु प्रगटी आइ ॥
जन नानक सुखे सुखि विहाइ ॥(पन्ना ३७१)

दूसरी ओर **'कुलखणी'** उसे बताया गया है जो अपने मन के मुताबिक चलती है, कुटिल, कपटी, दुराचारिणी, प्रभु-भक्ति व भय से हीन,

धन-द्रव्यों से मोह रखती है :
मनमुख मैली कामणी कुलखणी कुनारि ॥
पिरु छोडिआ घरि आपणा पर पुरखै नालि पिआरु ॥
त्रिसना कदे न चुकई जलदी करे पूकार ॥
नानक बिनु नावै कुरूपि कुसोहणी परहरि छोडी भतारि ॥ *(पन्ना ८९)*

ऐसी कुलखणी जब तक 'शबद' से नहीं जुड़ती तब तक उसका हृदय शुद्ध नहीं हो सकता, वह भटकती ही रहती है, भले ही बाहरी रूप से वह कितना ही श्रृंगार क्यों न कर ले :
बिनु सबदै सुधु न होवई जे अनेक करै सीगार ॥
पिर की सार न जाणई दूजै भाइ पिआरु ॥
सा कुसुध सा कुलखणी नानक नारी विचि कुनारि ॥ *(पन्ना ६५१)*

इधर सुहागण (सुगागिन) स्त्री का श्रृंगार क्या है? गुरु-शबद से जुड़कर उसके अंतर की हउमै का विनाश हो जाता है; गुणों से भरपूर वह प्रिय पति और अन्य परिवार के लिए सुख, सहज, शांति का स्रोत बनती है :
सबदि रते हउमै गई सोभावंती नारि ॥
पिर कै भाणै सदा चलै ता बनिआ सीगारु ॥ . . .
ना हरि मरै न कदे दुखु लागै सदा सुहागणि नारि ॥ *(पन्ना ६५१)*

सुहागण तो पति-प्रभु से प्रेम कर, उसकी आज्ञा में चलकर घर-परिवार को संवार लेती है, परंतु कटु बोल बोलने वाली नारी बाहरी श्रृंगार करके भी सच्चा सुख प्राप्त नहीं कर सकती :
दोहागणी महलु ना पाइन्ही न जाणनि पिर का सुआउ ॥
फिका बोलहि ना निवहि दूजा भाउ सुआउ ॥ . . .
सोहागणी आपि सवारीओनु लाइ प्रेम पिआरु ॥
सतिगुर कै भाणै चलदीआ नामे सहजि सीगारु ॥ *(पन्ना ४२६)*

इस प्रकार गुरु-शबद से जुड़ी "*पिर कै भाणै*" में चलने वाली ही सच्चे अर्थों में सिक्ख स्त्री है। वही खुशहाल सिक्ख परिवार का संचालन कर सकती है, संतान को आज के माहौल में "*भख अभख सब खाइ*" के लोभ से दूर रख संतुलित व पौष्टिक भोजन की योजना बना सकती है। पदार्थवादी प्रतिस्पर्धापूर्ण माहौल में स्वयं उच्च शिक्षा प्राप्त कर "*विदिआ वीचारी तां परउपकारी* " के महत्त्व को समझकर, स्वयं भी शिक्षा के असल मकसद को समझकर बच्चों को भी उसी दिशा की प्रेरणा दे सकती है। गुरु साहिब का फरमान है : "*पाधा गुरमुखि आखीऐ चाटड़िआ मति देइ ॥*" शिक्षा का वास्तविक अर्थ सामाजिक, नैतिक व आत्मिक उत्थान है। ऐसा शबद में जुड़ी सुरति ही सोच सकती है। ऐसी गुरसिक्ख स्त्री ही समझ सकती है कि आज के लोलुप-लालची भ्रष्ट समाज में जहां पग-पग पर भ्रष्टाचार, रिश्वतखोरी, नैतिक मूल्यों का ह्रास हो रहा है, सिक्ख स्त्री को सबल भूमिका निभानी है। गुरु-उपदेश के अनुसार स्त्री सुच्ची किरत की प्रेरणा अपने जीवन-साथी को दे सकती है; आय से अधिक (काले) धन का प्रवेश घर-परिवार में निषिद्ध कर सकती है। उच्च शिक्षा प्राप्त गुरु की सिंघणी जिस भी प्रोफेशन में है, डॉक्टर, इंजीनियर, अध्यापक, वकील, कारव्यवसाय में, कारपोरेट सर्विसेज में, जहां भी, जिस हैसियत में भी कार्यरत है, उसकी कार्य-विधि गुरमति के अनुसार ही होनी चाहिए। अकाल पुरख की कृपा से अगर उसे उत्तम शिक्षा प्राप्त कर उच्च पद पर कार्य करने का अवसर मिला है तो वो अपने अंतरमन को सदा उच्च दिव्य गुणों से जोड़े रखे, क्योंकि इसका अनुचित लाभ तो मनमुखता है :
मनमुखु बिदिआ बिक्रदा बिखु खटे बिखु खाइ ॥ *(पन्ना ९३८)*

आज की शिक्षित गुरसिक्ख स्त्री को ही परिवार को एक सबल इकाई के रूप में बांध कर रखना है। यह आज की ज्वलंत समस्या

है। परिवारों में विघटन हो रहा है। एक तो पति-पत्नी के आपसी सम्बंध ही सुखदायी नहीं हैं, कलह-क्लेश से बात तलाक और बंधन-टूटन तक पहुंच रही है। सिक्ख-स्त्री भूल रही है कि सिक्ख का 'अनंद कारज' का समन्वय आनंद में होता है। "*एक जोति दुइ मूरती धन पिरु कहीऐ सोइ*" के आदर्श पर टिका यह गठबंधन सहज मार्ग का बंधन है जो टूट नहीं सकता। अपने-अपने दायित्व का शांतिपूर्ण ढंग से निर्वाह करते हुए पंथक उत्थान में हमें योगदान देना है; घर में अन्य बड़े बुजुर्गों का सम्मान करना है। गुरु-उपदेश है :

काहे पूत झगरत हउ संगि बाप ॥
जिन के जणे बडीरे तुम हउ तिन सिउ झगरत पाप ॥ *(पन्ना १२००)*

जन्म देने वाले माता-पिता को वृद्धावस्था में सहारे की जरूरत होती है, उन्हें वृद्ध आश्रमों में भटकने को नहीं छोड़ना है।

गुरु की सिक्ख कहलाने वाली स्त्री को गुरु-मर्यादा अनुसार जीवन चलाना है; समाज में प्रचलित पतितपुना, नशाखोरी से बच्चों को बचाकर उच्च पावन विरसे के साथ जोड़ना है। शानदार विरसे का निर्माण और उस विरसे की संभाल करना गुरसिक्ख स्त्री का प्रथम कर्त्तव्य है। यह न हो कि गुरु साहिबान ने जो उत्तम विशेषण हमें दिए हैं उसके विपरीत हमारे लिए यही कहना पड़े :

रंना होईआ बोधीआ पुरस होए सईआद ॥
सीलु संजमु सुच भंनी खाणा खाजु अहाजु ॥
सरमु गइआ घरि आपणै पति उठि चली नालि ॥
(पन्ना १२४३)

फार्म-४, नियम-८

१.	*प्रकाशित करने का स्थान*	:	*कार्यालय, शिरोमणि गुरुद्वारा प्रबंधक कमेटी, श्री अमृतसर*
२.	*प्रकाशित करने का समय*	:	*प्रत्येक माह की पहली तारीख*
३.	*मुद्रक का नाम*	:	*स. दलमेघ सिंघ*
	राष्ट्रीयता	:	*भारतीय*
	पता	:	*सचिव, शिरोमणि गुरुद्वारा प्रबंधक कमेटी, श्री अमृतसर*
४.	*प्रकाशक का नाम*	:	*स. दलमेघ सिंघ*
	राष्ट्रीयता	:	*भारतीय*
	पता	:	*सचिव, शिरोमणि गुरुद्वारा प्रबंधक कमेटी, श्री अमृतसर*
५.	*संपादक का नाम*	:	*स. सिमरजीत सिंघ*
	राष्ट्रीयता	:	*भारतीय*
	पता	:	*संपादक, गुरमति ज्ञान, शिरोमणि गुरुद्वारा प्रबंधक कमेटी, श्री अमृतसर*
६.	*मालिक*	:	*शिरोमणि गुरुद्वारा प्रबंधक कमेटी, श्री अमृतसर*

मैं सिमरजीत सिंघ घोषणा करता हूं कि उपरोक्त विवरण मेरी जानकारी अनुसार पूर्णत: सही है।

तारीख -०१/०३/१३

हस्ताक्षर/-

(सिमरजीत सिंघ)

संपादक, गुरमति ज्ञान।

राष्ट्र के विकास में ग्रामीण महिलाओं का योगदान

-श्रीमती शैल वर्मा*

किसी भी राष्ट्र के विकास एवं निर्माण में महिलाओं की भूमिका महत्त्वपूर्ण होती है। हमारा देश अधिकतर गांवों में बसा हुआ है। ग्रामीण महिलायें जब तक शिक्षित नहीं होंगी तब तक महिलाओं का सम्पूर्ण विकास नहीं होगा। सम्पूर्ण जनसंख्या का लगभग आधा भाग होने के कारण यदि वे सक्रिय योगदान दें तो वे अपना सर्वपक्षीय विकास तो करेंगी ही, देश के विकास में भी सहयोग दे सकती हैं।

भारत में आज भी कई सामाजिक रीति-रिवाज़ महिलाओं के विकास में बाधक बने हुए हैं। समाज में कई जगह महिलाओं को नौकरी न करने देने की प्रवृत्ति अक्सर उन्हें जीवन में विकास करने से वंचित रखती है। इसके विपरीत निजी एवं सरकारी क्षेत्र में बहुत-सी महिलाओं को नौकरी करते भी देखा जा सकता है। परिणामस्वरूप हर क्षेत्र में पुरुषों की अपेक्षा महिलाओं की संख्या आज भी कम है। महिलाओं में साक्षरता की कमी, प्राचीन रीति-रिवाज़ों का बंधन, संयुक्त परिवारों का विघटन आदि महिलाओं में विकास की संभावनाओं को कम करता है।

अब जब समय बदल रहा है नारी को हर क्षेत्र में महत्त्व मिलने लगा है, लेकिन फिर भी इसका भरपूर लाभ ग्रामीण महिलायें नहीं उठा पा रही हैं। कुछ लोगों का अब भी विचार है कि पढ़ने-लिखने से क्या लाभ, नौकरी तो मिलती नहीं। यह बात भी कुछ हद तक सच है। नौकरी न मिलने के ख़्याल से औरतें प्राय: पढ़ाई को बीच में ही छोड़ देती हैं। यदि महिलायें व्यवसायिक शिक्षा ग्रहण करती हैं तो घर बैठे अपने स्वयं का रोज़गार भी चला सकती हैं। सरकार ने कई ऐसी योजनायें महिलाओं के लिए चलाई हैं ताकि वे अपने पैरों पर खड़ी हो सकें। ग्रामीण क्षेत्रों में आटा पीसने, धान कूटने और दाल तैयार करने के परंपरागत काम का अब मशीनीकरण हो गया है। ग्रामीण महिलाओं को चाहिए कि वे आटा मिल, चावल मिल और दाल मिल आदि चलाने की विधि को स्वयं सीखें और अपना आर्थिक विकास करें। सिलाई-कढ़ाई-बुनाई का काम अब भी अधिकतर महिलाओं के जिम्मे है। आज अच्छी-अच्छी मशीनों का आविष्कार हो चुका है। मशीनों की खरीददारी के लिए सरकारी अनुदान की भी व्यवस्था है। ब्लाक अधिकारी अथवा ज़िला अधिकारी के सम्पर्क-सूत्रों से जानकारी प्राप्त करके गांव में मशीनों का संचायन करना चाहिए। बैंक लोन से निटिंग-सिलाई मशीन आदि की व्यवस्था करके कम समय में अच्छी उपलब्धियों को आसानी से प्राप्त किया जा सकता है। स्वयं प्रशिक्षण लेने के बाद शिक्षण संस्थान को भी चलाया जा सकता है।

'नया पंचायती राज कानून' महिलाओं की बेहतरी के लिये बनाया गया उल्लेखनीय कार्य है। तीस प्रतिशत महिलाएं प्रतिनिधि ग्राम पंचायत और ज़िला पंचायत में चुनकर आ गयी हैं, लेकिन अधिक उचित प्रशिक्षण के अभाव और

*४८/८, सागर सदन, पुलिस चौकी के पीछे, बभन गांवा, गांधी नगर, बस्ती-२७२००१ (उ प्र), मो ९४५४६-२२८१५

संगठन न होने से अभी भी वे पुरुषों की कमांड पर ही चल रही हैं। देश के कुछ प्रदेशों में महिला संगठन बन चुके हैं और आशानुकूल कार्य कर रहे हैं। साहित्य, कला, गृह उद्योग द्वारा भी महिलाएं अपना तथा देश का आर्थिक विकास कर रही हैं। कुछ प्रदेशों में ग्रामीण महिलाओं का अभी भी उचित विकास नहीं हो पा रहा है, इसके लिए आवश्यकता है पुरुष वर्ग के सहारे एवं योगदान की।



कविताएं

दशम गुरुदेव

दशम गुरुदेव
ऊंचे झूलते निशान
केसरिया रंग
स्वतंत्रता की जंग
चढ़दी कला
जैसे दीप अंधियारे में जला।
दशम गुरुदेव
अमृत की दात, बहुमूल्य सौगात
ऊंच-नीच की खत्म हुई रात
समानता की रौशन हुई प्रभात।
दशम गुरुदेव
बलिदान करते सुजान,
आहुति दाते महामहान।
सिद्धांत पुरख प्रधान,
माता-पिता, साहिबज़ादे कुर्बान।
दशम गुरुदेव
जनसाधारण की कठिन जीवन-राह,
करने के लिए आसान।
सभी कुछ कर दिया न्यौछावर
ताकि किसी के जिबह न हों अरमान।
दशम गुरुदेव
कर्म-धारक, मर्मधारक
विचार-धारक, वचन-पालक
फलसफा सृजक, इतिहास सृजक
युग परिवर्तक।
गहन चिंतक करतारी।
युग-युगांतर विचारी।

मन-तन निर्मल

मानव जीवन बहुत कीमती,
इसे यूं ही नहीं बिताना।
हाथ पे हाथ धरे बैठे रहना,
यह तो हुआ इसे गंवाना।
ऐसे तन भी रोगी हो जाता,
मन को मिले न कोई ठिकाना।
सच में कहूं तो ऐसे जीना,
गुरुदेव से बेमुख हो जाना।
किरत-विरत की राह उन्होंने बताई,
हमें चाहिए पसीना जरूर बहाना।
तन हो जाए ऐसे निर्मल-निर्मल,
मन को मिल जाए ठौर ठिकाना।
मानव जीवन है बहुमूल्य,
इसी राह चाहिए इसे चलाना।

-डॉ सुरिंदरपाल सिंघ, पत्तण वाली सड़क, पुराना शाला, गुरदासपुर-१४३५२१, मो ९४१७१-७५८४६

गुरमति संगीत की उत्पत्ति और सिद्धांत

*-डॉ. प्रेम मच्छाल**

जब भारतवर्ष पर मुस्लिम आक्रमणकारियों ने हमले किए तब उत्तरी भारत का मार्गी संगीत उनके प्रभाव में आकर खोखला हो गया। मुस्लिम संस्कृति एवं संगीत के आदान-प्रदान से भारतीय संगीत पर शृंगारिकता एवं विलासिता ने अधिपत्य जमा लिया। जनसाधारण इसे घृणा की दृष्टि से देखने लगा। श्री गुरु नानक देव जी ने तत्कालीन संगीत की अवस्था को देखकर संगीत के तीनों स्वरूपों का अध्ययन किया और संगीत को एक नई दिशा प्रदान की। संगीत की यह प्रेरणा सार्थक, उपयोगी तथा समय की स्थिति के अनुसार एक नवीन मार्गदर्शन करने वाली सिद्ध हुई। श्री गुरु नानक देव जी की बाणी में शबद और संगीत का अद्वितीय तालमेल है। दोनों एक दूसरे के पूरक हैं। यद्यपि उन्होंने देशी (देसी) या लोक संगीत का उपयोग किया, परंतु उनका विशेष ध्यान मार्गी संगीत के निर्माण और उत्थान की ओर रहा। यही कारण है कि श्री गुरु ग्रंथ साहिब की सम्पूर्ण संरचना में संगीत की शास्त्रीय परंपरा ही अंग बनी हुई है।[१]

भारतीय संगीत क्षेत्र में गुरुओं की संगीतमयी बाणी (गुरमति संगीत परंपरा), जो कि श्री गुरु ग्रंथ साहिब में निबद्ध है, इसका अपना विशिष्ट योगदान है जो वास्तव में श्री गुरु नानक देव जी की प्रेरणा का ही फल है। श्री गुरु नानक देव जी ने ही गुरमति संगीत रूपी सरिता का प्रवाह किया। उन्होंने मार्गी संगीत के परिवर्तित रूप तथा शास्त्रीय संगीत और देशी संगीत के परिवर्तित रूप से लोक संगीत का समन्वय कर एक नवीन संगीत परंपरा स्थापित की।[२] इस पद्धति का स्वरूप मौलिक रागों पर आधारित था। भारतीय संगीत की मौलिक संगीत प्रणाली की नींव वास्तव में श्री गुरु नानक देव जी के द्वारा रखी गई थी। यही सिक्ख संगीत परंपरा कालक्रम से सिक्ख गुरुओं द्वारा गुरमति संगीत परंपरा के रूप में विकसित हुई। जब श्री गुरु नानक देव जी से इस संगीतमयी धारा का प्रवाह हुआ, तब भारतीय संगीत विभिन्न परिस्थितियों के अंतर्गत काफी विकसित हो चुका था। इस समय तक संगीत मार्गी, देशी धुनों या लोक संगीत इन तीन प्रमुख श्रेणियों में विभाजित हो चुका था।[३]

प्रथम गुरु जी ने संगीत क्षेत्र में जो एक नया बीजारोपण किया वही नवम् गुरुओं तक क्रमशः पूर्ण वृक्ष के रूप में फलित हुआ अर्थात् नवम् गुरुओं की परंपरा तक प्रत्येक गुरु ने इसी संगीत परंपरा को जीवित रखा।

सिक्ख धर्म में भारतीय संगीत के नवनिर्मित स्वरूप 'गुरमति संगीत' के अस्तित्व को प्रभाव में लाने तथा इसके प्रवाहन को जनसाधारण तक पहुंचाने की बात थी। इसके लिए कुछ ऐसे सिद्धांतों की आवश्यकता थी जो चिंतन के द्वारा इसकी विकास गति को बनाए रखने तथा इसका चौमुखी विकास करने में सहायक सिद्ध हो सकें।

सिक्ख अनुयायियों को जहां प्रत्येक क्षेत्र में अनेकानेक उद्देश्यों, आदेशों, उपदेशों और गुरबाणी का अनुसरण करना आवश्यक है, वहीं इन

*अस्सिटेंट प्रोफेसर, संगीत एवं नृत्य विभाग, कुरुक्षेत्र विश्वविद्यालय, कुरुक्षेत्र, मो. ९७२९५-६०००१

सिद्धांतों में पल्लवित गुरमति संगीत का दैनिक जीवन में उपयोग गुरु के आदेशानुसार करना भी आवश्यक है। यद्यपि भारतीय संगीत का मानव जीवन में कोई विशेष महत्त्व हो या न हो परंतु सिक्ख धर्म का प्रात: 'आसा की वार' के रूप में सप्त स्वरों से प्रारंभ होकर, सायं 'सोदरु' रूप में सप्त स्वरों की मध्यम किरणों से सुसज्जित होकर सवन क्रिया तक 'कीरतन सोहिला' का समापन भारतीय संगीत की अनुभूति को मन में संजोये रात्रि में आनंदित अवस्था में सहज ही प्राप्त हो जाता है। यह अवस्था गुरुओं द्वारा किए गए कठिन प्रयासों का ही फल है कि उनके अनुयायी उस सत्यचित्त आनंद रूपी प्रभु से किंचित बिछुड़ने की कल्पना तक नहीं कर सकते। कोई भी समाज, व्यक्ति, पशु-पक्षी और राज-काज तब तक सुरक्षित नहीं रह सकता जब तक कि उसके चारों तरफ रक्षा-कवच न हो, इसलिए सिक्ख धर्म में गुरमति संगीत के स्वतंत्र विचरण हेतु कुछ सिद्धांतों का निर्धारण किया गया, जिनसे गुरमति संगीत भारतीय संगीत के परिप्रेक्ष्य में अपने अस्तित्व को स्वतंत्र बनाए रखने में सक्षम हो सका तथा निरंतर प्रवाहन में ये सिद्धांत उसके मार्ग को प्रशस्त करने में सदैव स्मरणीय, विचारणीय एवं वंदनीय रहे।

१. श्री गुरु नानक देव जी द्वारा प्रचलित संगीत को गुरमति संगीत कहा जाता है, जिसकी प्रारंभता भाई मरदाना जी द्वारा रबाब बजाने तथा गुरु जी द्वारा कीर्तन करने से हुई। रबाब उस समय का श्रेष्ठ भगत्यात्मक रसानुभूति कराने में सक्षम वाद्य था। गुरु जी ने स्वयं रबाब के पूर्व रूप में कुछ परिवर्तन कर इसे भाई मरदाना जी को भेंट किया।[४]

२. राग को बाणी में सुनिश्चित करने के लिए राग का प्रयोग बाणी के ऊपर सर्वप्रथम किया गया। तत्कालीन प्रचलित रागों का उपयोग बाणी में किया गया तथा कुछ रागों का सृजन कर बाणी की रचना की गई, जैसे माझ, तुखारी तथा अन्य राग।

३. संगीत के तीन आवश्यक अंगों में से गुरमति संगीत में केवल गायन तथा वादन को ही प्रमुखता दी गई।

४. गुरमति संगीत में प्रत्येक प्रकार के गायन को कीर्तन के अंतर्गत रखा जाता है तथा इस कीर्तन में निर्धारित बाणी व रचनाओं का प्रस्तुतीकरण किया जाता है, जिसमें श्री गुरु ग्रंथ साहिब, दसम ग्रंथ की समस्त बाणी, भाई गुरदास जी तथा भाई नंद लाल जी की रचनाएं एवं समय-समय पर रचित मर्यादाओं का उपयोग सिक्ख रहित मर्यादानुसार प्रमाणित है।[५]

५. शबद का सम्पूर्ण रूप प्रस्तुत करना आवश्यक है।[६]

६. गुरमति संगीत का प्रचलन या प्रस्तुतीकरण जिस अवधि में होता है उन्हें चौंकी के नाम से जाना जाता है। इनकी संख्या प्रथम गुरु से पांचवे गुरु तक ५ से ७ तक रही, तत्पश्चात् १५ तक इनकी संख्या होती चली गई, जिसमें से ८ चौंकियां सिक्ख रागियों की तथा ७ चौंकियां रबाबियों की हो गईं। चौंकियों का आधार भारतीय राग-गायन, समय-सिद्धांत इतना प्रचलित नहीं था जिसका प्रभाव गुरमति संगीत पर स्पष्ट दृष्टिगोचर हो, परंतु चौंकियों का अस्तित्व में आना भारतीय संगीत में प्रचलित राग-गायन समय आधार का संकेत हो सकता है।

७. गुरमति संगीत का मंचन धर्मशाला, धर्म-सभा, धर्म-सम्मेलन या अन्य पावन अवसरों पर श्री गुरु ग्रंथ साहिब के सान्निध्य में किया जा सकता है, परंतु उपयुक्त स्थान गुरुद्वारा ही है।

८. गुरमति संगीत में अनेक गायन विधायों का प्रचलन उनके स्वरूप एवं रचना के आधार

(शेष पृष्ठ ३४ पर)

माता लडिक्की जी

*-बीबी मनमोहन कौर**

आरंभ से ही स्त्री-पुरुष समाज की उन्नति में बराबर हिस्सा डालते आए हैं तथा आज भी जब मानसिक गुणों की तुलना की जाती है तो स्त्रियां कभी भी पुरुषों से पीछे नहीं रहीं। यहां तक कि प्राचीन काल में भी और आज भी शिक्षा-विद्वता के मैदान में कई बार स्त्रियों ने पुरुषों को पीछे छोड़ा है। एक समय ऐसा आया जब शारीरिक बल की भिन्नता के कारण पुरुष ज्यादा ताकतवर हो गया तथा स्त्रियों को कमज़ोर समझकर उस पर कई प्रकार की पाबंदियां लगा दी गईं। इन पाबंदियों ने शारीरिक तौर पर चाहे स्त्रियों को कमज़ोर कर दिया परंतु वे मानसिक गुणों में पुरुषों से कहीं आगे निकल गईं। सहनशीलता, त्याग एवं कुर्बानी आदि के गुण पुरुषों ने स्त्रियों से सीखे हैं।

इतिहास पर दृष्टि डालें तो न केवल यह बात महसूस होती है बल्कि इस बात के पुख्ता सबूत भी मिलते हैं कि लगभग सभी धर्मों ने स्त्रियों को धार्मिक फर्ज़ भी अदा करने के बराबर अधिकार कभी नहीं दिए। यहां तक कि कई धर्मों में परमात्मा के घर धार्मिक स्थानों में जाना भी इसे मना था। कतेबी मत स्त्री जाति को धार्मिक चिन्हों से भी वंचित रखता था व ईसाई धर्म में इसको सामाजिक तथा धार्मिक अधिकारों से वंचित रखा जाता था। बुद्ध तथा हिंदू धर्म के रखवालों द्वारा तो इस पर भरपूर अत्याचार किया जाता रहा है। तुलसीदास तो इसकी तुलना जानवरों से भी करता है।

पंद्रहवीं शताब्दी इतिहास में बहुत ही खास स्थान रखती है, जब जुल्म हद से ज्यादा बढ़ गया तथा दुखी हृदयों की वेदना अंबर तक सुनी गयी तथा *"आपि नराइणु कला धारि जग महि परवरियउ"* के पवित्र वाक्य के अनुसार श्री गुरु नानक देव जी इस धरती पर प्रकट हुए। आप जी ने सदियों से कुचली जा रही स्त्री जाति को इलाही फरमान *". . भंडि होवै बंधानु"* द्वारा सत्कारा तथा कहा कि वह स्त्री कैसे बुरी हो सकती है जो राजाओं, महाराजाओं एवं विद्वानों को जन्म देती है? आप जी ने न केवल गृहस्थ जीवन में स्त्री को बराबर का दर्जा देकर अर्ध-शरीरी का मान बख़्शा बल्कि उसको सामाजिक तथा धार्मिक कामों में भी बराबरी के अधिकारों की बख़्शिश की। पश्चिमी देशों में स्त्री को पुरुष का Better half अर्थात् बढ़िया आधा हिस्सा कहा जाता है।

सिक्ख इतिहास के सुनहरी पन्नों पर दृष्टि डालें तो पता चलता है कि श्री गुरु नानक देव जी के इलाही प्रकाश को सबसे पहले जानने का सौभाग्य उनकी बहन बेबे नानकी जी को प्राप्त हुआ। इसी प्रकार माता अमरो जी द्वारा ही श्री गुरु अमरदास जी सिक्ख धर्म के साथ जुड़कर गुरगद्दी के मालिक बने। सिक्ख धर्म में मिले सम्मान के कारण स्त्री के गौरव में और बढ़ावा तब हुआ जब श्री गुरु गोबिंद सिंघ जी ने स्त्रियों को भी अमृत छकाकर 'सिंघणियां' बनाया। तब से लेकर आज तक ये सिंघणियां समाज में पुरुषों के मुकाबले किसी भी काम में पीछे नहीं रहीं। इन सिंघणियों ने दुनिया को हैरान करने वाले कारनामे कर दिखाए। माता गुजरी जी, माता साहिब देवां जी, बीबी हरशरन

** #८३६३, गली नं. २, गुरु रामदास नगर, सुलतानविंड रोड, श्री अमृतसर-१४३००१*

कौर जी, माता भागो जी जैसी सिक्ख माताओं की कुर्बानी, बहादुरी तथा धैर्य ने स्त्रियों की उच्चता को और भी चमका दिया।

अगर इतिहास को गहनता से पढ़ा जाए तो पता चलता है कि जब तक पुरुष ने अपने किसी संघर्ष में स्त्री को साथ नहीं लिया उसको सफलता नहीं मिल सकी, चाहे यह संघर्ष देश की आज़ादी का ही क्यों न हो। यह कहावत आज भी खूब प्रचलित है कि पुरुष की सफलता के पीछे किसी औरत का हाथ अवश्य होता है। जिन कौमों ने इस रहस्य को समझ लिया है वे तरक्की के रास्ते पर बहुत आगे निकल चुकी हैं। जो कौमें अभी भी पुराने एवं दकियानूस ख़्यालों में गलतान होकर स्त्री जाति को बराबरी का दर्जा देने में संकोच कर रही हैं वे पीछे रह गई हैं। सिक्ख पंथ में तो स्त्रियों ने अपनी सूझबूझ भरे कारनामों द्वारा इस बात को कई बार साबित किया है कि पंथ पर संकट आने के समय वे पुरुषों के समान पंथ की अगुआई भी कर सकती हैं।

श्री गुरु नानक साहिब के प्रकाश के साथ शुरू हुआ सिक्ख धर्म तरक्की करता हुआ दशम पातशाह श्री गुरु गोबिंद सिंघ जी के समय परिपूर्ण हुआ। इस समय के दरमियान जहां सिक्खों की संख्या में लगातार बढ़ोत्तरी होती रही वहीं सिक्खों के जीवन में उनके विरोधी दलों द्वारा उत्पन्न की गई मुश्किलों का ग्राफ भी बढ़ता चला गया। उस समय के सिक्ख ही थे जो उन मुश्किलों को दरकिनार करते हुए अपने गुरमति रहन-सहन, सभ्याचार को परिपक्व बनाते चले गए। अठारहवीं सदी के अंतिम दशकों तक हालात कुछ ऐसे बन गए कि सिक्ख संख्या में तो बढ़ गए किंतु गुरमति सभ्याचार से दूर होने लगे। वे मूर्तियां पूजने व आरतियां उतारने लगे। लगभग हर आम सिक्ख बिपरवादी कर्मकांडों में उलझकर रह गया। विधवा विवाह दोबारा बंद हो गए तथा स्त्रियों को पति की चिता के साथ ही सती करने की प्रथा दोबारा चल पड़ी। उस समय लोग कंजकों को तो पूजते, परंतु उन्हें जन्म देने से डरने लग गए। ऐसे समय में गिनती के कुछेक परिवार ऐसे थे जो सिक्ख तो थे और अपने दिन की शुरुआत भी नाम-सिमरन से करते थे, परंतु व्यवहारिक जीवन में सिक्खी-सिद्धांतों को छोड़कर कर्मकांडों को अपनाते थे। पोठोहार के नगर रोहतास में ऐसा एक परिवार भाई विसाखा सिंघ का था।

भाई विसाखा सिंघ के पिता ज्ञानी भगवान सिंघ दसवें पातशाह श्री गुरु गोबिंद सिंघ जी के दरबार में ख़जांची की सेवा निभाते रहे। भाई विसाखा सिंघ का एक ही पुत्र था-- मिलखा सिंघ। पुत्र के जन्म से काफी लंबे समय बाद बहुत अरदासें करने के उपरांत भाई विसाखा सिंघ के घर पुत्री का जन्म हुआ। इस लाड़ली बच्ची का नाम परिवार द्वारा 'लडिक्की' रखा गया। ज्ञानी भगवान सिंघ ने अपने घर में धर्मशाला की स्थापना की हुई थी। इस तरह घर में संगत के आने-जाने तथा गुरबाणी कथा-कीर्तन होने के कारण बचपन से ही माता लडिक्की का ध्यान अकाल पुरख की तरफ जुड़ गया। ज्ञानी भगवान सिंघ द्वारा माता लडिक्की की विद्या का प्रबंध किया गया, जिससे माता लडिक्की ने श्री गुरु ग्रंथ साहिब की संथा ली। वह तोता-रटनी पाठ करने की बजाय खोजी तबीयत की होने के कारण सदा ही ज्ञानी जी से कोई न कोई सवाल पूछती तथा अपनी चेतना को तृप्त करने की कोशिश करती, किंतु आम तौर पर ज्ञानी भगवान सिंघ उसको टाल देते। उसको यह एहसास भी करवाते कि स्त्रियों को घर संभालने की ही जानकारी होनी चाहिए तथा पुरुषों की बराबरी नहीं करनी चाहिए।

माता लडिक्की जब थोड़ा-सा बड़ी हुई तो

उसको गुरु-दरबार में जाकर बाहरी सेवाएं आदि करने से रोका जाने लगा कि वह घर बैठकर लंगर-पानी की सेवा किया करे, क्योंकि महिलाओं का बाहर अनजान पुरुषों में विचरना परिवार को पसंद नहीं था। इसके अलावा घर में तथा समाज में होती मूर्ति-पूजा आदि भी उसको बेचैन कर देती, क्योंकि माता लडिक्की ने गुरबाणी में पढ़ा था कि अकाल पुरख निरंकार है, उसका कोई भी आकार नहीं, इसलिए यह मूर्ति-पूजा नहीं होनी चाहिए। माता लडिक्की को अपने घर-परिवार तथा अपने अध्यापक द्वारा मिली शिक्षाओं में कथनी-करनी का बहुत बड़ा अंतर महसूस हुआ। इधर माता-पिता को भी माता लडिक्की का इस तरह हर बात पर विरोध करना अच्छा न लगता तथा वे माता लडिक्की के भविष्य के प्रति चिंता करने, उसके विवाह के बारे में सोचने लग गए।

एक दिन उन्होंने ज्ञानी भगवान सिंघ द्वारा सुझाए पेशावर के राम सहाय नाम के लड़के के साथ माता लडिक्की का रिश्ता पक्का कर दिया। जब माता लडिक्की को मालूम पड़ा कि उसके होने वाले पति को गुरबाणी तो क्या, पंजाबी भाषा भी पढ़नी नहीं आती तो वह बहुत निराश हुई। आखिर, उसने माता-पिता से मिन्नत की कि विवाह के समय उसको श्री गुरु ग्रंथ साहिब जी का स्वरूप दिया जाए ताकि वो अपने ससुराल जाकर गुरबाणी के साथ खुद जुड़ सके तथा अपने ससुराल वालों को भी गुरबाणी के लड़ लगा सके। उस समय श्री गुरु ग्रंथ साहिब के स्वरूप बहुत ही दुर्लभ थे, फिर भी भाई विसाखा सिंघ ने अपनी लाड़ली बेटी माता लडिक्की को श्री गुरु ग्रंथ साहिब के स्वरूप का तोहफा दिया। माता लडिक्की का भाई राम सहाय के साथ विवाह हो गया तथा वह अपने ससुराल-घर पेशावर आ गयी।

माता लडिक्की का ससुराल का घर बहुत बड़ा न होकर छोटा-सा दो-मंज़िला मकान था, जिसके निचले हिस्से में पशु बांधे जाते थे तथा ऊपरी मंज़िल पर परिवार की रिहायश थी। घर में नयी ब्याही जोड़ी की रिहायश के लिए भी अलग से प्रबंध नहीं था। श्री गुरु ग्रंथ साहिब के प्रकाश के लिए तो विशेष जगह चाहिए थी। परिवार ने श्री गुरु ग्रंथ साहिब का स्वरूप भाई जोगा सिंघ की धर्मशाला में सुशोभित करने का फैसला कर लिया। माता लडिक्की ने इस बात का डटकर विरोध किया कहा कि वह श्री गुरु ग्रंथ साहिब के बिना नहीं रह सकती, इसलिए जहां स्वरूप जाएगा, वह भी वहीं जाएगी। आखिर, दादा-ससुर देवी सहाय ने नयी ब्याही जोड़ी के लिए घर के नज़दीक ही नयी जगह लेकर उनके रहने का इंतज़ाम करा दिया। माता लडिक्की ने अपने घर को मन से सजाया, संवारा तथा इसमें श्री गुरु ग्रंथ साहिब के लिए साफ-सुथरा मर्यादा अनुसार स्थान बनाया। पति राम सहाय अपने माता-पिता तथा अन्य रिश्तेदारों के साथ अपनी समझ के अनुसार जुड़ा रहा, मगर उसने माता लडिक्की पर कभी कोई दबाव न डाला। माता लडिक्की के ससुराल-परिवार में उस समय के रिवाज के अनुसार हर तरह के धार्मिक-कर्म, मूर्ति-पूजा तथा हवन आदि होते, जिनमें माता लडिक्की शामिल भी होती, परंतु वह उनसे एक दूरी बनाकर रखती। उसने इन बातों को कभी भी मान्यता नहीं दी और न ही अपने घर कभी ऐसे कर्मकांड होने दिए। वो अपने दिन की शुरूआत श्री गुरु ग्रंथ साहिब के पाठ से करती, उपरांत घर के कार-विहार करती। मोहल्ले में से कुछ बच्चे तथा माताएं उसके पास पंजाबी पढ़ने के लिए आते। वह सभी से प्यार से बोलती तथा अपने विचारों पर दृढ़ रहती। माता लडिक्की अपनी हर दलील को गुरबाणी की किसी न किसी तुक के हवाले के साथ जोड़ती।

हर एक के काम आना माता लडिक्की ने अपने जीवन का अहम नियम बना लिया था।

माता लडिक्की के समय समाज में स्त्री तथा पुरुष को बराबर का दर्जा नहीं दिया जाता था। स्त्री को परदे में रहने का हुक्म था। ऐसे में वो धर्म का प्रचार खुलकर नहीं कर सकती थी। माता लडिक्की को उस समय तो कोई रास्ता नहीं दिखाई देता था, किंतु उसका अकाल पुरख की दयालुता पर दृढ़ विश्वास था। माता लडिक्की पर अकाल पुरख दयाल हुआ। विवाह के लगभग पांच वर्ष बाद माता लडिक्की को बिक्रमी संवत् १८४० (१७८३ ई) को एक पुत्र की दात की बख़्शिश हुई। लोगों के लिए यह बालक भाई राम सहाय के घर का चिराग था, किंतु माता लडिक्की के लिए तो यह बालक गुरमति का सूर्य था, जिसके द्वारा उसने अपनी गुरमति सोच को व्यवहारिक रूप में प्रत्यक्ष दिखाने की सभी मंशाएं पूरी करनी थीं। पंडित से बच्चे के नामकरण किए जाने की रस्म करने की चर्चा शुरू हुई तो माता लडिक्की ने दृढ़ता से फैसला लिया कि वह अपने पुत्र का नाम श्री गुरु ग्रंथ साहिब में से वाक लेकर ही रखेगी। माता लडिक्की ने छोटा-सा समारोह आयोजित कर खुद श्री गुरु ग्रंथ साहिब में से हुकमनामा लिया, जो था :

आसा महला ५ ॥
दिनु राति कमाइअड़ो सो आइओ माथै ॥
जिसु पासि लुकाइदड़ो सो वेखी साथै ॥
संगि देखै करणहारा काइ पापु कमाईऐ ॥
सुक्रितु कीजै नामु लीजै नरकि मूलि न जाईऐ ॥
आठ पहर हरि नामु सिमरहु चलै तेरै साथे ॥
भजु साधसंगति सदा नानक मिटहि दोख कमाते ॥१॥
(पन्ना ४६१)

उपरांत माता लडिक्की ने *'सतिगुरु होइ दइआलु त सरधा पूरीऐ'* शबद का गायन किया तथा बालक का नाम 'दइआल' रखा कि यह उस पर अकाल पुरख की दयालुता का ही परिणाम है। यही 'दइआल' धीरे-धीरे 'दयाल' बन गया। निरंकार के हुक्म अनुसार माता लडिक्की के पति राम सहाय जवानी में ही अकाल चलाना कर गए। माता जी ने अपने पुत्र को गुरमति की शिक्षा देने में कोई कमी न रहने दी। माता लडिक्की अपने पुत्र को हर रोज़ बड़ी श्रद्धा से भाई जोगा सिंघ के गुरुद्वारे लेकर जाती ताकि उसमें सेवा-भाव बना रहे।

अक्सर देखा जाता है कि माताएं अपने पुत्रों को बहुत ही लाड़-प्यार से पालती हैं। मां का जीवन ही ऐसा है कि वो खुद गीली जगह पर सो जाती है मगर अपने बच्चे को सूखी जगह पर ही लिटाती है। दूसरी तरफ ऐतिहासिक पुरुषों की माताएं उनका पालन-पोषण बहुत ही सुनियोजित तथा योजनाबद्ध ढंग से करती हैं, ताकि वे समाज के लिए कल्याणकारी पुरुष बन सकें। ऐसी माताओं का ज़िक्र इतिहास में सुनहरी अक्षरों में किया जाता है। ऐसी ही माताओं में माता लडिक्की का ज़िक्र आता है जिसने अपने पुत्र दयाल को कल्याणकारी पुरुष बनाने हेतु उसकी परिवरिश करने में कड़ी मेहनत की। माता लडिक्की खुद भी गुरबाणी-रंग में रंगी थी इसीलिए उसने अपने पुत्र को बचपन से ही गुरबाणी की घुट्टी दी ताकि वह भी गुरबाणी-रंग में रंग जाए। सुबह-शाम गुरबाणी के पाठ-कीर्तन के अलावा माता लडिक्की सारा दिन घर का काम-काज करते हुए पहले धीमी आवाज में गुरबाणी-पाठ करती रहती थी, मगर अब वो बाणी का उच्चारण थोड़ी ऊंची आवाज़ में करने लग गई ताकि उसके पुत्र दयाल के कानों में सदा ही गुरबाणी के बोल गूंजते रहें। पहले की तरह घर में फिर गुरबाणी की संथा लेने वाले बच्चे एवं महिलाएं आने लग गईं। जो भी दयाल को गोदी में उठाना चाहता माता लडिक्की उसको कहते कि वह दोनों हाथ

जोड़कर बालक को 'सति निरंकार' ही कहा करे। इसका परिणाम यह हुआ कि जैसे आम तौर पर बच्चे जब बोलना शुरू करते हैं सबसे पहला शब्द 'मां' बोलते हैं किंतु बालक दयाल ने तो सबसे पहला शब्द 'तत्त नंकार' बोला। इस तरह धीरे-धीरे वह भी अन्य लोगों के साथ 'सति निरंकार' का उच्चारण करने लग गया। जैसे-जैसे बालक दयाल बड़ा हुआ उसने अपनी माता के मुंह से बाणी गुनगुनाते रहने की आदत को भी पूरी तरह से अपना लिया था। आम बच्चे पांच वर्ष की उम्र में मदरस्से जाकर अपनी शिक्षा लेना आरंभ करते हैं, इस समय तक बालक दयाल पंजाबी लिखना सीख चुका था उसको जपु साहिब, अनंदु साहिब, रहरासि साहिब तथा सोहिला साहिब बाणियां भी कंठस्थ हो चुकी थीं। यहां तक कि वह संगत की अगुआई कर अरदास भी कर लेने के योग्य हो चुका था। अब उसको पशतो एवं फारसी सीखने के लिए मदरस्से भी भेजा जाने लगा।

माता लडिक्की बालक दयाल को हर रोज़ रात्रि को सोते समय सिक्ख इतिहास से सम्बंधित साखियां सुनाकर उसको भय, दुख आदि से मुक्त करने का यत्न करती रहती। धीरे-धीरे जब दयाल बड़ा होता गया तो ऐतिहासिक साखियां सुनाने के साथ-साथ माता जी उसके पूरे दिन का लेखा-जोखा करके उसको बताती कि उसने आज क्या कुछ गुरमति जीवन-जाच के अनुसार किया है। इसके बाद माता जी उसे अपने जीवन को ऊंचा बनाने के लिए उत्साहित करती। जो मौका माता लडिक्की को खुद बचपन में नहीं मिला था ऐसे मौके की पूरी तरह से संभाल करने के लिए वो अपने पुत्र दयाल को आगाह करती रहती। यहां तक कि वह उसको बहस करके अपने मन की जिज्ञासा को शांत करने का पूरा मौका भी देती। इस सब ने बालक दयाल के चरित्र-निर्माण में बड़ी भूमिका अदा की।

इस तरह माता लडिक्की ने बालक दयाल की कथनी-करनी की एकता को परिपक्व करने के लिए, गुरमति के अनुसार जीवन जीने के लिए, सदा निरंकार-- परमात्मा का धन्यवाद करते रहने के लिए उसे निरंकार-- परमात्मा के सदा हुक्म में ही राजी रहने के लिए, समाज में से अज्ञानता के अंधेरे को दूर करने के लिए खुद बाणी पढ़ने तथा दूसरों को पढ़ाने की प्रेरणा देने के लिए, किरत की महानता को दृढ़ कराने के साथ-साथ गुरबाणी के अनुसार कर्म करने की शिक्षा देने में अहम भूमिका निभाई।

अपने आखिरी वक्त में अंतिम सांस लेते समय माता लडिक्की ने अपने पुत्र दयाल को अपने पास बुलाया तथा कहा कि "जिसने आकार ग्रहण किया है उसने एक न एक दिन मिटना भी है। यही अकाल पुरख निरंकार का हुक्म है। सदा उस निरंकार के हुक्म में रहते हुए उसका गुरमति के अनुसार धन्यवाद ही करना।" उसने अपनी अंतिम शिक्षा देते हुए अपने पुत्र दयाल को कहा कि "मुझसे जो कुछ भी सीखा है उसको व्यवहारिक रूप में अपनाना तथा अपनी कथनी व करनी में कभी कोई फर्क न आने देना। मैंने तेरी परिवरिश पुत्र के रूप में नहीं बल्कि एक विचारधारा के रूप में की है। मैंने तेरे अंदर ज्ञान की ज्योति जलाकर विकारों वाला अंधेरा दूर किया है। इसी तरह तूने इस दुनिया के अंधेरे को दूर करना है और इस ज्योति को बुझने नहीं देना।" ऐसे वचन करते हुए माता लडिक्की १८०१ ई में परमात्मा में विलीन हो गयीं।

भाई दयाल जी अपनी माता के कहे वचनों पर अमल करते रहे। एक संयोगवश भाई दयाल जी को चेचक निकल आई। सगे-सम्बंधियों ने आपको देवी-पूजा करने के लिए विवश किया। माता लडिक्की द्वारा मिली गुरमति

की शिक्षा के अनुसार आपने इस कर्मकांड का विरोध किया और परमात्मा की रजा में रहते हुए इस कष्ट को सहा व तंदरुस्त हो गए। तब से आप जी ने देवी-पूजा के विरुद्ध ज़ोरदार लहर चलाई। उन दिनों चेत के माह में विवाह आदि शुभ कार्य नहीं किए जाते थे, किंतु भाई दयाल जी इस अंधविश्वास को तोड़ना चाहते थे। कोई भी पंडित यह रस्म निभाने के लिए तैयार न हुआ। भाई दयाल जी ने अपनी मां माता लडिक्की द्वारा मिले संस्कारों की प्रेरणा से ही अपना विवाह चेत के माह में 'अनंदु' बाणी के पाठ से 'अनंद कारज' की विधि से सम्पन्न करवाया। यह पहला विवाह था जो 'अनंद कारज' की विधि से हुआ था। यही भाई दयाल जी आगे चलकर निरंकारी संप्रदाय के प्रवर्त्तक 'बाबा दयाल जी' बने।

माता लडिक्की के जीवन पर विचार करने पर हम देखते हैं कि जहां मां अपने बच्चे को जिस तरह के सांचे में चाहे ढाल सकती है। मां के रोज़ाना के कार-व्यवहार में से ही बच्चे अपने संस्कार सीखते हैं, इसीलिए विद्वानों ने मां को बच्चे की पहली 'गुरु' होने का सम्मान प्रदान किया है।



गुरमति संगीत की उत्पत्ति और सिद्धांत

(पृष्ठ २८ का शेष)

पर सांगीतिक तत्वों को ध्यान में रखकर किया जाता है।

९. गुरमति संगीत में कुछ चौंकियां राग आधारित देखने को मिलती हैं, जैसे 'आसा की वार की चौंकी', 'बिलावल की चौंकी', 'सोदरु की चौंकी', 'अनंद की चौंकी'। उपरोक्त चौंकियों में विशेष रागों का गायन आवश्यक ही नहीं अपितु नियमानुसार कीर्तन का अटूट अंग भी है।

१०. 'आसा की वार' की चौंकी सिक्ख धर्म के अस्तित्व के साथ प्रारंभ हुई जिसका प्रचलन प्रातः काल निरंतर हो रहा है। इसी के साथ-साथ राग की वार-- *"वाहु वाहु सचे पातिसाह तू सची नाई ॥रहाउ॥"* प्रत्येक पउड़ी की अंतिम तुक का अत्यानुप्रास साकारवत होने पर 'रहाउ' आकारवत है। यह केवल गुरमति संगीत में ही है अन्य संगीत में नहीं। 'बसंत की वार' का गायन ऋतु अनुसार होना सिक्ख कीर्तन की परिपाटी रहा है, जो ऋतु आधारित होने के साथ-साथ विशेष रागों पर आधारित होने का भी प्रमाण है।[७]

११. गुरमति संगीत में कीर्तन करने वालों की संख्या निर्धारित है। इसमें एक प्रमुख, एक सहायक, एक तंत्री वादक, एक तबला वादक-- चार व्यक्तियों का समूह है। इन चारों के समूह को शायद इसलिए ही 'चौंकी' कहा गया है।

१२. सिक्ख गुरुओं ने भी कीर्तनकारों को *"भलो भलो रे कीरतनीआ"* कहकर संबोधित किया है। गुरबाणी-गायन करते समय किन-किन तत्वों का उपयोग करना है और कौन-कौन से वर्जित हैं, का उल्लेख भी श्री गुरु ग्रंथ साहिब में उपलब्ध है।

संदर्भ-सूची :

१. गुरमति संगीत पद्धति : एक अध्ययन, पृष्ठ १
२. ***Guru Nanak & His Times, Page 112***
३. गुरमति संगीत पद्धति : एक अध्ययन, पृष्ठ २
४-७ भाई वीर सिंघ, श्री गुरु ग्रंथ कोश, पृष्ठ ८८१, ९०१, ८८३



ऐतिहासिक गुरुद्वारा साहिब, बागौर, राजस्थान

-स. सुरजीत सिंघ*

राजस्थान के भीलवाड़ा ज़िला मुख्यालय से ३० किलोमीटर की दूरी पर स्थित कसबा बागौर में श्री गुरु गोबिंद सिंघ जी की आध्यात्मिक यात्रा को समर्पित यह ऐतिहासिक गुरुद्वारा जन-जन की आस्था का केंद्र बना हुआ है। श्री गुरु गोबिंद सिंघ जी राजस्थान होते हुए जब दक्षिण की ओर जा रहे थे तो सन् १७०७ के मार्च माह में बागौर के प्राचीन गढ़ में गुरु जी ने १७ दिन तक निरंतर अपना आध्यात्मिक ठहराव कर इस स्थान को पवित्र किया था :

सा धरती भई हरीआवली जिथै मेरा सतिगुरु बैठा आइ ॥
से जंत भए हरीआवले जिनी मेरा सतिगुरु देखिआ जाइ ॥ *(पन्ना ३१०)*

बागौर पहुंचने पर पहले तो गुरु जी ने शांत और एकांत स्थान खोजकर 'आमलियों के बाग' में डेरा लगाया, किंतु बागौर के राणा शिव प्रताप सिंघ को मालूम होने पर वे तुरंत गुरु जी के सम्मुख उपस्थित हुए। उन्होंने बागौर के किले में रुकने हेतु गुरु जी से आतिथ्य स्वीकार करने हेतु विनम्र निवेदन किया। राणा की आस्था को देखते हुए गुरु जी ने बागौर के किले में अपना ठहराव किया।

मुगल बादशाह औरंगज़ेब की मृत्यु का समाचार गुरु जी को बागौर पहुंचने पर ही मिला था। औरंगज़ेब की मृत्यु के तुरंत पश्चात ही उसके छोटे पुत्र ने अपने बड़े भाई का अधिकार छीनते हुए दिल्ली सिंहासन पर अपना कब्ज़ा जमा लिया। औरंगज़ेब का बड़ा पुत्र, जिसका नाम मुअज्जम था, गुरु जी के प्रति बहुत श्रद्धा रखता था, इसलिए वह गुरु जी की शरण में पहुंचकर निवेदन करने लगा कि मेरे अधिकार को छीनते हुए मेरे छोटे भाई ने जबरन राज्य-सिंहासन पर कब्जा कर लिया है। *"जो सरणि आवै तिसु कंठि लावै"* के अनुरूप श्री गुरु गोबिंद सिंघ जी ने मुअज्जम को आशीर्वाद देकर सहायतार्थ उसके साथ अपनी खालसा सेना भेज दी। युद्ध में मुअज्जम की जीत हुई और वह हिंदोस्तान का बादशाह बन गया। उसने अपना नाम मुअज्जम से बदलकर बहादुर शाह रख लिया। दिल्ली के राज्य-सिंहासन पर आसीन हो बहादुर शाह ने सहानुभूति दर्शाते हुए गुरु जी को आगरे के किले में विनम्रतापूर्वक आमंत्रित किया, जहां गुरु जी का बहुत आदर-सत्कार किया गया।

बागौर के इस ऐतिहासिक स्थान पर भव्य गुरुद्वारे का निर्माण हो रहा है। नानकपुरा में श्रद्धालुओं हेतु लंगर-व्यवस्था सदैव रहती है। कोटा के अगंमगढ़ गुरुद्वारा साहिब के जत्थेदार बाबा लक्खा सिंघ एवं बाबा बलविंदर सिंघ के सान्निध्य में यहां सेवा चल रही है।



*५७-बी, न्यू कालोनी गुमानपुरा कोटा (राज.)-३२४००७; मो. ९४१३६-५१९१७

कविताएं

भाई मनी सिंघ जी शहीद

*-श्री संजय बाजपेयी रोहितास**

सिक्ख पंथ सुगंध-सुबास।
यह बलिदानों का इतिहास।
सिर कटकर भी मुस्काया।
जीवन देकर अमरत्व पाया।
कहते हैं इतिहास के पन्ने।
भाई मनी सिंघ देखा मैंने।
वह गुरु-चरण में अर्पित सेवक।
भक्ति-भाव मनभावन महक।
वह कविहृदय, वीर, गुरु सैनिक।
श्री गुरबाणी मनन मन दैनिक।
मन में अनंत प्रेम भावनायें।
लिपिबद्ध की अनेक रचनायें।
भाई मनी सिंघ की कलम चली।
भगत रतनावली, गिआन रतनावली।
वे अति महत्त्वपूर्ण रचनाएं।
सिक्ख पंथ की सच्ची सूचनाएं।
वे लिखारी श्री गुरु ग्रंथ के।
सच्चे सेवक सिक्ख पंथ के।
उनके पूर्वज थे काशी के।
वे भूखे गुरु-प्रेम-राशि के।
साढ़े पांच वर्ष की उम्र।
गुरु-परिवार सेवा सत्कर्म।
परिजन संग अनंदपुर साहिब में।
रहता ध्यान सदा ही रब में।
मन ही मन में सोच-विचार।
नवम् पातशाह परवरदिगार।
जिनकी बात हृदय को छूती।
अगले पल वह बनती मोती।
पुण्य के धन से मालामाल।
भाई मनी सिंघ हुआ निहाल।
अनंदपुर साहिब में कुछ दिन प्रवास।
विदा समय रुकने की आस।
श्री गुरु तेग बहादर साहिब।
मन की बात समझ गये सब।
श्रद्धा ने मन मोह लिया।
उनको अपने पास रोक लिया।
भाई मनी सिंघ साकार स्वप्न।
गुरु गोबिंद सिंघ संग बचपन।
खेल-खेल में बचपन बीता।
संग खेलता दशमेश पिता।
गुरु परिवार की सेवा करते।
जीवन अपना ऊंचा करते।
दशमेश पिता का आया वक्त।
वह तो समय बहुत था सख़्त।
ईसवी सन् सत्रह सौ चार।
भाई जी बने गुरु के वफ़ादार।
मुगलों संग हुआ युद्ध घमासान।
जंग में लगा सभी का ध्यान।
दशमेश पिता का आदेश मिला,
खाली करो अनंदपुर का किला।
जैकारों की धूम मचाते।
मुगलों के छक्के छुड़ाते।
गुरु-महिलों की बन तसल्ली।
भाई मनी सिंघ पहुंचे दिल्ली।
गुरु-महिलों को सुरक्षित पहुंचाया।
भाई जी ने आशीर्वाद पाया।
समय पाकर तलवंडी साबो आए।
माता सुंदरी से आदेश पाए।
ठहरे वे अमृतसर आकर।
प्रसन्न हुए सेवा पाकर।

***C/o** जनाब हुसैनी मियां, स्टेशन रोड, कछौना (बालामऊ), ज़िला हरदोई (उ प्र)-२४११२६; मो ९७२१५-२०४५६*

बने हरिमंदर साहिब के ग्रंथी।
भाई जी के मन में श्रद्धा धन्य थी।
सब मन धर्म-अलख जगाया।
सबको प्यार से गले लगाया।
ईसवी सन् सत्रह सौ छब्बीस।
जकरिया ख़ान कायर-खबीस।
बना गवर्नर वह पंजाब का।
वह जल्लाद खून के ख्वाब का।
सिक्ख लोग को देख चौंकता।
दर्शनार्थियों को वह रोकता।
कोई कत्ल तो किसी को जेल।
संगत का कैसे हो मेल?
आया बंदी छोड़ का मेला।
मुगलों का मन दिख रहा मैला।
सिक्ख बंधे गुरु-घर आकर्षण।
हरिमंदर के करने को दर्शन।
लेकिन मुगल थे राह रोकते।
बेढंगी कुछ बात भौंकते।
करते वे निहत्थों पर वार।
लहू से रंग जाती तलवार।
रक्त-पात का हो अवकाश।
यही था भाई जी का प्रयास।
जकरिया ख़ान से की अपील।
सैन्य कार्यवाही में करें ढील।
हो जाने दो बंदी छोड़ का मेला।
बाद में संगत देगी थैला।
पांच हज़ार रुपये हों जिसमें।
पूरी होने दो सारी रसमें।
जकरिया ख़ान ने दे दी सहमति।
मेला करने की हुई सम्मति।
लेकिन ख़ान जकरिया मुकरा।
भरी नीचता लबालब टोकरा।
उसने फौज़ को दे दिया हुक्म।
दर्शनार्थियों को कर दो खत्म।
भाई मनी सिंघ सब कुछ समझे।
गांव-गांव में आदमी भेजे।

सिक्ख संगत को भेजी सूचना।
"मुगल कुटिलता से हमें बचना।
बिछा मुगल फौज का जाल।
मेला न होगा इस साल।"
जकरिये शर्त का मांगा पैसा।
"मेला नहीं तो कैसा पैसा?"
किंतु जकरिया ख़ान न माना।
उसे चाहिए था कोई बहाना।
मुगल दुष्टता पर सब दंग।
गिरफ्तार हुए भाई मनी सिंघ।
काजी करे न्याय का ढोंग।
दले हिंद सीने पर मूंग।
वह बोला, "इस्लाम स्वीकारो!
इसलाम की जय पुकारो!
वरन् मौत की तुमको सज़ा।"
किंतु भाई जी मन सच गूंजा।
"सत्य हेतु कुर्बानी देंगे।
धर्म की होने न हानि देंगे।
यदि सिद्धांतविहीन हो जीवन।
तब हर पल हो दोजख गमन।
सबसे ऊंचा पंथ खालसा।
इससे अधिक नहीं कोई लालसा।"
काजी यह सुनकर तिलमिलाया।
तुरंत एक जल्लाद बुलाया।
वह आया था कुल्हरा पकड़े।
भाई मनी सिंघ को बैठे थे जकड़े।
गुरु की शिक्षा के पाबंद।
जल्लाद काट रहा था बंद-बंद।
कट गई उंगली, बाद हथेली।
पावन रक्त-धार बह निकली।
जिसके हर अंश में गुरबाणी।
मुगल की मटियामेट कहानी।
भाई मनी सिंघ तुम हो अच्छे!
तुम गुरुधाम पुजारी सच्चे!
वह जल्लाद काटता हाथ।
धर्म का नहीं झुक रहा माथ।

भाई मनी सिंघ की कटती बांह।
न होंठ पर सिसकी, न आह।
गर्दन पर जब हुआ प्रहार।
रक्त की धारा ने पहनाया हार।
भाई मनी सिंघ हो गए शहीद।
कौम को मिल गए कई मुरीद।



दुख में छिपा हुआ कल्याण

भगवन्! तुम हो करुणासागर, मंगलमय हैं सभी विधान।
निश्चित ही मेरे दुखों में, छिपा हुआ मेरा कल्याण।
कड़वी औषधि आखिर में जब, करती उत्तम लाभ प्रदान।
तब उससे घबराना कैसा, वह तो अपनी मित्र महान्।
दुख-ताप में जला-जला तुम, भस्म कर रहे पाप तमाम।
पाप-भोग की पीड़ा से, नूतन पापों पर कसे लगाम।
इसी भांति तुम शुद्ध कर रहे, कितना ही चीखे इंसान।
रगड़-रगड़ नहलाती माता, बाल-रुदन पर न दे ध्यान।
पीड़ा ही तो नम्र बनाती, पर-पीड़ा का होता बोध।
अहंकार का पर्दा फटता, निज-स्वरूप का होता शोध।
दुख का धक्का लगे बिना, छूटे न जग का माया-रोग।
दुख में होता ज्ञान-बोध कि केवल तुमसे चिर-संयोग।
दुखी हृदय ही कर पाता है, तुमको सच्चे मन से याद।
दुखी लोग ही अक्सर पाते, प्रभु तुम्हारा कृपा-प्रसाद।
वैसे तो जैसा तुम चाहो, उसमें ही मेरा कल्याण।
फिर भी अपने मन-भावों को, रखता मैं बालक नादान।
जो भी दुख मैं पाऊं उसमें, दिखे तुम्हारी ही मुस्कान।
चाहे कितना तड़पूं-कसकूं, रहे तुम्हारा ही नित् ध्यान।
चरणों में अब ले लो भगवन्! कर दो सबका ही कल्याण।
एकमात्र तुम ही हो अपने, सच्चे प्रेमी श्री भगवान्!



-श्री प्रशांत अग्रवाल, ४०, बजरिया मोतीलाल, बरेली-२४३००३ (उ. प्र.), मो : ०९४११६०७६७२

गुरुओं की बाणी

परम पूज्य गुरुओं की बाणी, गूंज उठे जब मन में।
पुण्य समाये तब अंतस में, पाप रहे न मन में।
सबका मालिक वही जगत में, जिसने जगत बनाया।
हर मन-मानस में वो बैठा, उसी से बनी हर काया।
उसे आराधो, जपो उसी को, बसा है जो कण-कण में।
परम पूज्य गुरुओं की बाणी . . .
मानव हो मानवता सीखो, मन से मैल निकालो।
सभी बुराई छोड़छाड़ कर, मन निर्मल कर डालो।
करना है तो करो भलाई, इस प्यारे जीवन में।
परम पूज्य गुरुओं की बाणी . . .
राह दिखाई जो गुरुओं ने, उसी राह पर चलना।
कठिनाई कितनी भी आये, मन विचलित न करना।
रखना सदा बसा के इसको, मन में और वचन में।
परम पूज्य गुरुओं की बाणी . . .



-श्री राधेश्याम सेन 'भुजंग', शिव मंदिर के पास, मंगली पेट, सिवनी-४७०६६१ (म. प्र.)

गुरबाणी चिंतनधारा : ६७

सुखमनी साहिब : विचार व्याख्या

*-डॉ. मनजीत कौर**

दसवीं असटपदी

सलोकु ॥ उसतति करहि अनेक जन अंतु न पारावार ॥
नानक रचना प्रभि रची बहु बिधि अनिक प्रकार ॥१॥

दसवीं असटपदी के उपरोक्त पावन सलोक में गुरु पंचम पातशाह फरमान करते हैं कि अनेकों व्यक्ति उस अकाल पुरख की स्तुति करते हैं लेकिन उसके गुणों का कोई पारावार (आदि-अंत) नहीं है। श्री गुरु अरजन देव जी पावन फरमान करते हैं कि यह सारी सृष्टि उस परमेश्वर ने कई रंगों एवं ढंगों द्वारा बनाई है अर्थात् इस सृष्टि की सृजना प्रभु ने अनेक विधियों द्वारा की है।

असटपदी ॥ कई कोटि होए पूजारी ॥
कई कोटि आचार बिउहारी ॥
कई कोटि भए तीरथ वासी ॥
कई कोटि बन भ्रमहि उदासी ॥
कई कोटि बेद के स्रोते ॥
कई कोटि तपीसुर होते ॥
कई कोटि आतम धिआनु धारहि ॥
कई कोटि कबि काबि बीचारहि ॥
कई कोटि नवतन नाम धिआवहि ॥
नानक करते का अंतु न पावहि ॥१॥

(पन्ना २७५)

दसवीं असटपदी की पहली पउड़ी में गुरु पंचम पातशाह जी ने उस अनंत प्रभु की बेअंत रचना का उल्लेख किया है कि करोड़ों ही जीव पुजारी, तीर्थवासी, वेद-ग्रंथों के श्रोता, जपी, तपी, संयमी, गायक एवं करोड़ों ही उस बेअंत परमेश्वर के नित्य नवीन नामों का सिमरन करने वाले हैं अर्थात् उसकी रचना विविध प्रकार की है।

गुरु पातशाह फरमान करते हैं कि उस अकाल पुरख की रचना में अर्थात् उसकी बनाई हुई दुनिया में करोड़ों ही लोग प्रभु की पूजा करने वाले पुजारी हैं। कई करोड़ लोग अनेक कर्मकांडों अर्थात् विविध धार्मिक रीति-रस्मों के कर्ता हैं। करोड़ों लोग तीर्थों पर जाकर निवास करते हैं। कई करोड़ लोग संसार से उपराम होकर जंगलों में भ्रमण करते फिरते हैं। करोड़ों ही लोग वेदों को सुनने वाले हैं। अनेक लोग तपस्या में लीन हैं (एकाग्रचित्त होकर तप साध रहे हैं)। कई करोड़ अंतर्मुखी होकर प्रभु के ध्यान में मग्न हैं। करोड़ों ही जीव कवियों की रची रचनाओं के मंथन में लगे हैं। अनगिनत लोग (नित्य) प्रभु के नये-नये नामों द्वारा उसका सिमरन कर रहे हैं। पंचम पातशाह श्री गुरु अरजन देव जी असटपदी की अंतिम पंक्ति में स्पष्ट करते हैं कि उपरोक्त समस्त क्रियाएं करने के बावजूद भी कोई प्रभु का अंत नहीं पा सकता।

वस्तुत: उस अनंत, बेअंत, असीम परमेश्वर को कोई पूरी तरह से नहीं जान सकता। कारण भी स्पष्ट है। मनुष्य की बुद्धि एक सीमा में बद्ध है अर्थात् सीमित है, लेकिन वह परमेश्वर

***२/१०४, जवाहर नगर, जयपुर-३०२००४, मो: ९९२९७-६२५२३*

असीमित है, उसके गुणों व अनंतता को नापने का कोई पैमाना नहीं बना। महान विद्वान प्रो. साहिब सिंघ श्री गुरु ग्रंथ साहिब जी की व्याख्या करते हुए एक जगह स्पष्ट करते हैं कि उस परमेश्वर का अंत पाना कदाचित भी मनुष्य के जीवन का उद्देश्य नहीं है अपितु उस प्रभु का गुणगान करते हुए, उसके गुणों को आत्मसात करके उसी में समाहित हो जाना ही मनुष्य के जीवन का प्रमुख उद्देश्य है।

कई कोटि भए अभिमानी ॥
कई कोटि अंध अगिआनी ॥
कई कोटि किरपन कठोर ॥
कई कोटि अभिग आतम निकोर ॥
कई कोटि पर दरब कउ हिरहि ॥
कई कोटि पर दूखना करहि ॥
कई कोटि माइआ स्रम माहि ॥
कई कोटि परदेस भ्रमाहि ॥
जितु जितु लावहु तितु तितु लगना ॥
नानक करते की जानै करता रचना ॥२॥

दसवीं असटपदी की दूसरी पउड़ी में पंचम पातशाह उस परमेश्वर की अनंत रचना में विविध प्रवृत्तियों के करोड़ों जीवों का ज़िक्र करते हुए पावन फरमान करते हैं कि करोड़ों ही जीव अहंकारी हैं, अभिमान से भरे हुए हैं। करोड़ों ही घोर अज्ञानी हैं। करोड़ों ही पाषाण हृदय अर्थात् कठोरचित्त हैं। करोड़ों ही पहले दर्जे के कंजूस हैं। करोड़ों ही कभी न पसीजने वाले कोरी प्रवृत्ति वाले हैं जो दूसरों के दुख में न तो कभी दुखी होते हैं और न ही उनके कठोर हृदय में किसी तरह का करुणा-भाव या सहानुभूति पैदा होती है। करोड़ों ही दूसरों के धन-पदार्थ चुराते हैं तथा करोड़ों ही दूसरों की निंदा करने जैसे निकृष्ट कर्मों में लगे हुए हैं। करोड़ों ही मनुष्य धनोपार्जन (उपजीविका) हेतु मेहनत में जुटे पड़े हैं अर्थात् जी भरकर परिश्रम कर रहे हैं। करोड़ों ही मनुष्य परदेसों में भटक रहे हैं। असल में वह परवरदिगार जिस किसी को जिस भी कार्य में लगाता है वह जीव बेचारा उसी में लग जाता है। गुरु पातशाह अंतिम पंक्ति में स्पष्ट करते हैं कि वह कर्ता पुरख अपनी रचना का भेद स्वयं ही जानता है और कोई इस भेद को नहीं जान सकता।

उपरोक्त पउड़ी में गुरु पातशाह ने स्पष्ट किया है कि समस्त जीवों की बागडोर उसी प्रभु के हाथ में है। उसके हुक्म में ही सारी प्रकृति कार्यरत है। एक मनुष्य ही है जो उसके हुक्म की अवहेलना करने की गुसताखी करता है और फिर स्वयं के किए पर पछताता है। वह परमेश्वर अनंत है और उसका अंत पाया भी नहीं जा सकता। जपु जी साहिब में श्री गुरु नानक देव जी ने इसी तथ्य को समझते हुए कलयुगी जीवों का मार्गदर्शन किया है कि उस परमेश्वर का अंत पाने हेतु कितने ही जीव तड़प रहे हैं, व्याकुल हैं, लेकिन उसका अंत कोई नहीं पा सकता :

--अंत कारणि केते बिललाहि ॥
ता के अंत न पाए जाहि ॥
एहु अंतु न जाणै कोइ ॥
बहुता कहीऐ बहुता होइ ॥ *(पन्ना ५)*
--कई कोटि सिध जती जोगी ॥
कई कोटि राजे रस भोगी ॥
कई कोटि पंखी सरप उपाए ॥
कई कोटि पाथर बिरख निपजाए ॥
कई कोटि पवण पाणी बैसंतर ॥
कई कोटि देस भू मंडल ॥
कई कोटि ससीअर सूर नख्यत्र ॥
कई कोटि देव दानव इंद्र सिरि छत्र ॥

सगल समग्री अपनै सूति धारै ॥
नानक जिसु जिसु भावै तिसु तिसु निसतारै ॥३॥

दसवीं असटपदी की तीसरी पउड़ी में भी गुरु पंचम पातशाह ने उस परवरदिगार की रचना को अनंत और नाना प्रकार की बताते हुए यह स्पष्ट किया है कि उस प्रभु ने इस सारी रचना को अपने हुक्म रूपी धागे में बांध रखा है। जिस पर वह प्रसन्न होता है (कर्मों के अनुसार) उसी को मुक्त कर देता है।

गुरुदेव पावन फरमान करते हैं कि (उसकी रचना में) करोड़ों ही सिद्ध पुरुष, यती, जती तथा योगी हैं अर्थात् योग साधना में सिद्धि प्राप्त कर चुके योगी, कामवासना रूपी विकार पर विजय प्राप्त कर चुके यती तथा इंद्रियों को वश में कर लेने वाले जती करोड़ों की संख्या में इस जगत में विद्यमान हैं और करोड़ों ही रस भोगने वाले राजा हैं अर्थात् इंद्रिय-भोगों में लिप्त हैं। करोड़ों ही पक्षी तथा सांप भी उस प्रभु ने ही पैदा किए हैं अर्थात् अनेकों ही नभचर (आसमान में विचरण करने वाले परिंदे) और करोड़ों ही धरती पर रेंगने वाले सर्पों की रचना की है। उस परमेश्वर ने करोड़ों ही पत्थरों और वृक्षों को उत्पन्न किया है। करोड़ों ही वायु, पानी तथा अग्नियां हैं अर्थात् हवा, जल तथा आग अनंत रूपों में प्रकट हो रही है। अनंत प्रकार के देश, धरतियां तथा मंडल हैं। कई करोड़ चंद्रमा, सूर्य तथा नक्षत्र हैं अर्थात् यह सृष्टि अनेक चांद, सूरज तथा ग्रह-नक्षत्रों से भरी पड़ी है। करोड़ों ही देवता तथा राक्षस हैं। तेरी रची सृष्टि में अनेकों ही देवाधिराज (देवताओं के मुखिया) इंद्र हैं जिनके सिर पर छत्र सुशोभित है। इस नाना प्रकार के रूपों वाली रचना में प्रभु ने समस्त जीवों एवं पदार्थों को अपने हुक्म रूपी धागे में पिरो रखा है। गुरु पातशाह अंतिम पंक्ति में स्पष्ट करते हैं कि उस (सर्वशक्तिमान) परमेश्वर को जो-जो अच्छा लगता है और जो उसके दिल को भा जाता है उसे प्रभु संसार रूपी भवसागर से पार उतार देता है।

वस्तुत: अनेक किस्मों का कौतूहल पैदा करने वाली इस रचना में सर्वत्र परमेश्वर का ही हुक्म चल रहा है। उसके आदेश की अवहेलना करने की किसी की मजाल नहीं। जीव विकारों की दलदल में जीवन बर्बाद भी कर जाते हैं और उसकी रहमत से इनसे मुक्त होकर, उसी (परमात्मा) में लीन होकर उसी प्रभु का रूप हो जाते हैं। सम्पूर्ण रचना उसी परमेश्वर की हुक्म रूपी डोर में बंधी है।

इसी तथ्य को जपु जी साहिब की १७वीं पउड़ी में श्री गुरु नानक देव जी ने परमेश्वर की अनंत रूपों की रचना को असंख शब्दों से रूपायित किया है जो उपरोक्त पउड़ी के भाव को ही स्पष्ट करती है, यथा :

असंख जप असंख भाउ ॥
असंख पूजा असंख तप ताउ ॥ . . .
असंख नाव असंख थाव ॥
अगंम अगंम असंख लोअ ॥ . . .
जो तुधु भावै साई भली कार ॥
तू सदा सलामति निरंकार ॥ (पन्ना ३-४)

समस्त रचना उसकी रज़ा पर निर्भर है। इस भाव को पंचम पातशाह ने चौथी असटपदी में भी प्रकट किया है, यथा :

--सगल समग्री तुमरै सूत्रि धारी ॥
तुम ते होइ सु आगिआकारी ॥ (पन्ना २६८)
--कई कोटि राजस तामस सातक ॥
कई कोटि बेद पुरान सिम्रिति अरु सासत ॥
कई कोटि कीए रतन समुद ॥
कई कोटि नाना प्रकार जंत ॥
कई कोटि कीए चिर जीवे ॥

कई कोटि गिरी मेर सुवरन थीवे ॥
कई कोटि जख्य किंनर पिसाच ॥
कई कोटि भूत प्रेत सूकर म्रिगाच ॥
सभ ते नेरै सभहू ते दूरि ॥
नानक आपि अलिपतु रहिआ भरपूरि ॥४॥

प्रस्तुत पउड़ी में गुरु पातशाह ने जीवों को त्रै-गुणी माया (रजो, तमो तथा सतो गुण) के प्रभाव में दर्शाया है कि किस प्रकार दुनिया का प्रत्येक प्राणी किसी न किसी रूप से माया की गिरफ़्त में है। इसके अतिरिक्त भी जीव एवं जीव की अवस्थाओं का सूक्ष्म रूप प्रस्तुत किया गया है।

गुरु पातशाह पावन फरमान करते हैं कि करोड़ों ही जीव माया के तीन रूपों के प्रभावाधीन हैं। इस तरह संसार में करोड़ों ही रजोगुणी, तमोगुणी तथा सतोगुणी व्यक्ति हैं। करोड़ों ही वेद, पुराण, स्मृतियों तथा शास्त्रों आदि (धर्म-ग्रंथों) के पढ़ने वाले हैं।

(उस परमेश्वर ने) सागरों में करोड़ों ही रत्न पैदा कर दिए और अनेकों किस्मों के जीव-जंतु पैदा कर दिये अर्थात् करोड़ों प्रकार के जीव-जंतुओं का निर्माण कर दिया।

करोड़ों जीवों को दीर्घायु कर दिया अर्थात् अनेकों जीवों की लंबी आयु बख़्श दी। करोड़ों ही पर्वत स्वर्ण निर्मित हैं अर्थात् उस प्रभु ने करोड़ों ही साधारण पर्वतों सहित करोड़ों ही सोने के सुमेर पर्वत बना दिए। (उसकी इस विलक्षण रचना में) करोड़ों ही यक्ष, किंनर तथा पिशाच हैं तथा करोड़ों ही भूत, प्रेत, सूअर तथा मृग पक्षी अर्थात् हिरण को खाने वाले शेर हैं। वह परमात्मा सबसे निकट तथा सबसे दूर भी है। (निकट सर्वव्यापकता के कारण तथा दूर अदृश्य रूप, रेख, रंग आदि से रहित होने के कारण) अंतिम पंक्ति में पंचम पातशाह फरमान करते हैं कि यह प्रभु निर्लेप भी है तथा सर्वत्र मौजूद भी है अर्थात् वह जर्रे-जर्रे में विद्यमान होते हुए भी सबमें निर्लिप्त भाव से विद्यमान है।

उपरोक्त पउड़ी में गुरुदेव ने पहली ही पंक्ति में माया के तीनों रूपों का ज़िक्र किया है। गुरबाणी में अनेक बार इस भाव के दर्शन होते हैं। अन्य धर्म-ग्रंथों में भी माया के तीनों रूपों की भयानकता का वर्णन किया गया है। वस्तुतः सारा संसार ही इसी के मोह पाश में बंधा पाप-कर्म में लिप्त होकर अपना बेशकीमती जीवन बर्बाद कर रहा है। विद्वानों ने इसके तीनों गुणों का विस्तार से वर्णन किया है। गुरमति आशयानुसार इसको समझने का यत्न किया जा सकता है :

"रजोगुण : अहंकार, इच्छा, तीव्र कामना आदि को;
तमोगुण : आलस्य, क्रोध, ईर्ष्या आदि को ;
सतोगुण : शांति, ज्ञान आदि को जन्म देता है।

बेशक इसका सतोगुण अन्य दोनों रूपों से श्रेष्ठ है लेकिन यह गुण साधारण जीव ही क्या बड़े-बड़ों को भी अहंकारी बना देता है। इसके फलस्वरूप उनकी भी आध्यात्मिक पूंजी विनिष्ठ हो जाती है, जैसा कि पावन बाणी में समझाया गया है :

त्रिहु गुण महि वरतै संसारा ॥
नरक सुरग फिरि फिरि अउतारा ॥
कहु नानक जो लाइआ नाम ॥
सफल जनमु ता का परवान ॥ (पन्ना ३८९)

पंचम पातशाह ने इस शबद में भी इसी भाव को दृढ़ करवाया है कि यह सारा संसार माया के तीनों गुणों के अंतर्गत कार्य-व्यवहार करता है और बारंबार नरक-स्वर्ग में आना-जाना लगा रहता है। गुरुदेव के चिंतनानुसार जो प्रभु-नाम में लीन हो गया, समझो, उसका

(शेष पृष्ठ ५३ पर)

गुर सिखी बारीक है . . . २२

-डॉ. सत्येंद्रपाल सिंघ*

परमात्मा के प्रेम में भीगा हुआ गुरसिक्ख जब परमात्मा का साथ पा लेता है तो उसका वो सारा कुछ (सांसारिक) छूट जाता है जिस पर विश्वास करने की भूल करके वह अपने जीवन को आगे बढ़ा रहा था। जब सांसारिक चीजों को गुरसिक्ख छोड़ता है वह एक महान तप और त्याग की तरह है। जब वह परमात्मा को प्राप्त करता है तो उसके आनंद से वो अभिभूत तो होता ही है किंतु साथ ही विनम्रता और सहजता के जिस शिखर पर वह पहुंच जाता है, आभास ही नहीं होता कि वह आनंदित है अर्थात् वो समभाव में विचरण करने लगता है। परमात्मा का प्रेम गुरसिक्ख के जीवन को सिरे से बदल देता है। भाई गुरदास जी गुरसिक्ख के जीवन में आये बदलावों का वर्णन बड़े ही सुंदर ढंग से करते हैं :

गुरमुखि आपु गवाइ न आपु गणाइआ।
दूजा भाउ मिटाइ इकु धिआइआ।
गुर परमेसरु जाणि सबदु कमाइआ।
साधसंगति चलि जाइ सीसु निवाइआ।
गुरमुखि कार कमाइ सुख फलु पाइआ।
पिरम पिआला पाइ अजरु जराइआ।
(वार २०:४)

भाई गुरदास जी ने कहा है कि गुरु का सिक्ख अपने आपको मिटा देता है और इस महान उपलब्धि पर कभी गर्व नहीं करता। इसी कारण उसकी सारी दुविधाएं मिट जाती हैं। वह परमात्मा के अनुकूल हो जाता है। वह सर्वत्र परमात्मा को प्रत्यक्ष देखने लगता है और परमात्मा पर विश्वास करते हुए सद्आचरण करने लगता है। ऐसा करते हुए वह अपना जीवन-लक्ष्य पा लेता है। परमात्मा अपने प्रेम की असीम कृपा उस पर करता है, फिर भी गुरसिक्ख उस कृपा को कहीं प्रकट नहीं करता। जो अवस्था गुरसिक्ख को अपना आप मिटा देने से प्राप्त होती है दरअसल उसे पाना ही जीवन का सच्चा ध्येय है और अपने आप को मिटाना ही सबसे कठिन शर्त है। जिसे हम अपना समझते हैं वह विकारों के अतिरिक्त और कुछ नहीं है :

मनु सबदि मरै परतीति होइ हउमै तजे विकार ॥
जन नानक करमी पाईअनि हरि नामा भगति भंडार ॥ (पन्ना १६२)

गुरसिक्ख जब अहम् आदि विकारों को छोड़ता है तभी उसके मन में परमात्मा की प्रीति उपजती है। उसके भाग्य का उदय हो जाता है और परमात्मा का असीम आधार उसे प्राप्त हो जाता है। इस तरह विकार मनुष्य के दुर्भाग्य का प्रतीक हैं। विकारों का त्याग सौभाग्य का द्वार खोलने वाला और परमात्मा को पाने वाला है। विकारों में फंसा हुआ मनुष्य जीवन की बाज़ी को निरंतर हारता जाता है।

बिखई दिनु रैनि इव ही गुदारै ॥
गोबिंदु न भजै अहंबुधि माता जनमु जूऐ जिउ हारै ॥१॥रहाउ॥
नामु अमोला प्रीति न तिस सिउ पर निंदा

*E-१७१६, राजाजीपुरम, लखनऊ-२२६०१७, मो. : ९४१५९६०५३३

हितकारै ॥
छापरु बांधि सवारै त्रिण को दुआरै पावकु जारै ॥१॥
कालर पोट उठावै मूंडहि अंम्रितु मन ते डारै ॥
ओढै बसत्र काजर महि परिआ बहुरि बहुरि फिरि झारै ॥२॥
काटै पेडु डाल परि ठाढौ खाइ खाइ मुसकारै ॥
गिरिओ जाइ रसातलि परिओ छिटी छिटी सिर भारै ॥३॥
निरवैरै संगि वैरु रचाए पहुचि न सकै गवारै ॥
कहु नानक संतन का राखा पारब्रहमु निरंकारै ॥४॥
(पन्ना १२०५)

विकारी मनुष्य की दशा का बड़ा ही सटीक वर्णन उपरोक्त गुरु-वचन में किया गया है। विकार इस तरह मनुष्य की सोच को भ्रष्ट कर देते हैं कि जिस पेड़ की डाल पर वह खड़ा होता है उसी को काटता है और उसी में आनंदित होता है। डाल कटने पर गिर जाने की उसे समझ ही नहीं बाकी रहती। बार-बार अपने कपड़े साफ करने का प्रयत्न करता है किंतु फिर काजल की कोठरी में जा बैठता है। मोह-माया के विष का भार सिर पर उठाये घूमना उसे सुहाता है और मन में बसे अमृत-परमात्मा को वह भुला बैठता है। वह अपने तन को संवारने में व्यस्त रहता है और दूसरी ओर विकारों की आग में जीवन के अमूल्य अवसर को स्वाह करता रहता है। परमात्मा की प्रीति में रंगने के स्थान पर वह पर-निंदा में सुख खोजता है। उसका अहं जीवन को निरर्थक करके रसातल में पहुंचा देता है और उसके सारे सुख, जिनकी उसने कपोल कल्पना की होती है, चूर-चूर होकर बिखर जाते हैं। ऐसा व्यक्ति सच की राह पर चलने वाले सदाचारी और परमात्मा के भक्तों को हानि पहुंचाने की प्रवृत्ति रखता है, किंतु कुछ भी अनिष्ट नहीं कर पाता। सद्आचरण करने वालों की रक्षा स्वयं पारब्रह्म करता है।

गुरसिक्ख का ध्येय होता है कि विकारों का मन से समूल नाश कर अपने आचरण को पूरी तरह विकारों से रहित कर दे, परमात्मा तभी प्राप्त होता है।

रवनी रवै बंधन नही तूटहि विचि हउमै भरमु न जाई ॥
सतिगुरु मिलै त हउमै तूटै ता को लेखै पाई ॥२॥
हरि हरि नामु भगति प्रिअ प्रीतमु सुख सागरु उर धारे ॥
भगति वछलु जगजीवनु दाता मति गुरमति हरि निसतारे ॥३॥
मन सिउ जूझि मरै प्रभु पाए मनसा मनहि समाए ॥
नानक क्रिपा करे जगजीवनु सहज भाइ लिव लाए ॥४॥
(पन्ना ३५३)

कहने और विचार करने मात्र से ही विकार नहीं खत्म होते, इसके लिए दृढ़ता से प्रयास करना पड़ता है और सतिगुरु की शरण में जाना पड़ता है। गुरसिक्ख जानता है कि परमात्मा को परमात्मा की कृपा से ही पाया जा सकता है, इसलिए वह दयालु पिता-परमात्मा से सद्बुद्धि की प्रार्थना करता है ताकि वह विकार रहित होकर मन को गुरु-शबद से निर्मल कर सके। जब गुरसिक्ख दृढ़ता से प्रेम के मार्ग पर चलता है तभी परमात्मा की कृपा का हकदार बनता है। माया-मोह की विडंबना यह है कि मनुष्य विकार भी नहीं छोड़ना चाहता और सुख पाने की भी आशा रखता है। गुरमति का स्पष्ट संदेश है कि ऐसा नहीं हो सकता। सुख तभी मिलेगा जब मनुष्य अहंकार का त्याग करेगा।

हउमै करतिआ नह सुखु होइ ॥

मनमति झूठी सचा सोइ ॥
सगल बिगूते भावै दोइ ॥
सो कमावै धुरि लिखिआ होइ ॥१॥
ऐसा जगु देखिआ जूआरी ॥
सभि सुख मागै नामु बिसारी ॥१॥रहाउ॥
अदिसटु दिसै ता कहिआ जाइ ॥
बिनु देखे कहणा बिरथा जाइ ॥
गुरमुखि दीसै सहजि सुभाइ ॥
सेवा सुरति एक लिव लाइ ॥२॥ (पन्ना २२२)

उपरोक्त वचन सीधे मर्म पर चोट करने वाले और चेतना को झिंझोड़ देने वाले अनमोल वचन हैं। ये वचन शाश्वत और सदा प्रासंगिक हैं, जिनके अनुसार लोग परमात्मा को विस्मृत कर देते हैं और सुख की आशा करते हैं। उन्हें यह भी नहीं पता कि इस तरह वे जीवन के लक्ष्य से किस तरह दूर होते जा रहे हैं और दुख ही दुख उनके आगे आता जा रहा है। मन में अगर विकार हों तो किसी भी तरह का कोई सुख नहीं प्राप्त हो पाता। इससे विनाश ही होता है। यह सच जाने-समझे बिना उद्धार संभव नहीं है और सारे प्रयास व्यर्थ ही जाते हैं। गुरसिक्ख सहजता से इस सच को समझ लेता है। गुरसिक्ख अपने को परमात्मा के समक्ष अर्पित कर देता है।

जगि हउमै मैलु दुखु पाइआ मलु लागी दूजै भाइ ॥
मलु हउमै धोती किवै न उतरै जे सउ तीरथ नाइ ॥
बहु बिधि करम कमावदे दूणी मलु लागी आइ ॥
पड़िऐ मैलु न उतरै पूछहु गिआनीआ जाइ ॥१॥
मन मेरे गुर सरणि आवै ता निरमलु होइ ॥
मनमुख हरि हरि करि थके मैलु न सकी धोइ ॥ (पन्ना ३९)

एक विनम्र सेवक की तरह गुरु नानक साहिब की आज्ञा में रहते-रहते भाई लहिणा जी गुरगद्दी के सुयोग्य उत्तराधिकारी बनकर श्री गुरु अंगद देव जी के स्वरूप में प्रतिष्ठापित हुए। आयु में अपने से पच्चीस वर्ष छोटे श्री गुरु अंगद देव जी की शरण में जाकर उनकी सेवा करते हुए बाबा अमरदास जी अगले गुरु साहिब बने। इन्हीं मूल्यों को आगे बढ़ाने वाले श्री गुरु रामदास जी चौथे गुरु थे, जिन्होंने व्यवहारिक रूप से सिद्ध किया कि गुरु की शरण में आने वाला निर्मल हो जाता है। मनुष्य कितने भी तीर्थ-स्नान कर ले, ज्ञान की बड़ी-बड़ी पुस्तकें पढ़ ले, कितने ही अन्य कर्म-उपाय कर ले, लेकिन जब तक उसका हृदय विषय-विचारों से भरा हुआ है उसके दुखों का अंत नहीं है। वह कितना भी जप-तप कर ले उसका मन मैला ही रहेगा। जो सतिगुरु की शरण में आयेगा उद्धार उसी का होगा।

मन के विकारों को दूर करना एक कठिन कार्य है, क्योंकि मन पर नियंत्रण करना मनुष्य के वश में नहीं है :

मनु मै मतु मैगल मिकदारा ॥
गुरु अंकसु मारि जीवालणहारा ॥ (पन्ना १५९)

उपरोक्त गुरु-वचन में मन को अहंकार में मस्त हाथी की संज्ञा दी गई है। मस्त हाथी को नियंत्रण में करने के लिए अंकुश की आवश्यकता होती है। गुरसिक्ख के लिए सतिगुरु अंकुश का कार्य करते हैं जो कि उसकी अहम्मन्यता को मारकर उसे निर्मल सहज जीवन की सौगात देते हैं। कोई ही है, जो अपने मन को ऐसे अंकुश की सहायता से साध पाता है।

मनु असाधु साधै जनु कोइ ॥
अचरु चरै ता निरमलु होइ ॥
गुरमुखि इहु मनु लइआ सवारि ॥
हउमै विचहु तजे विकार ॥ (पन्ना १५९)

गुरबाणी इस बात को स्वीकार करती है

कि मन असाध है और विकारों से निजात नहीं पायी जा सकती। परमात्मा की कृपा से एक गुरमुख अपने मन को विकारों से रहित और निर्मल करने में सफल होता है। परमात्मा का नाम-सिमरन उसके सभी दुखों का नाशक और सर्वफलदायक बन जाता है।

नामु लैत मनु परगटु भइआ ॥
नामु लैत पापु तन ते गइआ ॥
नामु लैत सगल पुरबाइआ ॥
नामु लैत अठसठि मजनाइआ ॥१॥
तीरथु हमरा हरि को नामु ॥
गुरि उपदेसिआ ततु गिआनु ॥१॥रहाउ॥
नामु लैत दुखु दूरि पराना ॥
नामु लैत अति मूड़ सुगिआना ॥
नामु लैत परगटि उजीआरा ॥
नामु लैत छुटे जंजारा ॥ (पन्ना ११४२)

एक गुरसिक्ख के लिए नाम-सिमरन ही मन को निर्मल करने, तन को पाप-कर्मों से दूर रखने, सुअवसर पाने, सारे तीर्थों के स्नान के समान पुण्य पाने जैसा है। नाम-सिमरन ही सबसे बड़ा पवित्र कार्य है और सतिगुरु का उपदेश सबसे बड़ा ज्ञान है। नाम-सिमरन से मानव के सारे दुख दूर हो जाते हैं और भ्रम-अज्ञानता मिटकर वो सच की राह पर आ जाता है। नाम-सिमरन से जीवन का लक्ष्य स्पष्ट हो जाता है और माया-मोह के बंधनों से मुक्ति मिल जाती है। जो नाम-सिमरन के अतिरिक्त अन्य कोई उपाय करता है, शुभ-अशुभ का विचार करता है, अपनी मति का उपयोग करता है, उसे कैसे गुरसिक्ख कह सकते हैं? वो कैसे मन को शुद्ध करके स्वयं को परमात्मा से जोड़ सकेगा?

मन विकारों से भरा हुआ है। मन मदमस्त हाथी की तरह निरंकुश है। विकारों से भरे मन के साथ दुख ही दुख हैं। ऐसे में जीवन व्यर्थ चला जाने वाला है। हर कोई सुख चाहता है किंतु मन पर नियंत्रण कठिन है, जिससे सुखों की अपेक्षा नहीं की जा सकती। मन को नियंत्रण में करने का एक ही उपाय है-- गुरु का अंकुश। गुरु की शरण में जाने से ही विकारों का नाश और परमात्मा के प्रेम का प्रकाश हो सकता है।

आपहि मेलि लए ॥
जब ते सरनि तुमारी आए तब ते दोख गए ॥१॥रहाउ॥
तजि अभिमानु अरु चिंत बिरानी साधह सरन पए ॥
जपि जपि नामु तुम्हारो प्रीतम तन ते रोग खए ॥
(पन्ना ८२९)

मन के विकारों ने बड़ों-बड़ों का नाश किया। रावण जैसे शक्तिशाली राजा के घर, जिसके एक लाख पुत्र, सवा लाख नाती-पोते थे, कोई दीया-बाती जलाने वाला न बचा। उसकी कोई रक्षा नहीं कर सका। सारी प्राप्त की गई शक्तियां और वरदान व्यर्थ चले गए। एक गुरसिक्ख अपने प्रीतम-परमात्मा का नाम जप-जपकर ही उन विकारों से मुक्त हो जाता है। समूचा गुरमति दर्शन ही इतना महान और पवित्र है जो कि विस्मित करता है और प्रेरित भी। गुरु की शरण में जाने से सारे दोष दूर हो जाते हैं।



शिरोमणि गुरुद्वारा प्रबंधक कमेटी के अध्यक्ष साहिबान : ६

पंथ-रत्न मास्टर तारा सिंघ जी

*-स. रूप सिंघ**

शिरोमणि सिक्ख संस्था शिरोमणि गुरुद्वारा प्रबंधक कमेटी, श्री अमृतसर के प्रथम सचिव, लंबा समय अध्यक्ष पद पर शोभनीय रहे, प्रसिद्ध धार्मिक-राजनीतिक नेता, सिक्ख साहित्यकार, ईमानदारी तथा सिक्ख आचरण की ज़िंदा मिसाल पंथ-रत्न मास्टर तारा सिंघ जी का जन्म २४ जून, १८८५ ई को पिता श्री बख़्शी गोपी चंद तथा माता मूला देवी के घर गांव हरिआल, रावलपिंडी में हुआ। इनका बचपन का नाम नानक चंद था। परिवार धार्मिक जीवन जीने वाला था। चाहे कि वे हिंदू धर्म से सम्बंधित थे, किंतु फिर भी सारा परिवार गुरु साहिबान तथा गुरबाणी के साथ जुड़ा हुआ, गुरमति विचारधारा का बहुत सत्कार करता था। अपने गांव के मदरस्से से प्राथमिक शिक्षा प्राप्त कर मास्टर जी मिशन स्कूल, रावलपिंडी में दाख़िल हुए। विद्या-प्राप्ति की असीम जिज्ञासा सदका, पढ़ाई में अग्रणी रहकर वज़ीफा प्राप्त करते रहे। मास्टर जी के बचपन के समय गांव के गुरुद्वारे में 'पंथ प्रकाश' की कथा-व्याख्या होती थी, जिसको सुनने हेतु वे प्रतिदिन गुरुद्वारा साहिब जाते। गुरुद्वारे से गुरबाणी एवं सिक्ख इतिहास की बहुमूल्य विलक्षण विचारधारा की जानकारी प्राप्त करके मास्टर जी ने रोम-रोम से गुरु-ग्रंथ व गुरु-पंथ को समर्पित होने का मन बना लिया। अवकाश के समय उन्होंने गुरबाणी एवं सिक्ख इतिहास को खूब पढ़ा, समझा एवं उस पर विचार किया। उन दिनों महान सिक्ख शख़्सियत बाबा अतर सिंघ जी मसतूआणा वाले प्रचार दौरे पर आए। बाबा जी से गुरमति विचारधारा के बारे में सुनकर मास्टर जी इतना प्रभावित हुए कि दसवीं कक्षा में पढ़ते हुए १९०२ ई में पांच प्यारों से अमृत की दात प्राप्त कर, गुरु-ग्रंथ व गुरु-पंथ को समर्पित हो गए। शायद उस समय किसी को ख़्याल भी न हो कि नानक चंद से तारा सिंघ बनकर सिक्खी मार्ग में प्रवेश करने वाले नौजवान ने सिक्ख धर्म व राजनीति में ध्रुव तारे की भांति चमकना है।

हिंदू परिवारों में उस समय एक अच्छी परंपरा यह भी थी कि वे अपने बच्चों में से एक बच्चे को सिक्ख सजाते थे, किंतु मास्टर तारा सिंघ जी के परिवार के मामले में विशेष यह है कि कुछ समय बाद इनकी बहन एवं चारों भाई भी 'नानक निर्मल पंथ' (सिक्ख पंथ) के राही बन गए। १९०३ ई में मास्टर तारा सिंघ जी उच्च शिक्षा की प्राप्ति के लिए खालसा कॉलेज, श्री अमृतसर में दाख़िल हुए। कॉलेज की पढ़ाई के दौरान मास्टर जी कॉलेज की हॉकी टीम के कैप्टन एवं फुटबाल टीम के सदस्य थे।

१९०७ ई में खालसा कॉलेज की इमारत की कार-सेवा हो रही थी। मेजर हिल ने कार-सेवा के प्रति गलत शब्दों का प्रयोग कर दिया। मास्टर तारा सिंघ जी की अगुआई में विद्यार्थियों ने हड़ताल कर दी। आख़िर महाराजा नाभा खुद श्री अमृतसर आए और उन्होंने मामला हल

*सचिव, शिरोमणि गुरुद्वारा प्रबंधक कमेटी, श्री अमृतसर-१४३००१; मो. ९८१४६-३७९७९

करवाया।

मास्टर जी अध्यापक बनकर कौम-निर्माण करना चाहते थे। इस मिशन की पूर्ति के लिए १९०७ ई में उन्होंने बी. ए करने के उपरांत टीचर ट्रेनिंग कोर्स शुरू कर दिया। इसी वर्ष मास्टर जी ने गृहस्थ जीवन में प्रवेश किया। उनका अनंद कारज बीबी तेज़ कौर के साथ हुआ। मास्टर जी के घर दो लड़के एवं दो लड़कियां पैदा हुईं। इनकी एक लड़की २० वर्ष की आयु में अकाल चलाना कर गयी। इनके दोनों लड़कों के घर कोई औलाद नहीं हुई। इनकी बेटी बीबी रजिंदर कौर की दो लड़कियां और एक लड़का है, जो मास्टर जी की विरासत को संभाल रहे हैं। १९०८ ई में मास्टर जी ने टीचर ट्रेनिंग प्राप्त कर स. सुंदर सिंघ एवं स. बिशन सिंघ के साथ मिलकर लायलपुर खालसा स्कूल आरंभ किया, जिसके वे मुख्य अध्यापक बने। मात्र १५ रुपये मासिक वेतन पर उन्होंने यह सेवा आरंभ की। दो वर्षों में ही इस स्कूल का इलाके में खास नाम बन गया। स्कूल में पढ़ाने के कारण ही इनके नाम के साथ 'मास्टर' शब्द सदा के लिए जुड़ गया। यह स्कूल केवल विद्यार्थियों को अक्षर-ज्ञान ही नहीं सिखाता था, अपितु जीवन-जाच में भी परिपक्व करता था। इसी कारण यह सिक्खी के स्कूल के रूप में प्रसिद्ध हुआ। कुछ समय बाद ही इस स्कूल की नयी शाखाएं खोली गयीं।

मास्टर जी के नेतृत्व में लायलपुर सिक्ख-गतिविधियों का केंद्र बन गया, जिसका मुख्य उद्देश्य सिक्ख विरसे एवं विरासत से समूची कौम को अवगत करवाना था। इस कार्य के लिए मास्टर जी ने 'सच्च दा ढंढोरा' साप्ताहिक पत्रिका शुरू की। १९१४ ई में मास्टर जी लायलपुर से कल्लर खालसा हाई स्कूल के मुख्य अध्यापक लग गए, किंतु दो वर्ष बाद ही मास्टर जी ने अपने स्कूल में फिर सेवा संभाल ली।

गुरुद्वारा श्री रकाबगंज साहिब की दीवार अंग्रेज सरकार द्वारा गिराने पर मास्टर तारा सिंघ जी तथा अन्य सिक्ख नेताओं ने डटकर विरोध किया। वे गुरुद्वारा प्रबंध सुधार लहर में शामिल होकर हर मोर्चे में अग्रिम कतार में खड़े हुए। मास्टर तारा सिंघ जी उच्च शृंखला के धार्मिक, सामाजिक, राजनीतिक अगुआ के रूप में ध्रुव तारे की भांति चमके।

१५ नवंबर, १९२० ई को सिक्खों की शिरोमणि संस्था शिरोमणि गुरुद्वारा प्रबंधक कमेटी अस्तित्व में आयी। मास्टर तारा सिंघ जी की धार्मिक, सामाजिक एवं राजनीतिक गतिविधियों को सम्मुख रखते हुए इनको शिरोमणि गुरुद्वारा प्रबंधक कमेटी का सदस्य चुन लिया गया। मास्टर तारा सिंघ जी को इस संस्था के प्रथम सचिव होने का सम्मान प्राप्त हुआ। गुरुद्वारा प्रबंध सुधार लहर को लोक-लहर बनाने में मास्टर जी ने विशेष योगदान दिया। सिक्ख-सिद्धांतों, गुरमति विचारधारा, सिक्ख इतिहास, परंपराओं एवं मर्यादा से सिक्खों को अवगत कराने के लिए 'अकाली पत्रिका' एवं 'पंजाब केसरी' अख़बार शुरू किए। मास्टर जी ने अपने संपादकीय लेखों में महंतों-पुजारियों की गुंडागर्दी तथा अंग्रेज सरकार की धक्केशाही के विरुद्ध खूब लिखा।

२१ फरवरी, १९२१ ई को श्री ननकाणा साहिब का दुखदायक साका घटित हो गया। ३ मार्च, १९२१ ई को श्री ननकाणा साहिब में शहीदों को समर्पित शहीदी कान्फ्रेंस की गयी, जिसमें सिक्खों को शहीदों के सत्कार के लिए एवं अंग्रेज सरकार तथा महंतों की गुंडागर्दी के विरुद्ध रोष प्रकट करने के लिए काली दसतारें

सजाने का संदेश दिया गया। इस दीवान के समय मास्टर तारा सिंघ जी ने अध्यापक की सेवा से त्याग-पत्र देकर अपना समूचा जीवन सिक्ख कौम को समर्पित कर दिया।

श्री दरबार साहिब, श्री अमृतसर के तोशेखाने की चाबियों के मोर्चे के समय मास्टर जी तथा अन्य अकाली अगुओं को गिरफ्तार कर सख़्त सजाएं दी गयीं। मास्टर जी के पंथक जीवन में यह पहली गिरफ्तारी थी। १७ जनवरी, १९२२ ई को सारे अकाली अगुआ रिहा कर दिए गए। मार्च, १९२२ ई में मास्टर जी को कृपाण के मोर्चे के समय फिर गिरफ्तार कर लिया गया। १६ अगस्त, १९२२ ई को गुरु का बाग के मोर्चे के सम्बंध में समूची अकाली लीडरशिप को गिरफ्तार करके जेल में बंद कर दिया गया, जिनमें मास्टर जी भी शामिल थे।

महाराजा नाभा के हक में मास्टर तारा सिंघ जी ने अकाली एवं परदेसी अख़बारों में सिक्ख जज़्बातों को छूने वाले धड़ल्लेदार संपादकीय लेख लिखे। मास्टर जी द्वारा पेश किए जाने पर शिरोमणि गुरुद्वारा प्रबंधक कमेटी ने अगस्त, १९२३ ई में महाराजा नाभा को गद्दी से उतारे जाने के विरोध में गुरमता पारित किया। ७ जनवरी, १९२४ ई को अंग्रेज सरकार ने नाभा मोर्चा लगाने के कारण शिरोमणि गुरुद्वारा प्रबंधक कमेटी तथा शिरोमणि अकाली दल को गैर-कानूनी करार देकर मास्टर जी सहित समूची कार्यकारिणी एवं राजनीतिक अगुओं को ज़ेल में डाल दिया। इस मोर्चे के समय सिक्खों के साथ हमदर्दी का इज़हार करते हुए पंडित जवाहर लाल नेहरू एवं श्री ए टी किदवई को भी सरकार ने गिरफ्तार कर लिया।

सिक्ख गुरुद्वारा एक्ट-१९२५ सरकार ने प्रवान करके शिरोमणि गुरुद्वारा प्रबंधक कमेटी, श्री अमृतसर को सिक्खों की प्रतिनिधि संस्था स्वीकार कर लिया। गुरुद्वारा एक्ट पास होने के समय स. तेजा सिंघ समुंदरी तथा मास्टर तारा सिंघ जी सहित सारे सिक्ख अगुआ ज़ेल में थे। कुछ सिक्ख नेता तो सरकार की शर्तें मानकर रिहा हो गए, किंतु स. तेजा सिंघ समुंदरी तथा मास्टर तारा सिंघ जी सहित १९ सिक्ख नेता सरकारी शर्तों को किसी भी कीमत पर मानने के लिए तैयार नहीं थे। कुछ समय के बाद सरकार ने इन सिक्ख अगुओं को बिना शर्त के रिहा कर दिया। जून, १९२६ ई में शिरोमणि गुरुद्वारा प्रबंधक कमेटी का पहली बार आम चुनाव हुआ। २ अक्तूबर, १९२६ ई को गुरुद्वारा एक्ट के अनुसार सेंट्रल गुरुद्वारा बोर्ड की पहली एकत्रता हुई। इस एकत्रता के समय मास्टर तारा सिंघ जी विशेष दर्शक के रूप में शामिल थे। एकत्रता की कार्यवाही शुरू होने पर मास्टर जी को पहले सदस्य नामज़द किया गया। बाबा खड़क सिंघ जी को शिरोमणि गुरुद्वारा प्रबंधक कमेटी का अध्यक्ष चुन लिया गया और मास्टर तारा सिंघ जी को उपाध्यक्ष। बाबा खड़क सिंघ जी उस समय ज़ेल में थे, जिस कारण मास्टर तारा सिंघ जी ने उपाध्यक्ष होते हुए अध्यक्ष के रूप में सेवा आरंभ की। प्रथम एकत्रता के समय ही स. तेजा सिंघ समुंदरी के अकाल चलाना कर जाने पर शोक प्रस्ताव पेश व पास किया गया। इसके उपरांत "सेंट्रल गुरुद्वारा बोर्ड का पहला नाम शिरोमणि गुरुद्वारा प्रबंधक कमेटी, श्री अमृतसर ही होगा" का प्रस्ताव सर्वसम्मति से पास किया गया। इसी दिन शिरोमणि गुरुद्वारा प्रबंधक कमेटी की समूची कार्यवाही मातृ-भाषा पंजाबी में करने सम्बंधी ऐतिहासिक फैसला किया गया। जात-पात, छुआ-छूत के भेदभाव के विरुद्ध भी प्रस्ताव इसी समय पहली बार पारित

हुआ।

३ अप्रैल, १९२७ ई को श्री अकाल तख़्त साहिब पर शिरोमणि गुरुद्वारा प्रबंधक कमेटी की विशेष बैठक हुई, जिसमें पंथक झगड़ों एवं धड़ेबंदी को खत्म करने के लिए तीन सब-कमेटियां बनायी गयीं, जिनमें से मास्टर सिंघ जी सर्व-सांझे पंथक मामलों तथा क्षेत्रीय झगड़ों के निवारण हेतु बनी सब-कमेटी के सदस्य थे। ८ अक्तूबर, १९२७ ई को दोबारा बाबा खड़क सिंघ जी अध्यक्ष तथा मास्टर तारा सिंघ जी उपाध्यक्ष चुने गए। इस मीटिंग के समय बाबा अतर सिंघ जी मसतूआणा तथा भाई हीरा सिंघ जी हजूरी रागी श्री दरबार साहिब के अकाल चलाना कर जाने पर शोक प्रस्ताव पारित किए गए।

फरवरी, १९२८ ई में ऑल पार्टी कान्फ्रेंस मुंबई में हुई, जिसमें मास्टर तारा सिंघ जी सिक्ख प्रतिनिधि के रूप में शामिल हुए। मास्टर जी ने 'नेहरू रिपोर्ट' का डटकर विरोध किया, क्योंकि इसमें सिक्ख हितों को अनदेखा किया गया था। सिक्ख लीग के अध्यक्ष के रूप में मास्टर जी भी कार्यशील रहे। कांग्रेस पार्टी के साथ सम्बंधों के मामले में मास्टर तारा सिंघ जी जत्थेदार ग्रुप के अगुआ बन गए। कांग्रेस के लाहौर सेशन में मास्टर तारा सिंघ जी शामिल हुए, जिसमें प्रस्ताव पारित किया गया कि "भारत में ऐसा संविधान लागू किया जाएगा, जो अल्पसंख्यक लोगों को भी प्रवान होगा।"

१९३० ई तक मास्टर तारा सिंघ जी की ईमानदारी, निष्काम सेवा तथा गुरु-पंथ को समर्पित भावना का सदका समूची सिक्ख कौम ने उनको निर्विवाद सिक्ख नेता प्रवान कर लिया। शिरोमणि गुरुद्वारा प्रबंधक कमेटी तथा शिरोमणि अकाली दल के सर्वप्रवानित नेता के रूप में मास्टर तारा सिंघ जी गुरुद्वारा प्रबंध सुधार, अकाली दल, देश की आज़ादी, पंजाबी राज्य तथा पंजाबी भाषा के लिए हमेशा संघर्षशील रहे, कई बार जेल-यात्रा भी की, मगर हर बार मास्टर जी दरवेश, सिक्ख सियासतदान, सिक्ख नेता के रूप में चारपाई पर बैठे कुछ लिखते हुए दिखाई देते।

मास्टर तारा सिंघ जी ने सिक्ख गुरुद्वारा एक्ट-१९२५ लागू होने के बाद २ अक्तूबर, १८२६ ई से १२ अक्तूबर, १९३० ई तक उपाध्यक्ष (बाबा खड़क सिंघ जी की गैरहाज़िरी में अध्यक्ष) के रूप में; १२ अक्तूबर, १९३० ई से १७ जून, १९३३ ई; १३ जून, १९३६ ई से १९ नवंबर, १९४४ ई; ४ अप्रैल, १९५१ ई से ५ अक्तूबर, १९५२ ई; १७ फरवरी, १९५५ ई से २१ मई, १९५५ ई; १६ अक्तूबर, १९५५ ई से १६ नवंबर, १९५८ ई; ७ मार्च, १९६० ई से ३० अप्रैल, १९६० ई; १० मार्च, १९६१ ई से ११ मार्च, १९६२ ई तक अध्यक्ष, शिरोमणि गुरुद्वारा प्रबंधक कमेटी, श्री अमृतसर के पद पर सुशोभित होकर सेवा निभाई।

इतना लंबा समय शिरोमणि गुरुद्वारा प्रबंधक कमेटी के अध्यक्ष के रूप में कार्यशील रहे मास्टर तारा सिंघ जी की प्राप्तियों को एक लेख में कलमबंद कर पाना असंभव है। मास्टर तारा सिंघ जी की अध्यक्षता के समय हुए विशेष कार्यों में सिक्ख कैदियों की रिहायी पर मुबारकबाद, दफ्तरी कार्य पंजाबी भाषा में करने, जात-पात के बंधन तोड़ने, पंच खालसा दीवान को पंथ में से खारिज करने, महाराजा नाभा के साथ हमदर्दी, स. तेजा सिंघ भुच्चर को क्षमा, प्रो. तेजा सिंघ की नामज़दगी, श्री अकाल तख़्त साहिब के लिए नियम-उपनियम, कौमी झंडे के बारे में अकाली दल का एलान, धर्म प्रचार कमेटी का

आरंभ, छुआ-छूत के विरुद्ध प्रस्ताव, डसका के गुरुद्वारा के बारे में प्रस्ताव, सहजधारी सिक्खों के बारे में, कश्मीर के गुरुद्वारों के प्रबंध के बारे में, जत्थेदार एवं ग्रंथियों की तनख्वाह, रहुरीत कमेटी के सदस्यों के बारे में, सांप्रदायिक फैसले के बारे में विरोध, खालसा दस्तकारी स्कूल, लाहौर में कॉलेज, कम्यूनल अवार्ड का विरोध, कूकों द्वारा छापे गए ट्रेक्टों की ज़ब्ती, नशों के विरुद्ध प्रण-पत्र, श्री गुरु ग्रंथ साहिब की छपाई, खालसा रहित मर्यादा का मसौदा, सिक्खों को ज़राइमपेशा करार देने के विरुद्ध प्रस्ताव, तख़्तों के मुलाज़िम राजनीति से अलग, गुरुद्वारा शहीद गंज, लाहौर का मामला, सिक्ख नेशनल कॉलेज, सिक्ख राजा पतित नहीं होना चाहिए, झटके के बारे में बिल, आर्थिक, भाईचारक, एवं शैक्षणिक उन्नति के बारे में, जनगणना एवं सिक्ख, पाकिस्तान की नीति के विरुद्ध, फौज में सिक्खों के लिए लोह-टोप का विरोध, नामधारियों के पत्तरा पाठ का विरोध, पुलिस में सिक्ख रहित, धार्मिक मासिक पत्र, स्कूलों में पंजाबी पाठ्यक्रम, महात्मा गांधी का मरण-व्रत खुलवाने के बारे में, सिक्ख सूबे के बारे में, सत्यार्थ प्रकाश का कुछ हिस्सा न छापने के बारे में, सिक्खों पर पाबंदी हटाने के बारे में, बाढ़-पीड़ितों के साथ हमदर्दी, गुरुद्वारा दाता बंदी छोड़ के बारे में, श्री ननकाणा साहिब एजूकेशन ट्रस्ट, पाकिस्तान में स्थित गुरुद्वारों के बारे में, पंजाबी बोली एवं गुरमुखी लिपि तथा पंजाबी सूबे के बारे में, सिक्ख इतिहास रीसर्च बोर्ड, धर्म प्रचार कमेटी, मिशनरी कॉलेज आदि के बारे में महत्त्वपूर्ण फैसले शामिल हैं, जिनके बारे में विस्तार में जाना हमारे लिए यहां पर संभव नहीं।

९ मार्च, १९३० ई को मास्टर जी के अध्यक्ष-काल में इनके विरुद्ध एक सदस्य ने प्रस्ताव प्रस्तुत किया। मास्टर जी ने कहा कि चाहे इस प्रस्ताव की अवधि खत्म हो चुकी है, मगर यह प्रस्ताव मेरे साथ सम्बंधित है, इसलिए यह प्रस्ताव पेश करने की आज्ञा है। चुनाव के समय यह प्रस्ताव १३ के मुकाबले ४५ वोटों के अंतर से गिर गया। ९ अप्रैल, १९३१ ई को मास्टर तारा सिंघ जी की अध्यक्षता में सेंट्रल सिक्ख लीग का नौवां इज़लास लाहौर में हुआ, जिसमें महात्मा गांधी भी शामिल हुए।

खालसा कॉलेज, श्री अमृतसर के अध्यापकों ने १९३३ ई में 'गुरसेवक सभा' बनायी। इस सभा ने अकाली धड़ेबंदी को खत्म करने हेतु मास्टर तारा सिंघ जी तथा ज्ञानी शेर सिंघ को सरगर्म राजनीति से कुछ समय दूर रहने को कहा। मास्टर जी ने गुरसेवक सभा का फैसला प्रवान करते हुए, शिरोमणि गुरुद्वारा प्रबंधक कमेटी, शिरोमणि अकाली दल तथा सर्व-हिंद सिक्ख मिशन के पदों और सदस्यता से त्याग-पत्र दे दिया। इस तरह मास्टर जी जून, १९३४ ई से जनवरी, १९३५ ई तक सरगर्म सिक्ख सियासत से दूर रहे, किंतु मास्टर जी अपने नज़दीकी मित्र स. सेवा सिंघ ठीकरीवाला के अकाल चलाने की ख़बर पढ़कर फिर पंजाब आ गए। १ अप्रैल, १९३५ ई को शिरोमणि अकाली दल ने कार्यकारिणी की मीटिंग में फैसला करके मास्टर जी की अगुआई में पूर्ण भरोसा प्रकट किया। दूसरे विश्व युद्ध के बाद हुई गोल-मेज़ कान्फ्रेंस के समय मास्टर तारा सिंघ जी ने सिक्खों की प्रतिनिधता की तथा मुसलिम लीग की देश-विभाजन की मांग का डटकर विरोध किया और सिक्ख-सिद्धांतों, विचारधारा तथा हितों के लिए खूब लड़े।

९ जून, १९३० ई, २१ फरवरी, १९३१ ई, ९ अप्रैल, १९४४ ई को मास्टर तारा सिंघ जी

की सेवाओं के सत्कार एवं सम्मान में विशेष गुरमते पास किए गए। १९४४ ई में मास्टर तारा सिंघ जी ने अकाल रेज़िमेंट खड़ी की। २७ दिसंबर, १९५३ ई को गुरुद्वारा फतहिगढ़ साहिब में शहीदी समागमों के समय मास्टर तारा सिंघ जी ने पंडित जवाहर लाल नेहरू को बोलने की आज्ञा न देकर एक नया कीर्तिमान स्थापित किया।

२८ मई, १९४८ ई को मास्टर जी के नेतृत्व में पंजाबी सूबे की मांग शुरू की गयी तथा १० मई, १९५५ ई को पंजाबी सूबे के नारे का मोर्चा लगा। मई, १९५५ ई में 'पंजाबी सूबा ज़िंदाबाद' का नारा लगाने पर मास्टर जी को गिरफ्तार किया गया। उन्होंने पंजाबी सूबा कनवेन्शन करके पंजाबी सूबे की मांग की व मोर्चा लगाया।

२८ अक्तूबर, १९५१ ई को जनरल समागम के समय प्रस्ताव प्रस्तुत होने पर प्रवान हुआ कि पाकिस्तान में रह गए गुरुद्वारों के सम्बंध में निम्नलिखित अक्षर अरदास में शामिल किए जाने के लिए श्री अकाल तख़्त साहिब से हुकमनामा जारी किए जाने की प्रवानगी दी जाती है-- *"हे अकाल पुरख! आपणे पंथ दे सदा सहाई दतार जीओ! श्री ननकाणा साहिब ते होर गुरदुआरिआं गुरधामां दे, जिन्हां तों पंथ नूं विछोड़िआ गिआ है, खुल्हे दरशन-दीदार ते सेवा-संभाल दा दान खालसा जी नूं बखशो।"*

(गुरुद्वारा गज़ट, पृष्ठ ३८, नवंबर, १९५१)

यह हुकमनामा श्री अकाल तख़्त साहिब से २५ जनवरी, १९५२ ई को श्री अकाल तख़्त साहिब की मुहर तले जारी हुआ कि *"सरबत्त खालसा तथा गुरुद्वारों के सेवादारों के प्रति श्री अकाल तख़्त साहिब का हुक्म है कि अरदास में निम्नलिखित (उपरोक्त) शब्द शामिल समझे जाएं।"*

(गुरुद्वारा गज़ट, फरवरी, १९५२)

मास्टर तारा सिंघ जी १६ नवंबर, १९५७ ई को अध्यक्ष, शिरोमणि गुरुद्वारा प्रबंधक कमेटी के चुनाव के समय ३ वोटों के फर्क से स. प्रेम सिंघ लालपुरा से चुनाव हार गए, किंतु ७ मार्च, १९६० ई को फिर सर्व-सम्मति से अध्यक्ष चुने गए। मास्टर तारा सिंघ जी कुछ समय शिरोमणि गुरुद्वारा प्रबंधक कमेटी की धर्म प्रचार कमेटी के सदस्य भी रहे। मास्टर तारा सिंघ जी शिरोमणि गुरुद्वारा प्रबंधक कमेटी में ज्यादा समय नामज़द सदस्य के रूप में कार्यशील रहे। २९ नवंबर, १९६१ ई को मास्टर तारा सिंघ जी तथा वर्किंग कमेटी को जत्थेदार श्री अकाल तख़्त साहिब ने तनख्वाह सुनाई जो उन्होंने खुशी से प्रवान की। २२ नवंबर, १९६७ ई को पंथ-रत्न मास्टर तारा सिंघ जी सदा के लिए बिछुड़ गए। १२ फरवरी, १९६८ ई को शिरोमणि गुरुद्वारा प्रबंधक कमेटी के जनरल समारोह के समय मास्टर तारा सिंघ जी के अकाल चलाना कर जाने पर शोक प्रस्ताव पारित किया गया।

सिक्ख कौम की विलक्षण अस्तित्व-हस्ती व पहचान के लिए मास्टर जी जीवन भर संघर्षशील रहे। सिक्ख धार्मिक, सामाजिक, राजसी तथा आर्थिक मामलों को सुलझाने हेतु जो शक्ति अकाल पुरख ने मास्टर तारा सिंघ जी को बख़्शी थी, उसका कोई मुकाबला नहीं। आज भी मास्टर तारा सिंघ जी का नाम सिक्ख धर्म, समाज में बहुत ही मान-सत्कार से लिया जाता है। एक उदाहरण देने योग्य होगी। गुरपुरवासी पंथ-रत्न जत्थेदार गुरचरन सिंघ जी टौहड़ा मास्टर जी का नाम हमेशा 'श्रीमान पंथ-रत्न मास्टर तारा सिंघ जी' कहकर लिया करते थे। मास्टर जी के सत्कार के लिए एक बार

शिरोमणि गुरुद्वारा प्रबंधक कमेटी के जनरल चुनाव के समय जब बीबी किरनजोत कौर का नाम महासचिव के रूप में पेश हुआ तो टौहड़ा साहिब ने कहा था, "क्योंकि बीबी किरनजोत कौर श्रीमान पंथ-रत्न मास्टर तारा सिंघ जी की नातिन हैं, इसलिए हम इनके विरोध में उम्मीदवार खड़ा नहीं करेंगे। हम भी इस नाम का समर्थन करते हैं।" सर्वसम्मति से बीबी किरनजोत कौर महासचिव चुने गए। बीबी जी अब तक सदस्य, शिरोमणि गुरुद्वारा प्रबंधक कमेटी के रूप में कार्यशील हैं।

मास्टर तारा सिंघ जी की याद में उनके नाम पर स्कूल, कॉलेज, अस्पताल एवं लायब्रेरियां स्थापित हैं। भारत की पार्लियामेंट के आंगन में उनकी आदिमकद प्रतिमा भी स्थापित की गई है। पंजाबी सूबे की प्राप्ति के लिए उन्होंने लंबा समय अनशन किया। मातृ-भाषा पंजाबी की सेवा में भी मास्टर तारा सिंघ जी ने अहम योगदान डाला। मास्टर जी अपने समय के सुप्रसिद्ध साहित्यकार तथा पत्रकार थे। साहित्यकार के रूप में उन्होंने दो उपन्यास, तीन लेख-संग्रह, सफ़रनामा, आत्म-कथा आदि पुस्तकें लिखीं। पत्रकार के रूप में 'सच दा ढंढोरा', 'अकाली', 'प्रदेसी' तथा 'जत्थेदार' आदि साप्ताहिक अख़बारें शुरू कीं। १९४९ ई में मास्टर जी ने पंथक मैगज़ीन 'संत सिपाही' शुरू किया जो निरंतर जारी है। मास्टर तारा सिंघ जी एक अच्छे नेता थे, जिनसे अंग्रेज हाकिम, हिंदू व मुसलमान नेता भी डरते थे। धर्म एवं राजनीति में उन्होंने स्वार्थ एवं लालच को पास तक नहीं फटकने दिया। कहा जाता है कि मास्टर जी शिरोमणि गुरुद्वारा प्रबंधक कमेटी के अध्यक्ष-काल में पेन की सियाही भी कार्यालय की नहीं प्रयोग किया करते थे। 

सुखमनी साहिब : विचार व्याख्या *(पृष्ठ ४२ का शेष)*

जीवन सफल एवं वो प्रभु की दरगाह में प्रवान हो गया।

तीसरे पातशाह की बाणी में भी इसी भाव के दर्शन होते हैं, यथा :

तिही गुणी त्रिभवणु विआपिआ भाई गुरमुखि बूझ बुझाइ ॥
राम नामि लगि छूटीऐ भाई पूछहु गिआनीआ जाइ ॥
मन रे त्रै गुण छोडि चउथै चितु लाइ ॥
हरि जीउ तेरै मनि वसै भाई सदा हरि के गुण गाइ ॥ *(पन्ना ६०३)*

कोई गुरमुख ही इस तथ्य को समझ सकता है कि माया के इन तीनों गुणों के प्रभाव से केवल प्रभु-सिमरन में लीन होकर ही बचा जा सकता है। माया के तीनों गुणों को छोड़कर चौथे पद की सहज अवस्था में चित्त की एकाग्रता से ही हृदय-घर में परमेश्वर के दीदार हो जायेंगे तथा जीव चौरासी के चक्कर से मुक्त हो जायेगा। 

खबरनामा

ज्ञानी पिंदरपाल सिंघ 'भाई साहिब' तथा भाई हरजिंदर सिंघ 'शिरोमणि पंथक रागी' उपाधि से सम्मानित

श्री अमृतसर : २५ जनवरी : शिरोमणि गुरुद्वारा प्रबंधक कमेटी की कार्यकारिणी में लिए गए निर्णय को पांच सिंघ साहिबान द्वारा स्वीकृति दिए जाने के बाद श्री अकाल तख़्त साहिब पर हुए विशेष समारोह में पांच सिंघ साहिबान ने ज्ञानी पिंदरपाल सिंघ को 'भाई साहिब' तथा भाई हरजिंदर सिंघ (श्रीनगर वाले) को 'शिरोमणि पंथक रागी' की उपाधि से सम्मानित किया गया। ये उपाधियां पांच सिंघ साहिबान के रूप में श्री अकाल तख़्त साहिब के जत्थेदार ज्ञानी गुरबचन सिंघ, तख़्त श्री हरिमंदर जी पटना साहिब के जत्थेदार ज्ञानी इकबाल सिंघ, तख़्त श्री केसगढ़ साहिब (श्री अनंदपुर साहिब) के जत्थेदार ज्ञानी तरलोचन सिंघ, तख़्त श्री दमदमा साहिब के जत्थेदार ज्ञानी बलवंत सिंघ नंदगढ़ तथा तख़्त श्री हजूर अबिचल नगर साहिब (नांदेड़) से पहुंचे ग्रंथी ज्ञानी राम सिंघ ने सामूहिक रूप से प्रदान की। उपाधि-सम्मान में सिरोपा, शाल, सिरी साहिब (कृपाण) तश्तरी तथा गुरमते की कापी की बख़्शिश शामिल थी।

जत्थेदार अवतार सिंघ ने कहा कि विश्व-प्रसिद्ध कथावाचक ज्ञानी पिंदरपाल सिंघ ने गुरमति विचारों के माध्यम से भारी मात्रा में संगत को श्री गुरु ग्रंथ साहिब के साथ जोड़ा है और इनके द्वारा किया जा रहा यह महान उद्यम अब भी जारी है। भाई हरजिंदर सिंघ के बारे में अपने विचारों में जत्थेदार अवतार सिंघ ने कहा कि भाई हरजिंदर सिंघ ने गुरबाणी के मनोहर कीर्तन द्वारा संगत को गुरबाणी के साथ जोड़ा है। इनकी मधुरमयी आवाज़ के कारण गुरमुख-प्रेमियों के मन में इनके प्रति विशेष सम्मान-भाव है। उन्होंने इन दोनों महान शख़्सियतों के लिए विशेष सम्मान दिए जाने पर जहां इस बात की भरपूर सराहना की वहीं इनको बधाई देते हुए कहा कि अकाल पुरख इन्हें तंदरुस्त रखें और आजीवन इनसे यह महान सेवा करवाते रहें। उन्होंने इन दोनों शख़्सियतों को गुरु-घर के महान प्रचारक बताते हुए अन्य प्रचारक वर्ग को इनसे प्रेरणा लेने की अपील की। उन्होंने कहा कि यह विशेष उपाधि श्री अकाल तख़्त साहिब से चुनिंदा शख़्सियतों को ही मिली है और अब उनमें ज्ञानी पिंदरपाल सिंघ तथा भाई हरजिंदर सिंघ का नाम भी शामिल हो गया है।

जत्थेदार अवतार सिंघ ने श्री अकाल तख़्त साहिब के जत्थेदार से अपील की कि श्री हरिमंदर साहिब, श्री अमृतसर के भूतपूर्व हजूरी रागी भाई गुरमेज सिंघ तथा प्रसिद्ध सिक्ख इतिहासकार डॉ. किरपाल सिंघ (चंडीगढ़) को भी विशेष सम्मान से सम्मानित किया जाए।

इस शुभ अवसर पर श्री हरिमंदर साहिब के मुख्य ग्रंथी सिंघ साहिब ज्ञानी मल्ल सिंघ ने दोनों पंथक शख़्सियतों को मुबारकबाद देते हुए उनके मंगलमय जीवन की कामना की।

विशेष सम्मान समारोह में श्री हरिमंदर साहिब के ग्रंथी साहिबान के अलावा प्रो. मनजीत सिंघ भूतपूर्व जत्थेदार, ज्ञानी केवल सिंघ भूतपूर्व

जत्थेदार, ज्ञानी हरनाम सिंघ, मुखी दमदमी टकसाल, स. रजिंदर सिंघ महिता सदस्य कार्यकारिणी, स. दलमेघ सिंघ सचिव, स. रूप सिंघ सचिव, स. मनजीत सिंघ अपर सचिव, स. हरभजन सिंघ अपर सचिव तथा स. दलजीत सिंघ उप सचिव के अतिरिक्त भारी संख्या में शिरोमणि गुरुद्वारा प्रबंधक कमेटी के अधिकारी-कर्मचारी व संगत उपस्थित थी।

पाकिस्तान की सुप्रीम कोर्ट का फैसला प्रशंसनीय : जत्थेदार अवतार सिंघ

श्री अमृतसर : ८ फरवरी : पाकिस्तान की सुप्रीम कोर्ट द्वारा अल्पसंख्यकों के धार्मिक स्थानों के साथ लगती ज़मीन-जायदाद पर भू-माफिया ग्रुपों द्वारा प्रशासन की मिलीभुगत से नाजायज़ कब्जे करने या खरीदो-फरोख़्त करने पर लगाई पाबंदी वाले फैसले को प्रशंसनीय बताते हुए जत्थेदार अवतार सिंघ, अध्यक्ष, शिरोमणि गुरुद्वारा प्रबंधक कमेटी ने कहा कि सिक्ख भाईचारे के लिए यह बड़ी राहत वाला फैसला है।

शिरोमणि गुरुद्वारा प्रबंधक कमेटी के कार्यालय से जारी प्रेस रिलीज़ में जत्थेदार अवतार सिंघ ने कहा कि गुरुद्वारा शहीद भाई तारू सिंघ जी, चूना मंडी, लाहौर के साथ लगती गुरुद्वारा साहिब की करोड़ों रुपयों की कीमती जायदाद सुप्रीम कोर्ट के इस महत्त्वपूर्ण फैसले से बर्बाद होने से बच जायेगी। उन्होंने कहा कि गुरुद्वारा शहीद भाई तारू सिंघ जी की जायदाद पर नाजायज़ कब्ज़ा करने सम्बंधी तथा सिक्ख विरासतों-जायदादों, जैसे कि लाहौर में बेबे नानकी के गुरुद्वारा साहिब की ज़मीन, महराजा रणजीत सिंघ का 'समर पैलेस' तथा अन्य गुरुद्वारा साहिबान की जायदादों पर कब्ज़ा करने की घटनायें सामने आई थीं। सिक्ख विरासत से सम्बंधित जायदादों के बारे में बार-बार शिरोमणि गुरुद्वारा प्रबंधक कमेटी द्वारा पाकिस्तान सरकार को पत्र लिखकर इनकी हिफ़ाज़त के लिए कहा गया था। इसके अलावा पाकिस्तान औकाफ़ बोर्ड के चेयरमैन जनाब सैय्यद आसिफ़ हाशमी जब श्री हरिमंदर साहिब, श्री अमृतसर के दर्शन करने आए थे, उनके साथ भी इस सम्बंध में बातचीत की गयी थी। जत्थेदार अवतार सिंघ ने कहा कि सुप्रीम कोर्ट के इस फैसले से अब बहुत बड़ी राहत मिलेगी।

श्री अकाल तख़्त साहिब से नानकशाही कैलंडर संवत् ५४५ जारी

श्री अमृतसर : ८ फरवरी : शिरोमणि गुरुद्वारा प्रबंधक कमेटी की धर्म प्रचार कमेटी द्वारा प्रकाशित नानकशाही कैलंडर संवत् ५४५ श्री अकाल तख़्त साहिब के सचिवालय से जारी करते हुए जत्थेदार सिंघ साहिब ज्ञानी गुरबचन सिंघ ने समूह संगत को संवत् ५४५ (सन २०१३-१४) में सारे दिवस नानकशाही कैलंडर के अनुसार मनाए जाने के लिए कहा है।

इस अवसर पर स. रजिंदर सिंघ महिता, कार्यकारिणी सदस्य; स. रूप सिंघ तथा स. सतबीर सिंघ सचिव; गुरमति ज्ञान के संपादक स. सिमरजीत सिंघ के अलावा शिरोमणि गुरुद्वारा प्रबंधक कमेटी के अन्य अधिकारीगण उपस्थित थे।

क्रांतिकारी श्री गुरु गोबिंद सिंघ जी विषय पर विचार-गोष्ठि का आयोजन किया गया

चंडीगढ़ : १३ फरवरी : शिरोमणि गुरुद्वारा प्रबंधक कमेटी की धर्म प्रचार कमेटी द्वारा संचालित सिक्ख स्रोत, ऐतिहासिक ग्रंथ संपादना प्रोजेक्ट द्वारा किसी एक विषय पर करवाई जाती विचार-गोष्ठि के अंतर्गत आयोजित समारोह में 'क्रांतिकारी श्री गुरु गोबिंद सिंघ जी' विषय पर विभिन्न विद्वानों द्वारा गुरु जी के जीवन पर प्रकाश डाला गया।

कलगीधर निवास के एकत्रता हाल में आयोजित समारोह में मुख्य वक्ता के रूप में पहुंचे प्रो. सुखदिआल सिंघ ने कहा कि वैसे तो सभी गुरु साहिबान का जीवन इंकलाबी रहा है, मगर श्री गुरु गोबिंद सिंघ जी ने जो ऐतिहासिक कार्य किए वे वाकई क्रांति लाने वाले थे। गुरु जी द्वारा खालसा पंथ की साजना करना क्रांति लहर में एक अहम मोड़ था। उन्होंने कहा कि दशम गुरु जी का तलवंडी साबो से नांदेड़-दक्षिण को जाना धर्म-प्रचार का ही एक दौरा था न कि वे औरंगज़ेब के बुलावे पर उससे मिलने जा रहे थे। उन्होंने कहा कि दशम गुरु जी के जीवन सम्बंधी जो अब तक खोज-कार्य हुआ है वो अपूर्ण है, अभी और भी अहम पहलुओं पर खोज की आवश्यकता है। प्रोजेक्ट निर्देशक एवं विख्यात इतिहासकार डॉ. किरपाल सिंघ ने कहा कि श्री गुरु गोबिंद सिघ जी ने जुल्म एवं ज़ालिम का नाश कर गरीबों, नि:सहायों के कल्याणार्थ जो कार्य किए वे गुरु जी को महान क्रांतिकारी के रूप में प्रस्तुत करते हैं। समारोह की अध्यक्षता कर रहे भाई अशोक सिंघ बागड़ीआं ने अपने भाषण में कहा कि श्री गुरु गोबिंद सिंघ जी के तलवंडी साबो से नांदेड़ तक जाने वाले जीवन पर अभी और भी गहराई से आविष्कार किए जाने की आवश्यकता है। इस सम्बंधी इतिहासकारों को विशेष ध्यान दिए जाने की जरूरत है। समारोह में मुख्य अतिथि के रूप में पहुंची डॉ. रजिंदरजीत कौर ने कहा कि श्री गुरु गोबिंद सिंघ जी तथा उनके साहिबज़ादों द्वारा नारी-रक्षा तथा नारी-उत्थान के लिए किए गए काम आज भी उतने ही३ प्रासंगिक एवं मागदर्शक हैं। आज के समय में जहां महिलाओं पर शारीरिक तथा मानसिक रूप से भारी उत्पीड़न किया जा रहा है, ऐसे में दशम गुरु जी के क्रांतिकारी उपदेश हमारी मानसिकता को बदलने में पूर्णत: सक्षम हैं।

समारोह में मंच संचालन स. चमकौर सिंघ रीसर्च स्कालर द्वारा किया गया। स. सुखमिंदर सिंघ रीसर्च स्कालर ने पहुंचे सभी वक्ताओं-श्रोताओं का धन्यवाद किया। समारोह में भारी संख्या में विद्वान सज्जनों एवं छात्र-छात्राओं ने भाग लिया।



प्रिंटर व पब्लिशर स. दलमेघ सिंघ ने गोल्डन आफसेट प्रेस, गुरुद्वारा रामसर साहिब, श्री अमृतसर से छपवा कर मालिक शिरोमणि गुरुद्वारा प्रबंधक कमेटी के लिए कार्यालय, शिरोमणि गुरुद्वारा प्रबंधक कमेटी, श्री अमृतसर से प्रकाशित किया। प्रकाशित करने की तिथि : ०१-०३-२०१३